यू० सोत्निक

तूफ़ानी टोली

यू॰ सोत्निक

तूफ़ानी टोली

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह
मास्को

अनुवादक – [illegible]
[illegible] – [illegible]
चित्रकार – [illegible]

[illegible]
[illegible]

विषय-सूची

	पृष्ठ
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

उस्ताद

दरवाज़े की घंटी घनघना उठी। दादी ने रसोईघर से निकलकर दरवाज़ा खोला। सामने ड्योढ़ी पर एक अजनबी लड़का खड़ा था। उसने अदब से झुककर पूछा—

"माफ़ कीजियेगा, क्या ग्रीशा ऊलोचकिन यहीं रहता है?"

"हां, यहीं रहता है।" दादी ने संदेह से उसे देखते हुए कहा।

लोहा किये हुए नीले पैंट, आधी बांह की पीली स्पोर्ट-शर्ट, गले पर बंधी रेशमी लाल पायोनियर-टाई तथा करीने से एक ओर संवारे हुए सुनहरे बालों वाला वह बालक कुल मिलाकर दादी को बुरा न लगा बल्कि उसने उनपर अच्छा ही प्रभाव डाला। इतना होते हुए भी वह एक हाथ में मैला-कुचैला और फटा रूईदार कोट दबाये था जिसकी सुजनी उधड़ चुकी थी। उसके दूसरे हाथ में लम्बी रस्सी थी। रस्सी का एक सिरा कुतिया के गले में पड़े पट्टे से बंधा था। यह झबरीले और मोटे बालों वाली कुतिया

अनजान नस्ल की मालूम पड़ रही थी। दादी के मन में इस फटे कोट और कुतिया ने संदेह पैदा कर दिया।

"क्या मैं ग्रीशा से मिल सकता हूं?" बालक ने पूछा।

"मेरे ख्याल से मिल तो सकते हो।" क्षण भर को आगा-पीछा सोचने के बाद दादी ने उत्तर दिया। वह कहने जा रही थीं कि कुत्तों को कमरे में ले जाना मना है क्योंकि वे गंदे होते हैं पर कुछ सोचकर उन्होंने केवल इतना ही कहना उचित समझा, "देखो, वह रहा उसका कमरा।"

बालक कुतिया को अंदर न ले गया, ज़रा कड़े रुख से हिदायत देते हुए उससे बोला –

"सुनो, पाल्मा! बस तुम यहीं ठहरो, समझ गयीं न?"

पाल्मा जम्भाई लेकर बैठ गयी, उसके रंग-ढंग से ऊब और उकताहट का भाव झलकने लगा। बालक ने रस्सी का एक सिरा सीढ़ी की रेलिंग से बांध दिया और दादी के बताये दरवाज़े पर दस्तक दी।

नाटे कद के बालक ग्रीशा के बिखरे हुए घने बाल गुच्छों के रूप में इधर-उधर छिटके थे। स्थिर भाव से वह लकड़ी के एक टुकड़े पर आरी चलाने में व्यस्त था। उसने वह टुकड़ा अपनी कुर्सी पर घुटने से दबा रखा था। वह ओलेग बोलोशिन को देखकर हैरत में पड़ गया। बोलोशिन एक ही दर्जे में होते हुए दूसरे ग्रुप में पढ़ता था, इसलिए उससे कभी दुआ-सलामी न हुई थी। ग्रीशा तनकर खड़ा हो गया और अपनी कमीज़ पैंट के अंदर डालते हुए आगन्तुक की ओर घूरने लगा।

"हलो, ऊतोचकिन," ओलेग ने दरवाज़ा बंद करते हुए उसे सम्बोधित किया, "मैं तुमसे कुछ पूछने चला आया था।"

"कहो न, क्या कहना चाहते हो?" बड़ी रुखाई से ग्रीशा ने पूछा।

"क्या तुम एक कुतिया को करतब सिखाने में मेरी मदद करोगे?"

"कर तो सकता हूं, पर कैसे?" ग्रीशा कम बोलने का आदी था पर ऐसा नहीं था कि कोई अवसर हाथ से जाने दे।

"देखो, बात यूं है कि मैं अपनी कुतिया को रखवाली की तालीम दे रहा हूं। मैंने उसे यहां तक तो सिखा लिया है कि वह हुक्म पाते ही मेरे साथ साथ चले, इशारा

पाते ही बैठ और लेट जाय। इस समय हमें उसे झपटने का अभ्यास कराना है जिसमें वह मेरा इशारा पाते ही जिसपर चाहूं, झपट पड़े। मुझे एक ऐसे सहायक की जरूरत है जो कुतिया के लिए बिल्कुल अजनबी हो।"

"अच्छा तो तुम ऐसे साथी की तलाश में निकले हो, जिसपर वह झपटे, क्यों है न ऐसी ही बात?"

"हां, ठीक है, तुम मेरा मतलब समझ गये। अपने ग्रुप के लड़कों के साथ मैं अभी तक उसे अभ्यास कराता रहा हूं और वह उनपर अच्छी तरह झपट पड़ती थी। पर अब वह उनसे इतनी हिल गयी है कि उनपर हमला ही नहीं करती। इसी लिए मैं तुमसे कहने आया हूं..."

ग्रीशा ने अपनी फैली नाक रगड़कर कुछ सोचते हुए कहा—

"और मुझे काट खायेगी तब क्या होगा?"

"ऐसा हो ही कैसे सकता है जब मैं उसे रस्सी से बांध रखूंगा? और फिर तुम तो एक खास किस्म की उस्तादों वाली लिबास पहने रहोगे।" ओलेग ने रूईदार कोट की तह खोल डाली और उसे रूई भरा पैजामा भी दिखाने लगा जो जगह-ब-जगह फट चला था। "हमारे सब साथी इस कुतिया को अभ्यास कराने में मुझे मदद करते रहे हैं, केवल सेर्योजा लाप्तेव ही ऐसा था जिसको उसने बड़ा हल्का दांत लगा दिया था। तो क्या तुम सहमत हो?"

"अच्छा, मैं सहमत हूं। लेकिन तुम्हारी कुतिया है कहां?"

"मैं उसे ड्योढ़ी पर छोड़ आया हूं ताकि वह न जान सके कि हम दोनों परिचित हैं। अच्छा अब मैं चलकर तीखाया स्ट्रीट पर तुम्हारा इन्तज़ार करूंगा। बस तुम यह लिबास पहनकर वहीं आ जाना। तुम्हें उठाईगीरे का सा अभिनय करना होगा, चुपके से दबे पांव उसकी ओर झपटना, समझ गये न?"

"ठीक है, तुम चलो, मैं आता हूं।"

ओलेग जा चुका था। ग्रीशा ने टोपी लगा ली और लिबास पहनने लगा। उस ढीले-ढाले पैजामे पर वह खीझ उठा, वह पैजामा था कि शैतान का चोगा। खैर, ग्रीशा ने जैसे-तैसे उसे कमरबंद से कस लिया और पैजामे की मोहरियों को टखने तक मोड़ माड़कर सुतली से बांध दिया। ग्रीशा उस समय विचित्र ढंग का अकार्डियन सा

लग रहा था। गनीमत थी कि उस रूईदार कोट ने उसकी लाज रख ली, जिसे पहनकर कम से कम वह आदमी तो लगने लगा। कोट पैजामे के फूहड़पन को ढंके हुए था। ग्रीशा ने बांहें समेटने की फ़िक्र न की, उन्हें हाथों के नीचे तक लटका रहने दिया।

ज़ाहिर था कि वह इस विचित्र वेश में दादी के सामने निकलने की हिम्मत न कर सका। वह दादी की आंख बचाकर निकलने की तजवीज़ करने लगा। दरवाज़ा खोलते ही चरमराहट हुई, वह कुछ देर ठिठका, फिर एकदम कमरे से रफ़ूचक्कर हो गया।

तीखाया स्ट्रीट* जैसा इस सड़क का नाम था, दरअसल वैसी ही सुनसान भी थी। दोनों ओर लैम के पेड़ों की कतारों के पीछे छोटे छोटे एकमंज़िले और दोमंज़िले मकान लुके हुए थे। उस सड़क पर आमद-रफ़्त इतनी कम थी कि पत्थरों के बीच घास के कोमल डंठल जहां-तहां उग आये थे।

ग्रीशा ने देखा कि ओलेग पत्थर के फ़र्श पर टहल रहा है और बार-बार चिल्लाकर कुतिया को हिदायत करता जा रहा है–

"पाल्मा, बस बगल में ही, मेरे पास रहो!"

"अरे!" 'सहायक' चिल्ला उठा।

कुतिया का उस्ताद वहीं रुक गया और उसने पाल्मा को बैठने का हुक्म दिया। इसके बाद ग्रीशा की ओर इशारा करते हुए कहा, "अच्छा अब चालू हो जाओ।" सहायक ने अपनी टोपी आंखों तक खींच ली और निचला जबड़ा फैलाकर कुतिया को धमकाने लगा। ग्रीशा झुककर टेढ़ी-मेढ़ी चाल से कुतिया की ओर सरकता जा रहा था। ऐसा करते समय वह कोट की ढीली-ढाली बांहें हिलाता झुलाता।

पाल्मा सहायक के बारे में बेखबर न थी। वह हैरत से उसकी ओर देखती और अपना खुरखुरा सर दायें-बायें झुका लेती। ग्रीशा अभी उससे दस कदम दूर ही था, कि वह खड़ी हुई और धीरे से गुर्रा उठी।

"छिः पाल्मा, बैठ जाओ!" ओलेग ने उससे कहा।

पाल्मा ने गुमसुम बैठकर मुंह बाना शुरू कर दिया।

---

* तीखाया – शान्त। – अनु०

ग्रीशा ने भी हाथ ज़मीन पर टिका दिये और जानवरों की भांति खड़ा होकर गुर्राने लगा।

"पाल्मा, झपटना तो इसपर!" ग्रोलिंग चिल्लाया।

बस फिर क्या था, पाल्मा गुर्राकर ग्रीशा पर इतनी तेज़ी से झपटी कि उस्ताद ग्रोलिंग को रस्सी खींचने में अपना पूरा ज़ोर लगाना पड़ा।

ग्रीशा झटककर एक ओर हो गया तभी अपने को बचा सका।

"देखा तुमने इसका करतब?" ग्रोलिंग धीरे से बोला।

"हां," उसी लहजे में ग्रीशा ने जवाब दिया। "पर बिना तुम्हारी शह के ही वह मुझपर झपटे, क्योंकि मैंने इसे काफ़ी चिढ़ा दिया था।"

"अच्छा दुबारा नहीं, पर इस बार तुम इसे चिढ़ाना मत। तुम उस कोने के आस-पास कहीं छिप रहो और फिर बिना इस ओर देखे चुपचाप हमारी तरफ़ बढ़ो। समझ गये न?"

"हां, बस ठीक है।"

ग्रीशा मोड़ तक गया और उस कोने की आड़ में न जाने कहां गायब हो गया। पर कुछ ही देर बाद सड़क के उस पार से सध सधकर ग्रोलिंग की ओर आने लगा। वह ग्रोलिंग के बिल्कुल सामने आ गया और फिर उसके पास से गुज़रा।

"पाल्मा, लेना!" ग्रोलिंग ने ललकारा।

"ग्र-र-र!"

ग्रीशा ने पीछे मुड़कर देखा कि पाल्मा रस्सी को झटकते हुए उसपर टूट पड़ने की कोशिश कर रही है।

"बहुत खूब! क्यों भाई ठीक रहा न?" ग्रोलिंग सड़क के दूसरे छोर से चिल्लाया। "बहुत बहुत शुक्रिया, इतना काफ़ी है। अब तुम ट्रेनिंग की लिबास उतारकर यहीं आ जाओ।"

ग्रीशा ने वह रुईदार कोट उतार डाला और माथे का पसीना पोंछकर बड़ी सावधानी से कुतिया की ओर बढ़ा। पाल्मा ने चाहा कि उसकी टांग काट खाये पर ग्रोलिंग ने उसे डांट-डपटकर बैठने को कहा। उस्ताद ग्रोलिंग मुस्करा रहा था, उसकी आंखें चमक रही थीं और चेहरे पर लाली दौड़ गयी थी।

"देखा तुमने? बस इसका नाम है ट्रेनिंग! तुमने उसकी ओर आंख तक न उठायी थी पर वह तुम्हारी ओर इस प्रकार लपकी जैसे कि काट ही खायेगी।"

ग्रीशा, पाल्मा की पहुंच से दूर सुरक्षित स्थान पर खड़ा नाक खुजला रहा था।

"इतना करके उसने कौन सा किला जीत लिया? उसे याद था कि पहले मैंने उसे तंग किया था इसी लिए तो वह मुझपर झपटने को आमादा थी। हूबहू ऐसी लिबास वाले किसी भी आदमी पर वह झपट सकती है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वह उस औरत पर कभी न झपटेगी।" सड़क के उस पार हाथ में झोला लिये मटककर चलती महिला की ओर इशारा करते हुए ग्रीशा ने कहा।

उस्ताद ओलेग के चेहरे का रंग बदला, मुस्कान गायब हो गयी और वह भी सड़क के उस पार देखने लगा। जब वह महिला उन दोनों के पास से निकल गयी तब ओलेग भूमि से सटकर पाल्मा की बगल में बैठ गया, महिला की ओर इशारा करते हुए उसने धीमे स्वर में पाल्मा को ललकारा—

"लेना तो बढ़कर!"

पाल्मा जोर से भौंक उठी और ओलेग के हाथों की रस्सी झटककर बढ़ने की कोशिश करने लगी।

"शाबाश पाल्मा!" ओलेग इतना कहकर बड़े शान से ग्रीशा की ओर मुखातिब हुआ, "कहो, कैसा रहा इसका करतब? अब तो मेरी उस्तादी का लोहा मानोगे?"

अब ग्रीशा को ट्रेनिंग के बारे में यकीन हो गया था कि अभ्यास कराने से कुत्ता इशारे पर काम कर सकता है। वह फटी-पुरानी वर्दी बगल में दबाकर पाल्मा के सामने उकड़ूं बैठ गया। वह कुतिया को बड़े गौर से देखकर परख रहा था।

"किस नस्ल की है? क्या यह दोगली है?"

"हां, यही तो इसकी विशेषता है कि यह दोगली नस्ल की है।"

"यदि यह पुलिस की कुतिया होती तो और भी अच्छी तरह झपटती।" ग्रीशा ने अपनी राय जाहिर करते हुए कहा।

"अरे भाई तुम समझते क्या हो, मैं इसे किस प्रयोजन से सिखा-पढ़ा रहा हूं? इसमें कुछ हुनर आ भर जाय कि मैं इसे पुलिस ट्रेनिंग स्कूल ले जाऊं। मैं उन्हें भी

दिखाऊंगा कि मैंने इसे क्या क्या कमाल सिखाये हैं। मुझे यकीन है कि वे मुझे कोई अच्छा पिल्ला जरूर देंगे जिसे मैं हुनर सिखा सकूं।"

ग्रीशा की निगाहें अभी तक पाल्मा पर गड़ी थीं।

"तुम्हें यकीन है कि वे देंगे?" उसने पूछा।

"खैर विश्वास के साथ तो नहीं कह सकता, पर मुझे उम्मीद है कि वे मुझे देंगे।"

"क्या हमारे यहां ऐसे स्कूल हैं?.. इस नगर में ऐसी कौन सी संस्थाएं हैं जहां ऐसे पशुओं की परवरिश होती है? क्या तुम्हारे पास उनका पता है?"

"कुत्तों के ट्रेनिंग स्कूल? बेशक हैं, क्यों नहीं। नगर में एक तो द०ओ०स०अ०अ०फ़०* नाम की ही संस्था का स्कूल है। मिलीशिया विभाग का भी एक अलग स्कूल है। जब यह सीढ़ी पर चढ़ने, आड़ फांदने तथा हुक्म पर बैठने आदि का अभ्यास कर लेगी तब मैं इसे द०ओ०स०अ०अ०फ़० के स्कूल ले जाऊंगा।"

"मैं नहीं समझा कि सीढ़ी पर चढ़ने, आड़ फांदने तथा हुक्म पर बैठने से तुम्हारा क्या मतलब है?"

"पाल्मा को सीढ़ी पर चढ़ना और उतरना तथा चहारदीवारी पर से कूदना सिखाना है। मैं चाहता हूं कि जब कभी मैं किसी स्थान पर बैठने का हुक्म दूं वह बैठी रहे, आधा घंटा क्या, यदि मैं एक घंटा भी लौटकर न आऊं फिर भी वह बिना हिले-डुले वहीं बैठी रहे।"

अभी तक पुलिस के कुत्तों के बारे में ग्रीशा को बहुत कम जानकारी थी। उसने खोजी कुत्तों के किस्से सुन रखे थे और सीमान्त-पहरेदारों के जासूसी कुत्तों की चतुराई और आश्चर्यजनक साहसिक करतबों के बारे में उसने दो-एक फ़िल्म भी देखे थे। लेकिन उसकी धारणा थी कि केवल विशेषज्ञ ही ऐसे कुत्तों को हुनर सिखा सकते हैं। इस मामूली दोगली कुतिया का पुलिस के कुत्तों से भला क्या मुकाबिला? फिर भी इस समय उसके सामने एक साधारण स्कूली बच्चा कुतिया को अपने इशारों पर नचा रहा था, जब चाहता उसे बैठा देता, अपनी बगल में चलाता तथा लोगों पर झपटने का हुक्म देता। यद्यपि ग्रीशा ढीला-ढाला तथा उदास दिखाई देता था फिर भी वह एक उत्साही

---

*पैदल, हवाई और नौसेना की सहायता के लिए अखिल संघीय स्वयंसेवक संस्था।—सं०

बालक था। उसके मन में कुत्ते के प्रति तीव्र राग जगा ग्रौर वह स्वप्नलोक में खो सा गया। कल्पना के उभरते चित्रों में उसने देखा कि वह सड़क पर जा रहा है ग्रौर उसके साथ ऊंचा-पूरा पुलिस का चतुर कुत्ता है। कुत्ता बड़ी शान से उसकी बगल में चलता, जिससे ग्रातंकित लोग स्वयं रास्ता छोड़कर एक बगल हो जाते। सोच रहा था कि वह कुत्ते को स्कूल ले जायेगा ग्रौर ग्रपने साथियों पर रोब गांठेगा। इस मुंह बाये ख़ौफ़नाक कुत्ते को देखकर साथी दंग रह जायेंगे। कुत्ता उसके इशारे पर बाड़ फांदेगा, बरसाती से लगी सीढ़ियों पर चढ़ेगा ग्रौर जब तक ग्रीशा ख़ुद कक्षा में पढ़ेगा तब तक वह ग्रहाते में बैठा उसका इन्तज़ार करेगा। उसका स्वप्न टूटा ग्रौर वह ग्रोलेग से पूछ बैठा –

"भाई ग्रोलेग, तुमने यह सब हुनर सीखा कहां से?"

"ग्ररे यह सब बहुत ग्रासान है। मैंने 'पुलिस के कुत्तों का पालन' नामक एक पुस्तक ख़रीदी थी। उसमें सब कुछ साफ़ साफ़ सरल भाषा में लिखा है।"

"मैं भी ग्रपने लिए ख़रीदूंगा। पर ग्रच्छा कुत्ता मिलना भी तो बहुत कठिन है। मान लो मैं किसी कदर कुत्ता ले भी ग्राऊं तो दादी के कारण एक पल भी न रहने पायेगा, वह उसे बाहर ढकेलकर ही चैन लेंगी।"

दोनों बालक पटरी के किनारे खड़े बड़ी देर तक बातें करते रहे। हुक्म पाते ही पाल्मा ने ग्रोलेग के सिखाये बाकी सभी करतब दिखा डाले। ग्रीशा मुग्ध होकर देखता रहा, उसने दृष्टि तभी उठायी जब उसे कुछ दूर से ग्राती सधे हुए कदमों की ग्राहट सुनाई दी। चुस्त वर्दी में, कंधों पर लेफ़्टीनेंट के फ़ीते लगाये एक लम्बा-तगड़ा मिलीशिया-मैन सड़क के उस पार चल रहा था। उसने ग्रपने ग्रंगूठों को पेटी में खोंस लिया था। ज्यों ही उसकी दृष्टि कुतिया के निकट बातें करते हुए इन बालकों पर पड़ी वह मुस्करा उठा। ग्रोलेग ने भी उस मिलीशिया-मैन को देख लिया था।

"देखो, वह इसी ग्रोर देख रहा है।" वह ग्रीशा से फुसफुसाकर कहने लगा।

लेफ़्टीनेंट की प्रशंसापूर्ण मुस्कान ने उन्हें बढ़ावा दिया, वे भी उसकी ग्रोर देखकर मुस्कराने लगे। दोस्ताना ग्रंदाज़ में इशारा करके उसने भी उनकी मुस्कान का उत्तर दिया। ग्रचानक ग्रीशा को याद ग्रा गया कि ग्रभी ग्रोलेग ने कहा था कि मिलीशिया-स्टेशन में भी कुत्तों का ट्रेनिंग स्कूल होता है। उसने ग्रोलेग की बगल में कोहनी मारकर धीरे से कहा –

"बस यही मौका है, इसे भी दिखा दो अपनी कुतिया के हुनर, यह भी तो जाने कि तुम्हारी कुतिया लोगों पर कैसे झपटती है।"

"अरे, यह ठीक न होगा।"

"पर इसमें बुराई ही क्या है? एक अच्छी-खासी दिल्लगी रहेगी, हां हां, दिखाओ न कमाल।"

पहले तो ओलेग कुछ झिझका, पर आगे बढ़कर उसने लेफ़्टीनेंट की ओर इशारा किया और जोर से ललकारकर कह उठा ताकि मिलीशिया-मैन भी सुन ले –

"पाल्मा! लेना उसे!"

पाल्मा आगे बढ़कर उछल-कूद करने लगी, ओलेग के हाथों मे रस्सी छुड़ाती हुई भौंककर लेफ़्टीनेंट पर झपट पड़ी।

"भागो बेटा, अब खैर नहीं है!" उसी क्षण ग्रीशा ने चिल्लाकर ओलेग से कहा।

इसके बाद पाल्मा का क्या हुआ उन्होंने नहीं देखा। झटपट रूईदार कोट वहीं पटरी पर पटककर ग्रीशा और ओलेग पास ही के फाटक में घुसकर गायब हो गये। उनको इतनी फ़ुर्सत कहां थी कि अहाते के इर्द-गिर्द कुछ देखने-सुनने। बस फाटक के दाहिनी ओर उन्हें ईंधन के ढेर और चहारदीवारी के बीच एक दरार दिखाई दे गयी। वे उसी दरार में घुस गये और दम साधकर वहीं दुबके बैठे रहे। कुछ क्षण तो सन्नाटा रहा, पर कुछ देर बाद उन्हें किसी के आने की आहट मिली। किसी ने लकड़ी के ढेर की बगल की खिड़की खटकायी। कुछ देर तक सन्नाटा रहा, फिर सिटकिनी खटकी और चरमराहट के शब्द के साथ दरवाज़ा खुल गया। किसी स्त्री ने कौतूहल भरे शब्दों में पूछा –

"मामला क्या है?"

"वे तुम्हारे ही छोकरे थे न जो सब को तंग करते फिर रहे हैं? जिसपर जी चाहा कुत्ते झपटा दिये।"

"क्या बात करते हो, छोकरे और मेरे?" स्त्री हैरत भरे अंदाज़ में बोली। "अरे इस मकान में तो नाम को भी किसी के लड़का-वड़का नहीं है।"

"तुम कहती हो यहां कोई लड़का नहीं है, लेकिन मैंने अभी दो लड़के इस अहाते की ओर भागते देखे हैं। ज़रा देखो तो, कुत्ते ने मेरी कैसी दुर्गति की है। देख रही हो न तुम?"

"तुम्हें तो मुझपर विश्वास ही नहीं होता, जैसे मैं झूठ बोल रही हूं। भाई, तुम्हें यकीन न हो तो भीतर आकर खाना-तलाशी ले लो, तुम्हारा शक मिट जायेगा। यहां तो आम रास्ता है और उस तरफ़ दूसरा फाटक भी है। मुमकिन है वे उसी ओर भागे हों।"

थोड़ी देर दोनों चुप रहे।

"अच्छा! तो मुझे अफ़सोस है कि मैंने तुम्हें नाहक परेशान किया।" लेफ़्टीनेंट बड़बड़ाया।

"ख़ैर, कोई बात नहीं।" औरत ने रुखाई से उत्तर दिया।

झटके के साथ दरवाज़ा बंद हुआ, लौटते हुए लेफ़्टीनेंट की पगध्वनि बिल्कुल दब गयी। मिलीशिया-मैन अब दूर जा चुका था।

लड़के बिना हिले-डुले मांस रोके बाड़े और ईंधन के ढेर के बीच बराबर पिसे जा रहे थे।

"आओ अब बाहर निकल चलें।" ग्रीशा फुसफुसाया।

"चुप भी रहेगा, बेवकूफ़!" ओलेग ने धीरे से कहकर ग्रीशा की बांह पकड़ ली। वह सर से पैर तक थरथरा रहा था।

"हम लोग निकल चलें नहीं तो वह फिर पलट पड़ेगा और आस-पास ताकता-झांकता यहां आ धमकेगा।" ग्रीशा ने कहा और उसने ईंधन के ढेर के पीछे से ओलेग को ढकेलकर बाहर कर दिया।

बिना इधर-उधर देखे लड़के फाटक की ओर भागे और तेज़ी से सड़क पर मुड़ गये। उन्होंने ग्रीशा के घर पर आकर दम लिया। ग्रीशा की नाक और गाल लकड़ियों के ढेर से रगड़कर छिल गये थे और उनमें ख़ून छलछला आया था। उस्ताद ओलेग का नया नीले रंग का पैंट राल से सन गया था और जगह जगह चीड़ की छाल के टुकड़े चिपक गये थे।

"देखो न, कैसी मुसीबत में फंस गये थे हम लोग," जब होश ठिकाने हुए तब ओलेग ने धीरे से कहा, "तुम्हारी बात मानकर मैंने बेवकूफ़ी की।"

"दरअसल, हिमाकत तो तुम्हारे हाथ से रस्सी छूट जाने से हुई है।" ग्रीशा बड़बड़ाया। अपनी ठोढ़ी हथेलियों के सहारे टिकाकर वह क्रोध में भौंहें चढ़ाये मुंह लटकाकर सीढ़ियों पर बैठ गया।

ग्रोलेग ग्रीशा के पास ग्राया ग्रौर उसकी ग्रोर झुककर कहने लगा –

"जानते हो ग्रब इसका परिणाम; क्या होगा? ग्रधिकारी पर कुत्ता झपटाने की शरारत पर वे हमें यों ही न छोड़ देंगे।"

"बको मत, कुछ भी होने जाने का नहीं। हम साफ़ कह देंगे कि हमारा मतलब यह न था कि हम किसी को हानि पहुंचायें। हम केवल कुतिया के करतव दिखाना चाहते थे।" ग्रीशा बड़बड़ाया।

"ग्रच्छा, करतब दिखाना चाहते थे?" ग्रोलेग ने मुंह बनाते हुए कहा, "कौन मानेगा तुम्हारी बात ग्रौर तुम इसे कैसे साबित कर पाग्रोगे?"

ग्रीशा कुछ न बोला, वह उदास लग रहा था। सारी स्थिति से वह परेशान हो उठा था।

"ग्रौर तुमने वह वर्दी भी खो दी," ग्रोलेग ने उसे झिड़कते हुए कहा, "यह बात नहीं है कि वह मेरे काम की चीज़ थी इसलिए उसके खोने का ग्रफ़सोस है, पर जानते हो ग्रब क्या होने को है? वे हमारा पता उसी कोट के ज़रिये लगा लेंगे।"

"एसा कैसे हो सकता है?" निराश होते हुए ग्रीशा ने कहा।

"इसकी तो बड़ी ग्रासान तरकीब है। वे खोजी कुत्ता ले ग्रायेंगे ग्रौर फिर उसे वह कोट सुंघा देंगे। हम दोनों ने ही उस कोट को पहिना था। सूंघकर वह कुत्ता हम दोनों का पता लगा लेगा।"

ग्रीशा का चेहरा बिल्कुल उतर गया, ऐसा बुझा ग्रौर निराश तो वह कभी न दिखाई दिया था। वह उठा ग्रौर हाथ पीछे बांधे चबूतरे पर टहलने लगा। कुछ देर बाद वह ग्रोलेग के सामने रुका ग्रौर कहने लगा –

"सुनो ग्रोलेग। ग्रब हमें ऐसा करना चाहिये कि यदि तुम पकड़े जाग्रो तो मेरा पता-निशान न बताना। कह देना कि मुझे कुछ नहीं मालूम, ग्रौर यदि वे मुझे पकड़ पाये तो मैं भी तुम्हारे बारे में ऐसा ही कह दूंगा। क्यों ठीक है न?"

"हां," कुछ रुककर लम्बी सांस लेते हुए ग्रोलेग न कहा, "ग्रच्छा मैं चलता हूं, मुझे ग्रपना सबक तैयार करना है।"

वह दरवाज़े से बाहर झांककर दायें-बायें देखने लगा। फिर मुड़ मुड़कर पीछे देखता हुग्रा सड़क की ग्रोर लपका। ग्रीशा थका ग्रौर उदास धीरे-धीरे सीढ़ियां पार करके ग्रपने कमरे की ग्रोर जाने लगा।

दादी ने दरवाज़ा खोलते समय ही उसके चेहरे पर खरोंचें देख ली थीं।

"अरे, यह क्या हुआ? कैसे लगीं इतनी खरोंचें?" बुढ़िया बड़बड़ायी।

"ओह! कुछ नहीं!" बालक इतना कहकर झट कमरे में घुस गया।

शाम तक वह कमरों के इर्द-गिर्द चक्कर काटता रहा। कभी कभी दरवाज़े के निकट खड़ा होकर किसी की उत्सुकता से आहट लिया करता। वह सोचता कि मिलीशिया-मैन कभी भी कुत्ते के साथ यहां आ सकता है।

सारा मज़ा किरकिरा हो गया था और ऐसे में मौसम की सुहावनी बहार और भी अखर रही थी। नीचे मैदान में ग्रीशा के घर और पड़ोस की टीमों में फ़ुटबाल मैच हो रहा था। ग्रीशा सदैव टीम में गोल-कीपर बनता था।

"अरे ग्रीशा! घर में क्या कर रहे हो? आओ न मैदान में? तुम्हारे बिना तो सारा खेल ही चौपट हो रहा है और अब हारने की नौबत है!" जब जब ग्रीशा खिड़की से नीचे झांकता, उसकी टीम के लड़के पुकारते।

"खेलने को जी नहीं होता।" ग्रीशा ने अनमने ढंग से उत्तर दिया और फिर कमरे में जा घुसा।

शाम हुई। उसके पापा और मामा काम से वापस आये, सारा परिवार रात के भोजन के लिए साथ ही बैठ गया। ग्रीशा बड़े धीरे और बेमन कटलेट खा रहा था। लड़के को सुस्त देखकर मां का माथा ठनका। वह चिंता के स्वर में बोल उठी—

"प्यारे ग्रीशा, मुर्झाये मुर्झाये से क्यों हो?"

"कुछ नहीं..."

मां झुकी और ग्रीशा का माथा देखने-भालने लगी।

"देखो तो बच्चे की अच्छी-खासी खुराक थी, पर आज इसने नाम को भी खाना नहीं छुआ।"

"मुझे तो लगता है कि किसी से लड़-भिड़कर आया है, देखती हो न इसकी सारी नाक पर की खरोंचें।" पापा ने कहा। "क्यों ग्रीशा मैं ठीक कह रहा हूं न?"

ग्रीशा ने कुछ उत्तर न दिया। जब तक भोजन चलता रहा उसने ज़बान तक न हिलायी, पर भोजन समाप्त होने पर वह पापा से पूछने लगा—

"पापा, एक लड़के ने अपना कुत्ता मिलीशिया-मैन पर झपटा दिया और उस

कुत्ते ने उसे काट भी खाया है। बताइये अगर मिलीशिया के लोग उस लड़के को पकड़ पायेंगे तो उसपर क्या बीतेगी?"

"उसके साथ कैसा व्यवहार होगा? मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा। स्पष्ट है कि वे इस प्रकार की गुस्ताखी माफ़ न करेंगे और उसके पिता पर जुर्माना ठोंक देंगे तथा बालक की इस शरारत की सूचना स्कूल के अधिकारियों को भेज देंगे।"

"अच्छा, तो यह शरारत मेरी समझ में उसी लड़के की होगी जो आज आया था।" दादी बीच में बोल उठीं।

"कौन सा लड़का?" पापा ने मामले की छान-बीन करते हुए उनकी ओर देखा।

"आज एक लड़का ग्रीशा से मिलने आया था। साफ़-सुथरे ढंग के कपड़ों में वह बुरा न लगता था, लेकिन उसके साथ एक कुत्ता था। कुत्ता इतना बदशक्ल कि देखने से ही घृणा लगने लगे।"

* * *

दूसरे दिन इतवार को ग्रीशा की चाची का जन्म-दिन था। सभी लोग वर्षगांठ की दावत में शरीक होने जा रहे थे। ग्रीशा चाहता था कि तबीयत ठीक न होने का बहाना बताकर घर ही पर रह जाय, लेकिन यह सोचकर कि उसे घर पर अकेले रहना पड़ेगा और वहां दावत में बढ़िया माल खाने को मिलेंगे, तरह तरह के ग्रामोफ़ोन-रिकार्ड सुनने को मिलेंगे तथा वह दावत के दिलचस्प वातावरण का आनंद ले सकेगा, इसलिए उसने अपना इरादा बदल दिया और जाने को तैयार हो गया।

लेकिन पापा, मामा और दादी ने न जाने किस वैर का बदला चुकाया कि सबने बस पर न चलकर पैदल चलने की ठानी। ग्रीशा को हर मिलीशिया-मैन में लेफ़्टीनेंट का भूत नज़र आता। उसका तो चलना मुश्किल होता, कदम कदम पर उसे बचकर चलना पड़ता। ज्योंही उसे कोई व्यक्ति मिलीशिया-मैन की वर्दी में दिखाई देता वह झट अपने पापा की आड़ में हो जाता, और जब कोई उसी वर्दी में पीछे आता दिखाई पड़ता तो भागकर आगे आ जाता। वह उनसे इतना सटकर चलता कि उन्हें कदम बढ़ाना मुश्किल था।

"सुनते हो ग्रीशा! तुम सब की भांति सावधानी से क्यों नहीं चलते, व्यर्थ में इर्द-गिर्द फुदकते क्यों फिरते हो?"

उसी समय एक लम्बा-तगड़ा मिलीशिया-मैन दूकान से निकला और ठीक उनकी ओर ही पंद्रह कदम के फ़ासले पर आ पहुंचा। ग्रीशा के होश गुम हो गये। उसने ठीक से न तो उसका चेहरा देखा और न कंधे के फ़ीते ही। वह भागकर पास के दरवाज़े में जा घुसा और सीढ़ियों पर चढ़कर पहली मंज़िल के बरामदे में ही दम लिया। करीब दो मिनट तक ऊतोचकिन परिवार दरवाज़े के सामने खड़ा बुलाता रहा पर नतीजा कुछ न निकला। उन्होंने कहा –

"ग्रीशा! बंद तो करो यह सब खिलवाड़! तुम्हारी उम्र के लड़कों को यह नासमझी शोभा नहीं देती।"

"सुन रहे हो ग्रीशा! बहुत हो चुका, यदि तुम्हें यही खिलवाड़ करना है तो घर लौट जाओ!"

दूसरे दिन स्कूल जाते समय ग्रीशा ने रास्ते में कम सतर्कता से काम न लिया। ओलेग से स्कूल के फाटक पर ही भेंट हो गयी। आज ओलेग नीले पैंट की जगह भूरे रंग का पैंट पहने था और पीली स्पोर्ट-कमीज़ के स्थान पर सफ़ेद कमीज़ उसने पहन रखी थी। उसने सर पर चौड़े किनारों वाला स्ट्रॉ हैट लगा रखा था। इस वेश में वह बिल्कुल कुकुरमुत्ता सा लगता।

"क्या हाल है, कोई नयी घटना तो नहीं हुई?" ग्रीशा ने ओलेग से पूछा।

"अभी तक तो सब ठीक चल रहा है। कोई भांप न ले इसलिए मैंने अपना चोला ही बदल दिया है। देखते नहीं हर चीज़ उस दिन से बिल्कुल निराली है।"

"और पाल्मा सही सलामत लौट आयी कि नहीं?"

"हां, वह कल लौटी है। तुम बताओ, तुम्हारे क्या हाल हैं?"

"अभी तक तो सब ठीक-ठाक है।"

तीन दिन बीत गये और उनका बाल भी बांका न हुआ। धीरे धीरे ग्रीशा का हौसला बढ़ने लगा। वह फिर से अपने साथियों के साथ फ़ुटबाल खेलने लगा, अब वह मिलीशिया के लोगों को देखते ही कतराने की कोशिश न करता और न भागकर दरवाज़ों में लुकने-छिपने की ही कोशिश करता। ओलेग भी उसी की भांति निडर हो गया था। ग्रीशा फिर पुलिस के कुत्तों सा होशियार कुत्ता पालने के सपने देखने लगा। एक दिन दोपहर की छुट्टी के समय ओलेग से पूछने लगा –

"क्या अब भी तुम पाल्मा को हुनर सिखा-पढ़ा रहे हो ?"

"नहीं, पाल्मा आजकल बीमार है।"

"अरे, उसे हो क्या गया ?"

"मैं नहीं जानता उसे क्या बीमारी हो गयी है, पर न तो वह कुछ खाती-पीती है और न उठती ही है।"

"अच्छा जब तुम उसे सिखाना आरंभ करना तो मुझे भी साथ ले लेना, मुझे इस काम से दिलचस्पी है और मैं भी इसे सीखना चाहता हूं।"

ओलेग ने वायदा किया कि उसे ज़रूर साथ ले लेगा, लेकिन दूसरे इतवार को जो कुछ घटना हुई वह इस प्रकार है।

पापा, मामा और ग्रीशा खाने की मेज़ पर बैठे थे। दादी रसोई तक गयी थीं कि इतने ही में अचानक दरवाजे की घंटी घनघना उठी। दादी ने दरवाज़ा खोला ही था कि ओलेग झपटकर भीतर आ धमका। वह बुरी तरह हांफ रहा था, उसके माथे और नाक पर पसीने की बूंदें झलक आयी थीं।

"नमस्ते," आते ही उसने कहा, फिर थोड़ी देर रुककर बोला, "कहो, तुम कैसे हो ?"

वह फिर कुछ क्षण रुका और एक बार गहरी सांस लेकर बोल उठा –

"ग्रीशा, मैं बताने आया हूं कि तुम्हें टीका लगवाना होगा !"

कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया।

"किस लिए ?" ग्रीशा ने पूछा।

"रैबीज़* से बचाव के लिए। पाल्मा बीमार है, उसने खाना-पीना छोड़ दिया है और अब न जाने कहां चली गयी है कि आने का नाम ही नहीं लेती। मामा जानवरों के अस्पताल गयी थीं, उन्हें डाक्टरों ने बताया कि उनपर रैबीज का हल्का संदेह है। देखो क्या होता है ? अब हमें, तुम्हें, मामा और अन्य सभी सहायकों को रैबीज से बचाव का टीका लगवाना पड़ेगा।"

"अच्छा, तो यह बात है !" ग्रीशा के पापा धीरे से बोल उठे।

---

* रैबीज़–पागल कुत्ते के काटने से उत्पन्न रोग। – सं०

"अरे मैंने तो पहले ही ताड़ लिया था।" दादी बड़बड़ायीं। "जिस घड़ी यह कुत्ता लेकर आया था, मैं बिचक उठी थी और मन में न जाने क्यों यह बात घर कर गयी थी कि हो न हो यह कुत्ता कुछ उपद्रव जरूर खड़ा करेगा।"

इतने पर ओलेग ने कहा—

"टीका जितनी जल्दी हो सके लगवाना चाहिये। मुझे शक है कि पाल्मा पहले से बीमार रही होगी।"

जब ओलेग चला गया तब ग्रीशा ने रैबीज और उसके लक्षण के बारे में पापा से सवाल पर सवाल पूछना शुरू कर दिया, दिन भर में वह कई बार रसोई में पानी पीने गया और महसूस करता रहा कि उसे पानी से डर लगता है या नहीं। रात में वह लेट गया पर सुबह उठते ही उसे महसूस हुआ कि सर पर मनहूस बोझ है और उदासी ने उसे जकड़ रखा है। लेकिन स्कूल पहुंचते ही वह फिर चहक उठा और उदासी का बोझ सर से उतर गया।

फाटक में घुसते ही दोस्तों के एक मजमे ने कहकहा लगाकर उसका स्वागत किया। सब के सब एक स्वर से चिल्ला उठे—

"यह देखो, एक और पागल आ पहुंचा!"

"अरे वहां, निरे मूर्ख, पगले कहीं के!"

मालूम हुआ कि ग्रीशा और ओलेग के अलावा विद्यार्थियों में से उसके तेरह सहकारी और हैं जो पागल कुत्ते के विष से बचाव का टीका लगवाने अस्पताल जा रहे हैं।

सारे स्कूल में उनकी चर्चा फैल गयी, लड़कों ने उनका मजाक उड़ाने में कोई कोर-कसर बाकी न रखी। पर वे 'पागल' भी बड़े पक्के निकले, इतने फक्कड़ कि उन मजाक उड़ानेवालों से उन्नीस न बैठे। वे अपनी चुहलभरी बातों में सेर का जवाब सवा सेर से देते। कुछ लड़कियां तो इतनी डर गयीं कि उनके पास फटकने की हिम्मत न करतीं। वे दरअसल समझ बैठीं कि इनको छूत की बीमारी है। हर अवकाश के समय में उस्ताद ओलेग के सहकारी लड़कियों को परेशान करने की गरज से उनका पीछा करते और मुंह फैलाकर जोर से भूंकने का अभिनय करते। यह दृश्य सब की दिलचस्पी का सामान सा बन गया।

पढ़ाई खत्म होने के बाद करीब चालीस लड़के जमा हुए और उन्होंने तय किया कि उस्ताद और उसके सहायकों को टीका-केन्द्र तक सब लोग पहुंचाने चलें।

"ओलेग, अपनी पागल पलटन को कतार में खड़ा करो और उसकी कमान संभालो!" जैसे ही लड़कों की भीड़ सड़क पर आयी, लड़के चिल्ला उठे।

"पागलो! कतार बना लो और दाहिनी ओर मार्च करो!" ओलेग ने पलटन को कमांड दी।

ओलेग के सहयोगी दोहरी कतार में मार्च कर रहे थे। चलते समय सभी खीसें निपोड़ रहे थे। इनके पीछे लड़कों का अच्छा-खासा मजमा था। सभी लड़के होंठ फड़काकर मुंह से मार्च की धुन बजाते और चुहलबाज़ी करते।

लड़कों ने टीका-केंद्र के अहाते में घुसते ही इतना शोर-गुल मचाया कि वहां के कर्मचारी खिड़कियों से झांककर देखने लगे कि यह क्या तमाशा है। पहले तो डाक्टर और नर्सें नाराज़ हुईं, पर जब उन्हें यह मालूम हुआ कि ओलेग और उसके साथी टीका लगवाने आ धमके हैं और यह तमाशबीनों की भीड़ उन्हीं के साथ आयी है तो वे भी हंसने लगे। ओलेग की चर्चा उन्होंने पिछले ही दिन सुन रखी थी।

लड़कों की भीड़ बाहर ही ठहर गयी। उस्ताद और उसके सहयोगी टीका-केंद्र के अंदर दाखिल हुए और एक कतार में उस खिड़की के सामने खड़े हो गये जहां लिखा था, 'कुत्तों द्वारा पहली बार काटे गये लोगों के नाम यहां दर्ज किये जाते हैं'। इस साइन-बोर्ड को देखकर लड़के पहले से अधिक चहक उठे और लगे खिलखिलाकर हंसने। ग्रीशा बाहर बरामदे में दौड़ा आया। उसने लड़कों को सूचित किया—

"भई, हमारी पागलों में शुमार नहीं की गयी, हम कुत्ते द्वारा पहली बार काटे गये मरीज़ हैं!"

टीका लगवाने का आज्ञा-पत्र लेकर सहयोगी बालक बाहर बरामदे में आ गये। ओलेग ने अपने सहयोगियों को फिर एक कतार में खड़े होने का आदेश दिया, "जिन्हें कुत्ते ने पहली बार काटा है, कतार में खड़े हो जायें!" बालक रस्मी तौर पर फौजी अंदाज़ में क्षेत्रीय पोलिक्लीनिक की ओर चल पड़े। वहां हर एक को वैक्सीन का टीका लगाया गया। यद्यपि टीका लगवाने में उन्हें दर्द महसूस हुआ फिर भी उन बालकों के चेहरों पर शिकन तक न आयी।

इसके बाद टीका लगवानेवाले लड़के ग्रौर उनके ग्रन्य साथियों ने ग्रपने ग्रपने घर की राह ली। ग्रीशा ग्रौर ग्रोलेग को काफ़ी लम्बा रास्ता तय करना था। वे दोनों साथ साथ चल पड़े। ग्रीशा के साथ लम्बे डग भरता ग्रोलेग दिन में गुज़री घटनाग्रों के बारे में सोच रहा था।

"इसकी क्या परवाह कि हमें टीके भी लगवाने पड़े, पर भला हो पाल्मा का कि ग्रब हमारी शोहरत सारे स्कूल में फैल गयी।" ग्रोलेग ने खीसें निपोड़ते हुए कहा।

"इसमें क्या शक है, खूब रंग रहा ग्राज, धूम मचा दी हम लोगों ने।" ग्रीशा बोल उठा।

"हमारी सबसे बड़ी खूबी यह है कि हम सारे वार हंसी-खुशी झेलें।" ग्रोलेग ने दार्शनिकों के से गंभीर भाव में कहा, "यदि तुम में हंसने-हंसाने का माद्दा है तो सारी मुश्किलें..." इतना कहकर वह सहसा रुक गया, उसके कदम थमने लगे ग्रौर वह रुक गया। वह सामने की ग्रोर घूर रहा था। चेहरा एकदम पीला पड़ गया ग्रौर उसपर बेचैनी के भाव स्पष्ट झलक ग्राये थे। ग्रीशा ने भी उसी ग्रोर देखा ग्रौर उसके भी होश-हवास गुम हो गये।

ग्रगले चौराहे पर नाटे कद का एक मिलीशिया-मैन ग्रपनी मूंछें ऊपर की ग्रोर मरोड़े खड़ा था। कुछ क्षण तक लड़के उसकी ग्रोर भय से देखते रहे, फिर बाद में उन्होंने एक दूसरे पर निगाह डाली।

"ग्ररे, लेफ़्टीनेंट का क्या हाल हुग्रा होगा!" ग्रीशा ग्रातंकित स्वर में फुसफुसाया।

ग्रोलेग कुछ न बोला। दोनों लड़के काफ़ी दूर तक बिना कुछ कहे चुपचाप चलते रहे।

"शायद पाल्मा ने उसे काटा न था?" ग्राखिरकार ग्रीशा ने कहना शुरू किया।

"हम यह कैसे कह सकते हैं?" ग्रोलेग बहुत प्रयास करने के बाद इतना बोल पाया।

"हो सकता है पाल्मा कतई पागल नहीं है।" ग्रीशा ठिठका।

"यदि वह पागल ही है तो? ग्रौर मान लो उसने काट भी खाया हो तो होगा क्या?" धीमी ग्रावाज़ में ग्रोलेग ने चीखते हुए कहा।

"तो हमें लेफ्टीनेंट को सचेत कर देना चाहिये। क्यों क्या राय है तुम्हारी?" ग्रीशा नीची निगाह किये बड़बड़ाया।

"क्यों क्या ख्याल है? और यदि वह इसी रोग का शिकार होकर मर गया तो?"

"इसी लिए तो मैं कहता हूं कि उसे हम सारा हाल बता दें।"

"हमें बता तो देना चाहिये, पर कैसे? क्या हम यों ही जाकर उससे कह सकते हैं, 'हलो लेफ्टीनेंट, हम वही शरारती लड़के हैं जिन्होंने तुमपर कुत्ता झपटाया था। और अब तुम्हें भी टीका लगवाना होगा।' जानते हो कि इतना कहने पर हमारी क्या दुर्गति होगी और किस प्रकार का व्यवहार वह हमारे साथ करेगा?"

लड़के उस पुरानी इमारत के सामने खड़े हो गये जिसके दरवाजे पर पत्थर के दो शेर बने हुए थे। ओलेग अपना बस्ता एक सीढ़ी पर रखकर वहीं बैठ गया। ग्रीशा भी उसकी बगल में जा बैठा। उस्ताद की आंखें सुर्ख थीं, नथुने चल रहे थे और नीची बरौनियां वह जल्दी जल्दी मिचकाता जा रहा था।

"तुम्हारी बात मानकर मैंने बुरा किया, यह मेरी मामूली मूर्खता ही नहीं बल्कि निरी मूढ़ता थी।" वह सर हिला हिलाकर विलाप करता और कहता, "परसों पापा छुट्टी बिताकर घर वापस आ रहे हैं और उनके लाड़ले बेटे ने स्वागत के लिए कितना अच्छा तोहफ़ा तैयार कर रखा है कि आते ही उन्हें दो सौ रूबल जुर्माना भरना पड़ेगा।"

"हो सकता है कि हम लोग पायोनियर सदस्यता से भी वंचित कर दिये जायं।" ग्रीशा ने उसके स्वर में स्वर मिलाते हुए कहा।

बड़ी देर तक उस्ताद और सहयोगी पत्थर के शेरों के बीच की सीढ़ी पर बैठे रहे। वे इतने हताश और परेशान से दिखते कि राहगीर ठिठककर उनकी ओर देखने लगते। जाने का समय हो चुका था, पर ऐसा मालूम होता था कि ग्रीशा और ओलेग हर वस्तु की सुध-बुध ही खो बैठे हैं। दोनों की आंखों के सामने भविष्य की घटनाएं स्पष्ट उभर आतीं कि वे हिरासत में हैं और उनके निर्दोष माता-पिता को मिलीशिया-स्टेशन बुलाया गया है और अंत में सारे सहपाठियों के सामने ही उनकी पायोनियर-टाई वापस ले ली गयी है। उन दोनों ने महसूस किया कि वे ऐसे नाजुक समय का सामना न कर पायेंगे। इससे भी अधिक इस कल्पना से सारे शरीर में कंपकंपी दौड़

गया कि उनकी कायर प्रवृत्ति के कारण ही लेफ़्टीनेंट को तड़प तड़पकर प्राण गंवाने पड़ेंगे।

"शायद वह भी तो बाल-बच्चों वाला प्राणी होगा?" ग्रीशा ने धीरे से कहा।

ग्रोलिंग कुछ देर चुप रहा, फिर उसने अपना दृढ़ निर्णय कह सुनाया—

"जब तक पापा घर वापस नहीं आ जाते तब तक हम कोई भी कार्यवाही न करेंगे। उन्हें हंसी-खुशी घर आ जाने दो, वे परसों लौट आयेंगे। उनके आने के एक दिन बाद हम मिलीशिया-दफ़्तर चलेंगे और वहां सारी राम कहानी कह सुनायेंगे।"

ग्रीशा कुछ न बोला, पर ग्रोलिंग सहसा चौंककर खड़ा हो गया—

"ओह, इतने दिन यह पीड़ा बर्दाश्त न कर सकूंगा! मैं नहीं सह सकता यह सब। आओ इससे शीघ्र ही छुटकारा पा लें, आओ ग्रीशा, चलें!"

ग्रीशा अपनी जगह से न हिला, सर झुकाये सीढ़ियों पर चुपचाप बैठा रहा।

"अरे, तुम आ रहे हो न? अभी तो हमने तय किया था, क्यों क्या भूल गये अपना निर्णय?" ग्रोलिंग ने कहा।

"बताओगे भी कि कहां चलना है?" ग्रीशा ने बिना सर उठाये बड़बड़ाकर कहा।

"क्यों, अभी तो हमने निश्चय किया था कि मिलीशिया-दफ़्तर चलेंगे। हम उनसे सारा किस्सा बता देंगे। और वे लेफ़्टीनेंट को खोजकर उसे आगाह कर देंगे।"

लेकिन ग्रीशा अपनी जगह से टस से मस न हुआ और कहने लगा—

"मैं क्यों जाऊं तुम्हारे साथ? मैं क्यों मुसीबत मोल लेता फिरूं? कुतिया तुम्हारी थी। जाओ न खुद? मुझे क्यों घसीटते हो इस पचड़े में?"

"अच्छा तो ऐसा है तुम्हारा ख्याल! ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी!" ग्रोलिंग कुछ फंसी हुई आवाज़ में अटक अटककर बोला। "तुम्हीं ने मुझे पाल्मा को लेफ़्टीनेंट पर झपटाने की सलाह दी थी और अब बगलें झांक रहे हो! खैर जैसी तुम्हारी मर्ज़ी!"

ग्रोलिंग ने बिना पीछे देखे ही अपने संकरे कंधे बिचकाये और जिस मार्ग से आया था उसी पर पीछे पलट पड़ा।

ग्रीशा ने सर ऊपर किया और जाते हुए मित्र की ओर देखने लगा। कुछ ही क्षण बाद वह झपटकर उसके पीछे दौड़ गया और ग्रोलिंग से कहने लगा—

"आओ चलें, तुम्हारी जीत हुई।"

दो इमारतें पार करने तक वे चुपचाप साथ साथ चलते रहे और उन्होंने आपस में कोई बात न की। ओलेग ने सहसा मौन तोड़ते हुए अधीरता से कहा –

"देखना ग्रीशा, हमपर आंच तक न आयेगी, वे ज़रूर महसूस करेंगे कि हमने उनके हक़ में भला किया है ... आखिर हम लोग उसकी ज़िंदगी बचाने में मदद कर रहे हैं। क्यों तुम्हारी क्या राय है, उन्हें हमारी भावना की कदर करनी चाहिये न?"

ग्रीशा ने एक गहरी सांस ली, पर बोला कुछ नहीं।

वे एक इमारत के सामने रुके, जिसके मुख्य द्वार पर लिखा था, 'तीसरा मिलीशिया-स्टेशन'।

"क्या हम अभी चलें?" ग्रीशा की ओर घूरते हुए ओलेग ने बिल्कुल फुसफुसाकर कहा।

"हां हां, आओ चलें अंदर।" ग्रीशा ने धीरे से जवाब दिया।

लेकिन दोनों ज्यों के त्यों खड़े रहे, अपने स्थान से न हिले।

"क्यों भाई, चलें न हम लोग?" ओलेग ने कुछ क्षण बाद फिर दोहराया।

"हां, आओ चलें।" ग्रीशा ने कहा।

ओलेग ने धीरे से चरमराहट के शब्द के साथ दरवाज़ा खोला, झांककर अंदर नज़र दौड़ायी और चुपके से भीतर घुस गया। ग्रीशा उसके पीछे हो लिया।

लड़के एक ऐसे गलियारे में पहुंच गये थे जिसके दोनों तरफ़ बंद दरवाज़ों की कतार सी थी। केवल दाहिनी ओर का पहला दरवाज़ा खुला था। यह दरवाज़ा उस कमरे का था जो लकड़ी की बाड़ से दो भागों में बांट दिया गया था। इस कमरे का पहला हिस्सा करीब करीब खाली था। इसमें केवल एक मिलीशिया-मैन दरवाज़े पर खड़ा था, लेकिन लकड़ी की दीवार के पीछे गोरा-चिट्टा, नाटे कद का मोटा लेफ़्टीनेंट डेस्क के सहारे खड़ा टेलीफ़ोन पर किसी से ज़ोर ज़ोर से बातें कर रहा था। एक ओर कोने की मेज़ पर एक और मिलीशिया-मैन बैठा था।

"क्यों क्या चाहते हो तुम लोग?" ज्यों ही लड़के कमरे में झांकने लगे, मिलीशिया-मैन ने डपटकर पूछा।

"हम? हमें चीफ़ से मिलना है," ओलेग फुसफुसाया।

"कौन से चीफ़? जो इस समय ड्यूटी पर हैं? तुम्हें उनसे क्या काम है?"

"हमें उनसे एक मामले के बारे में बात करनी है और ज़रूरी बयान देना है।"

"वे काम कर रहे हैं, बैठ जाओ और कुछ देर इन्तज़ार करो।" मिलीशिया-मैन ने बालकों से कहा और उन्हें अन्दर आ जाने दिया। "दावे से कह सकता हूं कि तुम लोग ज़रूर कोई न कोई महत्वपूर्ण बात कहोगे।" मिलीशिया-मैन ने मुस्कराते हुए कहा जैसे कि वह उनपर व्यंग कर रहा हो।

ओलेग और ग्रीशा ऊंची टेक वाली बेंच पर बैठ गये। मोटा लेफ़्टीनेंट टेलीफ़ोन पर चीख रहा था। उसकी छोटी छोटी आंखें चमक उठतीं तथा वह हर बात पर झल्ला उठता। लेफ़्टीनेंट का पारा गरम जानकर लड़कों के चेहरे का रंग उतर गया, डर के मारे उनका बुरा हाल हो रहा था। मोटा लेफ़्टीनेंट चिल्ला रहा था –

"कामरेड फ़ोलोव, मुझे पसंद नहीं कि तुम्हारे कारण मैं डांट-फटकार सहूं, समझ गये न? मैं हर्गिज़ बर्दाश्त नहीं कर सकता! जल्दी ही मैं तुमसे जवाब-तलब करूंगा! हमारे पास पत्र आ गया है ... हां कामरेड, यह रही चिट्ठी।" लेफ़्टीनेंट ने हरा लिफ़ाफ़ा उठा लिया और सर से ऊपर हाथ ऊंचा कर हिलाता रहा, फिर उसने उसे धमाके के साथ मेज़ पर पटक दिया। "और याद रखो ढोंग रचने की कोशिश मत करना, वरना मैं समझूंगा कि तुम धोखा दे रहे हो! समझ रहे हो न?"

इसी क्षण ग्रीशा को महसूस हुआ कि ओलेग ने उसकी बगल में कोहनी मारी और उत्तेजनापूर्ण फुसफुसाहट में कहा –

"हम भी अजब मूर्ख हैं, आओ यहां से निकल चलें। हम चिट्ठी लिखकर भी भेज सकते थे। बस, इतना ही तो हमें करना है, फिर इतनी ज़हमत क्यों उठायी जाय?" दोनों बेंच से उठ खड़े हुए।

"बहुत हो चुका! बहस बंद करो! बस, जो मैं कह रहा हूं वही ठीक है!" मोटे लेफ़्टीनेंट ने झल्लाकर तेज़ी से कहा और रिसीवर झटके के साथ रख दिया। वह ज़ोर से सांस लेते हुए बालकों की ओर मुख़ातिब हुआ और पूछने लगा, "हां, बताओ, तुम किसलिए आये हो और मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं?"

लड़के चुप रहे और एक दूसरे का मुंह ताकने लगे।

"लड़को, बताओ न, तुम लोग किसलिए आये हो, मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूं?" लेफ़्टीनेंट ने इस बार ज़रा तेज़ आवाज़ में पूछा।

"हमारे लिए... हम... कुछ नहीं... हम यों ही आ गये हैं...कोई खास काम नहीं है हमारा।" ओलेग बड़बड़ाया।

"यों ही आने से तुम्हारा क्या मतलब है?"

"अच्छा लो, चलें हम लोग! आओ ग्रीशा चलें।" ओलेग जल्दी से कहकर चलने को हुआ।

लड़के दरवाज़े की ओर लपके लेकिन वे आश्चर्य में पड़ गये और आंखें फैलाये जहां के तहां खड़े रह गये। दरवाज़े पर यमदूत के समान वही लेफ़्टीनेंट खड़ा था जिसके बारे में वे कहने आये थे।

ग्रीशा को होश ही न रहा कब तक खतरे की तलवार उसपर लटकती रही, वह चुपचाप खड़ा रहा जैसे कि सारा खून ही जम गया हो। उसे महसूस हुआ कि घंटों बाद रुंधती हुई आवाज़ में ओलेग बोल सका—

"हलो, कामरेड लेफ़्टीनेंट।"

"हलो।" अफ़सर ने लड़कों पर एक नज़र डालते हुए कहा।

पर निराशा के बहाव ने बालकों के धैर्य का संबल तोड़ सा दिया। वे एकबारगी सब कुछ कह डालने की होड़ करने लगे। दोनों तेज़ आवाज़ में जल्दी जल्दी बोल रहे थे, ताकि एक की बुलंद आवाज़ दूसरे का मुंह बंद करने में समर्थ हो सके और सारा कुछ कहने का श्रेय उनमें से एक ही को प्राप्त हो।

"कामरेड लेफ़्टीनेंट, हमें माफ़ कर दो, हमीं लोगों ने आपपर कुत्ता झपटाया था... आपको तो उस दिन की घटना याद होगी..."

"हां जनाब, हमारा कतई बुरा इरादा नहीं था ... हम केवल आपको उसके करतब दिखाना चाहते थे।"

"हम कुत्ते को चौकसी की शिक्षा दे रहे थे।"

"अचानक ओलेग के हाथ से रस्सी छूट गयी। वह केवल आपको कुत्ते का हुनर दिखाना चाहता था, पर कुत्ता रस्सी छुड़ाकर भाग खड़ा हुआ।"

"हम उसे झपटने का अभ्यास करा रहे थे। इसके बाद हमारा इरादा ट्रेनिंग स्कूल जाने का था, वहां हम उसे ले जाते और अधिकारियों को उसके करतब दिखाते।"

"लेकिन अब आपको भी वैक्सिन का टीका लगवाना पड़ेगा।"

"हम चाहते थे कि हमें कोई पुलिस का कुत्ता सौंपा जाय ताकि उसे कुछ हुनर सिखा सकें।"

"हमें शक है हमारा कुत्ता पागल हो गया है इसी लिए हमें भी टीका लगवाना पड़ा।"

ज्यों ही लड़कों की वेसिर-पैर की वकवास का सिलसिला ग्रागे वढ़ता त्यों ही लेफ़्टीनेंट के तेवर बदलते ग्रौर क्रोध तेज़ी पकड़ता।

"ग्रव सव कुछ समझ में ग्रा गया! तुम लोग ग्रपनी वकवास वंद करो!" वह चिल्ला उठा, फिर उसने ग्रपने हाथ जेवों में ठूंसे ग्रौर लम्वे लम्वे डग भरता कमरे में चहल-कदमी करने लगा।

लड़कों की ज़वान पर ताला सा लग गया ग्रौर वे पसीना पसीना हो गये।

"ग्रोफ़, शैतान!" लम्वा लेफ़्टीनेंट गरज उठा।

ग्रीशा ने देखा कि मोटा लेफ़्टीनेंट मेज़ पर झुका है ग्रौर होंठ दवाकर भरसक हंसी रोकने की कोशिश कर रहा है। कोने में वैठे ग्रफ़सर ने ग्रपना चेहरा दाहिने हाथ से ढंक लिया था ग्रौर उसके कंधे थरथरा रहे थे। दरवाज़े पर खड़ा मिलीशिया-मैन भी ग्रपनी हंसी रोकने की कोशिश कर रहा था।

"ग्रोफ़, शैतान!" लेफ़्टीनेंट ने दोहराया। सहसा जेव से हाथ निकाल लड़कों के सामने रुक गया ग्रौर धमकाते हुए चीख उठा, "तुम... जानते हो मैं क्या सज़ा दूंगा?" ग्रपने को रोककर फिर कमरे में चहल-कदमी करने लगा।

"ग्रच्छा तो यही है वह जिसकी बदौलत तुम्हारा पैंट घुटनों से फट गया था?" मोटे ग्रफ़सर ने खिलखिलाता चेहरा विना ऊपर उठाये पूछा।

इसका उसे कुछ भी उत्तर न मिला। मोटा ग्रफ़सर ग्रीशा की ग्रोर मुड़ा ग्रौर उसने कहा—

"ग्रच्छा ग्रव तुम ग्रपना नाम ग्रौर पता वता डालो।"

"तीन, कुज़्नेत्सोव गली, घर नम्बर ग्राठ।"

ग्रफ़सर ने उसका पता एक पर्चे पर लिख लिया, फिर उसने ग्रोलेग की ग्रोर नज़र घुमायी।

"ग्रौर तुम्हारा क्या पता है?" उसने पूछा।

"पंद्रह, कोरोलेंको प्रोयेज़्द, घर नम्बर एक।"

"ठीक है, अब तुम जा सकते हो।"

लड़के दरवाज़े की ओर बढ़े पर सहसा ओल्गि रुक गया और मोटे अफ़सर से पूछने लगा—

"यह तो बता दीजिये कि हम लोगों पर क्या बीतेगी?"

"हम विचार करेंगे। अरे इस समय तो जाओ, इसी में तुम्हारी खैर है।"

दरवाज़े पर तैनात मिलीशिया-मैन ने उन्हें जाने दिया और निकलते समय उसने ग्रीशा की चांद पर हल्की सी टीप जड़ दी।

मिलीशिया-स्टेशन से निकलकर लड़के सरपट सड़क की ओर भागे। उन्हें डर था कि लेफ़्टीनेंट कहीं अपना इरादा न बदल दे और उनके पीछे दौड़ा आये। जब वे पास ही की सड़क में घुसे तो ओल्गि सहसा रुक गया। उसने जेब में हाथ ठूंस लिये और दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो गया।

"ओफ़ कितने मूर्ख बने! दरअसल निरे मूर्ख!" उसने धीरे से फुसफुसाहट की आवाज़ में कहा।

"कौन मूर्ख बना?" ग्रीशा ने पूछा।

"अरे! हम लोग, और कौन? क्या ज़रूरत थी कि हम उन्हें अपना सही पता बताते? उनका इरादा जांच-पड़ताल करने का तो क़तई था नहीं।"

ग्रीशा ने गहरी सांस ली और चुप रहा।

• • •

ग्रीशा ग्यारह दिन तक बेचैनी से इन्तज़ार करता रहा कि कब उसके पापा को मिलीशिया-दफ़्तर में तलब किया जायेगा। बारहवें दिन जब वह स्कूल में था, घर के द्वार की घंटी किसी ने बजायी। दादी ने दरवाज़ा खोला और देखा कि सामने लम्बा सा मिलीशिया-लेफ़्टीनेंट खड़ा है।

"मुझे माफ़ कीजियेगा, क्या ग्रीशा ऊतोचकिन यहीं रहता है?" उसने पूछा।

"हां-अं-अं, यहीं।" दादी की ज़बान लड़खड़ायी, वे हकलाते हुए बोलीं। उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे कि दिल बैठा जा रहा है।

"क्या वह घर पर है?"

"नहीं, वह स्कूल गया है।"

"अच्छा तो मैं कुछ क्षण के लिए अन्दर आ सकता हूं?"

दादी एक बगल खड़ी हो गयीं। उन्होंने लेफ़्टीनेंट को अंदर आने दिया। उन्होंने देखा कि लेफ़्टीनेंट के साथ एक कुत्ता है। पुलिस के कुत्ते के इस पिल्ले के गले में डोरी बंधी थी। इसकी नोकीली नाक, सीधे खड़े कान, लम्बे पैर तथा गुदगुदे पंजे बड़े भले मालूम दे रहे थे।

"क्या आप यह पिल्ला ग्रीशा को देने की कृपा करेंगी?" लेफ़्टीनेंट ने पिल्ले के गले में बंधी लम्बी डोरी दादी को सौंपते हुए कहा। "पट्टे के साथ लगी प्लेट उसे सब कुछ स्पष्ट कर देगी। इसके अतिरिक्त ग्रीशा और ओलेग से कह दीजियेगा कि लेफ़्टीनेंट सामोइलेन्को ने उन्हें अपनी शुभकामनाएं भेजी हैं।"

लेफ़्टीनेंट ने दादी को सैल्यूट किया और चल दिया।

दादी ने हाथ की रस्सी छोड़ दी और बड़ी देर तक कूल्हों पर हाथ टेककर कुत्ते को गौर से देखती रहीं। पिल्ला अपरिचित गलियारे को सूंघ सूंघकर सुप्रायना कर रहा था। दादी अपना चश्मा उठा लायीं और उसे नाक पर चढ़ाकर कुत्ते की ओर झुकीं तथा गौर से उसे देखने लगीं।

"अहा-हा, तुम! क्या नाम है तुम्हारा? यहां आओ मेरे पास।" होंठों से चप चप की ध्वनि निकालते हुए उन्होंने कहा।

खीसें निपोड़कर, दुम हिलाते हुए वह पिल्ला दादी के पास पहुंच गया। दादी ने उसे पकड़ लिया और पट्टे पर लगी प्लेट में लिखा विवरण पढ़ा जिसमें लिखा था, "तीसरे मिलीशिया-स्टेशन के अधिकारियों की ओर से ग्रीशा उत्योचकिन और ओलेग वोलोशिन को सस्नेह उपहार।"

"अच्छा अब समझी, ठीक है, बहुत ठीक!" दादी फुसफुसायीं।

मंच के नीचे

"ग्रा... क्छी!" छींकने की ग्रावाज़ ग्रंधेरे में गूंज गयी।

"श-श! ग्ररे चुप भी रहोगे! लोग जान गये कि हम यहां हैं तो खैर नहीं!" क्रोध में सिसकारते हुए कीरा ने कहा।

"ग्रोफ़... धू... धूल के कारण तो दम निकल रहा है।" सेन्या ने घुटती हुई ग्रावाज़ में फुसफुसाकर कहा। उसने नाक पर हथेली लगा ली ग्रौर एक बार फिर छींका।

स्कूल के मंच के नीचे बिल्कुल ग्रंधाधुप्प ग्रौर दम घोटनेवाला गर्द-गुबार था। कूड़ा-करकट की मोटी तह, लकड़ी की छीलन, कागज के टुकड़ों ग्रौर चीथड़ों पर से रेंगकर इन लड़कों को यहां तक ग्राना पड़ा था।

ऊपर मंच पर ऊंची कक्षा के विद्यार्थी प्रीसिडियम के लिए मेजें लगा रहे थे। उनके धमाकों से मंच के तख्ते हिल जाते। ऊपर के तख्तों की धूल झर-झरकर इन बालकों के कालरों पर जमा होती ग्रौर तख्तों पर लगे मकड़ी के जाले उनके बालों मे उलझते रहते।

पसीने मे नहाये और थके थके मे वे मंच की अगली दीवार तक पहुंच गये तथा धूल और कूड़े के ढेर पर पेट के बल लेट गये।

"बहुत सुंदर, क्यों है न?" कीरा फुसफुसाया, "भाई, अच्छे पत्रकार का यह सबसे पहला गुण है कि वह हमारे जैसा चुस्त और फुर्तीला हो!"

"बेशक," सेन्या ने भी धीमे स्वर में फुसफुसाकर कहा, "बशर्ते कि हम पकड़े न जायं और इवान लुकीच के सामने पेश न किये जायं।"

बेशक इन लड़कों ने खतरा मोल लिया था। उन्हें अंदेशा था कि कहीं वे पकड़ न जायं और उन्हें हेड-मास्टर के सामने पेश न होना पड़े। उस रात स्कूल के पुराने विद्यार्थियों का विराट सम्मेलन होनेवाला था। एक, दो और पांच वर्ष पहले स्कूल से ग्रेजुएट हुए विद्यार्थियों की कौन कहे, बीस वर्ष पहले के ग्रेजुएट भी इस सम्मेलन में भाग ले रहे थे। ज्यादा भीड़-भाड़ और हुल्लड़बाजी की परेशानी से बचने के लिए इवान लुकीच ने सख्त हिदायत दी थी कि ऊंची कक्षा के विद्यार्थियों के अलावा इस सम्मेलन में कोई भाग न लेने पाये। दुर्भाग्य से कीरा और सेन्या ऊंची कक्षा के विद्यार्थी न थे, वे केवल पांचवीं कक्षा में ही पढ़ते थे।

तख्तों की दीवार में कई ऐसी दरारें थीं जिनके द्वारा लड़के हॉल का सारा दृश्य आसानी से देख सकते थे। उच्च कक्षा के कई विद्यार्थी जल्दी जल्दी कुर्सियों की कतारें ठीक कर रहे थे और बंद दरवाज़ों की ओट में लोगों के ठहाके और पारस्परिक अभिवादन के प्रसन्नतासूचक बोल सुनाई दे रहे थे।

"अधिक देर नहीं है, दस मिनट बाद ही लोग अंदर आना शुरू करेंगे।" कीरा ने कहा।

"आ-च्छीं!" कोई उनके बिल्कुल पास ही छींक उठा।

'पत्रकार' चौंके और दुबककर लेट गये, लेकिन कुछ देर बाद कीरा ने बड़े धीमे स्वर में पूछा –

"कौन है भाई?"

"मैं हूं – इवानोव," किसी लड़के की दबी हुई आवाज़ उन्हें सुनाई दी।

"कौन – इवानोव?"

"यह ल्योशा इवानोव है, छठवीं 'अ' कक्षा का विद्यार्थी।" सेन्या ने कहा।

"अरे ल्योशा, तुम हो?"

"हां, इधर सरक आओ, मुझे सब कुछ साफ़ साफ़ दिखाई दे रहा है।"

दरारों से छन-छनकर धुंधला प्रकाश भीतर आ रहा था। इसी धुंधली र
में लड़कों ने देखा कि ल्योशा उनसे थोड़ी ही दूर हटकर गुड़मुड़ाया, टेढ़े-मेढ़े ढंग से
है। वे रेंगकर उसके पास सरक गये।

"क्या उत्सव के लिए तुम भी आये थे?" सेन्या ने पूछा।

"हां।" उसने उत्तर दिया।

"हम भी इसी लिए आये थे। तुम्हें बता दूं कि आज हमें कितनी मुसी
का सामना करना पड़ा है!"

सेन्या ने ल्योशा को सारी कहानी सुना डाली कि वे आखिरी घंटे के बाद
हॉल में आये और किस तरह मंच पर रखे नकली स्टोव तक पहुंचे जो कि पिछले
नाटक में काम आया था। वे इस नकली रूसी अंगीठी पर चढ़ गये, उसकी काग
दीवारों पर ऐसे सूराख कर लिये जिनसे कि सारा दृश्य साफ़ साफ़ दिखाई दे। छिपक
देखने का ऐसा सुरक्षित स्थान पाकर उन्होंने एक दूसरे के भाग्य सराहे अ
धन्यवाद दिया। लेकिन इन्तज़ामकार विद्यार्थियों ने उनका बना-बनाया खेल चौ
कर दिया। वे शाम के उत्सव के लिए मंच ठीक कर रहे थे।

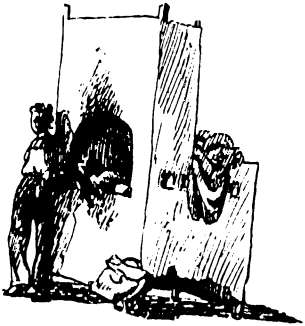

"'अंगीठी' को वे इधर-उध
करते और साथ ही हमें भ
घसिटना पड़ता। अंधेरे में ह
झुककर दोहरे हो गये, हमें य
भी ध्यान रखना पड़ता कि कहीं
जूते रगड़ खाकर शब्द न कर बैठें।
लेकिन प्रबंधक यह न तय कर पाये
कि अंगीठी कहां रखी जाय और
वे उसे बराबर घसीटते रहे। हम
भी उसी के साथ बराबर रेंगते
रहे। यह भी कोई कम मुसीबत न

थी, जब कि सारे समय कीरा मेरे पैर जूतों से रौंदता रहा।" सेन्या ल्योशा से अपना दुखड़ा रो रहा था।

"सब से बड़ी मुसीबत तो यह थी कि हम न जान पाये कि वे उसे किधर ले जायेंगे। हम सीधे उसी ओर बढ़ जाते पर उन्होंने उसे अचानक बायीं ओर मोड़ दिया। हमें ठोकरें लगीं, लेकिन उसमे निकल भागना भी मुश्किल काम था। हम रास्ता साफ़ होने का करीब आध घंटे तक इन्तज़ार करते रहे और जब खतरा दूर हुआ तब निकल पाये। पर तुम यहां कैसे आ सके?" बात खत्म करते हुए कीरा ने पूछा।

"यहां आने में कोई दिक्कत नहीं हुई। बस छटवें घंटे की पढ़ाई गोल की और सीधे यहीं आ धमका।"

धीरे धीरे इस धुंधले प्रकाश में देखने का उन्हें अभ्यास हो गया। अब लड़के एक दूसरे को बहुत स्पष्ट देख रहे थे।

चौड़े कंधों वाला, लम्बा लड़का ल्योशा पेट के बल पड़ा हथेलियों पर ठोढ़ी टिकाये था। मोटा और नाटे कद का कीरा अपने सामने कॉपी रखे पेंसिल छीलने में व्यस्त था। सेन्या कीरा की ही तरह नाटा पर इकहरे बदन का था। उसकी नाक पतली और सुडौल थी। वह बेकली से कुलबुलाता और कभी इस करवट और कभी उस करवट पेट के बल लेट जाता। क्षण भर दरारों से हॉल की ओर झांकता और दूसरे ही क्षण अपने पड़ोसियों को देखने लगता।

"ल्योशा, तुम किस कारण यहां आ पहुंचे हो? महज़ तमाशा देखने के लिए?"

ल्योशा ने धीरे से कंधे झटक दिये और रहस्यपूर्ण ढंग से कहा–

"हो सकता है तमाशा देखने के लिए, हो सकता है किसी और कारण से।"

"भाई हम लोग तो खास काम से यहां आये हैं। हम लोग संवाददाता हैं। कीरा हमारे दीवारी अखबार का संपादक है और मैं उस अखबार का स्टाफ़ फ़ोटोग्राफ़र हूं। क्या तुम्हें पता है कि इसी स्कूल के पूर्व छात्रों में से एक सज्जन डिप्टी होनेवाले हैं?" सेन्या ने कहा।

ल्योशा जल्दी से उसकी ओर पलटा और घूरकर देखने लगा।

"हां, मैं जानता हूं।" उसने धीरे से जवाब दिया।

कीरा पेंसिल की नोक टटोलने लगा।

"शायद वे भी आज इस सम्मेलन में भाग लेंगे। हमने सोचा था कि हमें अपने अखबार में लिखने लायक दिलचस्प और ताज़ा मसाला मिल सकेगा!"

"यदि वे आये तो हम अपनी कहानी 'पिओनेर्स्काया प्राव्दा'* में भी छपवाने की कोशिश करेंगे। यकीन मानो, हमारी शोहरत सारे स्कूल में फैल जायेगी।"

ल्योशा ने विचित्र ढंग से खीसें निपोड़ दीं।

"तुमने कहानी अधूरी ही छोड़ दी, हां, आगे क्या हुआ था यह तो बताओ।" उसने कहा।

"खैर, हम लोग इवान लुकीच के पास पहुंचे और कहा कि हम लोग संपादन-मंडल के सदस्य हैं, अतः आपसे अनुरोध है कि हमें सम्मेलन देखने की अनुमति दें। तुम जानते हो उन्होंने क्या जवाब दिया? 'हमारे यहां संपादन-मंडलों के बीस से अधिक सदस्य और तीस से ऊपर स्टाफ़ फ़ोटोग्राफ़र हैं तथा स्कूल के पचास अन्य लोग भी हैं जो उत्सव देखना चाहते हैं। वे भी तमाशाई नहीं हैं बल्कि किसी न किसी उद्देश्य से समारोह देखना चाहते हैं।' उन्होंने कहा 'मैं हर एक को सम्मेलन में आने की इजाज़त तो दे नहीं सकता और न किसी के साथ रियायत ही कर सकता हूं।' अतः हम लोगों ने यही तय किया कि इसी प्रकार छिपकर देखें।"

"अरे! मान लो हम पकड़ भी जायं तो अखबार में लिखने के लिए कुछ न कुछ सामग्री हम जुटा ही लेंगे।" संपादक बोल उठा।

"बिल्कुल ठीक! 'विजेता की निन्दा नहीं की जाती।' क्यों कोस्त्या, सही है न यह बात? और यदि 'पिओनेर्स्काया प्राव्दा' हमारी कथा छाप दे तो समझो पांचों घी में हैं, तब तो इवान लुकीच भी हमारी सूझ की सराहना किये बगैर न रहेंगे।"

"उम्मीद तो है कि वे आयेंगे।" सेन्या ने उत्सुकता दिखाते हुए कहा।

"उनका क्या ठिकाना, जानते ही हो वे काम-काजी व्यक्ति ठहरे, मुमकिन है न भी आयें।" संपादक ने कहा।

ल्योशा ने सहसा सेन्या की ओर हाथ बढ़ा दिया और कहने लगा—

"आओ शर्त लगा लो, मैं दावे से कह सकता हूं कि वे आयेंगे।"

---

* बाल-पायोनियरों का समाचारपत्र। —सं०

"तुम्हें क्या मालूम – कैसे कह सकते हो कि आयेंगे ही?"

"आओ न शर्त लगा लो..."

ल्योशा बात पूरी न कर पाया कि घंटी बज गयी और लड़कों को हॉल का दरवाज़ा खुलने का शब्द सुनाई दिया। उसी क्षण तीनों अलग अलग दरारों से सटकर झांकने लगे।

कुछ ही मिनटों में वह लम्बा-चौड़ा हॉल युवा, हट्टे-कट्टे, अधेड़ तथा वृद्ध नर-नारियों से खचाखच भर गया। नागरिक लिबासों के बीच खान-कर्मचारियों तथा नाविकों की चमकीले बटनों और बिल्लों वाली जैकेटें झिलमिला उठतीं।

"इकसठ, बासठ, तिरसठ..." संपादक ने उत्तेजनापूर्ण फुसफुसाहट में गिनना आरंभ किया, "तिरसठ लोग तमगे लगाये हैं! और देखो वे रहे सोवियत संघ के वीर, सेनानी मेजर दूबोव! ये सब के सब हमारे ही स्कूल से ग्रेजुएट हुए थे। क्यों सेन्या, क्या यह कोई कम शान की बात है?"

सेन्या ने कोई उत्तर न दिया, एकाग्रचित्त ज़ोर से सांस लेते हुए वह दीवार के बराबर रेंग रहा था। वह अपना कैमरा जमाने के लिए छेद ढूंढ़ रहा था।

"कीरा, ओ कीरा!" कुछ क्षण बाद वह फुसफुसा उठा। "देखो यहां एक दरार है लेकिन यह भी बड़ी संकरी है, केवल लेंस अथवा आकृति देखने का शीशा ही इसमें जम सकता है।"

"लो उसे और बड़ी कर लो।" संपादक ने पेंसिल बनाने का चाकू फ़ोटोग्राफ़र के हाथ में दे दिया और फिर अपनी दरार से सटकर झांकने लगा।

सेन्या ज़ोर लगाकर तख्ते को उस पतले चाकू से कुरेदने लगा।

"सुनते हो कीरा, तुम्हारा चाकू भी मुझसे टूट गया।" थोड़ी ही देर में उसने फुसफुसाकर कहा।

संपादक ने उसे कुछ उत्तर न दिया। वह हॉल की ओर आंख गड़ाये था जहां सैकड़ों की संख्या में तमगे लगाये तथा बिना तमगों के युवक और वृद्ध ज़ोर से कोलाहल कर रहे थे। अभी अभी एक महिला हॉल में घुसी थी। एक पुरुष और दो औरतें हाथ हिलाकर ज़ोर से चिल्लाते हुए उसे पुकार रही थीं –

"हलो, बटन! वेरा! यहां आ जाओ!"

"ग्ररे देखना तो वह कौन है? पांक्रातोव! पुराना साथी वील्या न!" हॉल के एक कोने से यह ग्रावाज़ गूंज उठी। वहां पर खड़े कर्नल ने ग्रावाज़ सुनकर सर घुमाया ग्रौर मुस्कराकर गंजे सिर के हल्के बाल सहलाने लगा।

ग्रानेवाले हर नये मेहमान का इसी प्रकार मित्रतापूर्ण संबोधनों से स्वागत किया जाता। शिक्षकों का स्वागत दूने उत्साह से तालियों की गड़गड़ाहट के साथ किया जाता। जब हेड-मास्टर इवान लुकीच गणित की वृद्धा ग्रध्यापिका ग्रान्ना प्योदोरोवना के साथ हॉल में ग्राये तो सब लोग ग्रदब से खड़े हो गये ग्रौर जब तक वे हॉल से गुज़रकर मंच पर ग्रपनी कुर्सियों में बैठ न गये, तालियां बजती रहीं। लड़कों ने मंच पर उनकी कुर्सियों के घसिटने की ग्रावाज़ सुनी।

"कितनी ग्रनोखी बात है कि ये लोग इतने बुज़ुर्ग होते हुए भी निरे बच्चों की सी हरकतें कर रहे हैं। क्यों कीरा है न यही बात?" सेन्या ने कहा।

"ग्रजीब बात क्या है इसमें? वे इस समय ग्रपने पुराने स्कूल में हैं ग्रौर उन्हें बचपन में बीती बातों की याद ग्रा रही है।" कीरा ने उत्तर दिया। सहसा उसने एक झटका सा दिया ग्रौर शीघ्र ही फुसफुसाकर कहने लगा, "वह देखो, वे ग्रा गये!"

दरवाज़े के पास चौड़े कंधों वाला, लम्बे कद का व्यक्ति गहरे नीले रंग का सूट पहने खड़ा था। उसकी छाती पर दो तमगे लटक रहे थे। उसका सर ज़रा पीछे की ग्रोर झुका था। उसने तिरछी नजर से पूरे हॉल को एक बार देखा। पहले तो किसी ने भी उसकी ग्रोर ध्यान न दिया। लेकिन पांचवीं कतार से मेहंदयी रंग के बालों वाला, नाटा, उच्च कक्षा का विद्यार्थी खड़ा हो गया ग्रौर कुछ क्षण तक ग्रागंतुक की ग्रोर देखने के पश्चात् हाथ हिलाकर झनझनाती ग्रावाज़ में चिल्ला उठा—

"हमारे भावी डिप्टी, कामरेड इवानोव ग्राइये, ग्रापका स्वागत है!"

सब की निगाहें गहरे नीले रंग के सूट पहने व्यक्ति की ग्रोर घूम गयीं। हॉल में उपस्थित सभी लोग ग्रादर से खड़े हो गये, हर्ष-ध्वनि के वेग से खिड़कियों के कांच तक हिल उठे।

"हुर्राह! हुर्राह!" सहसा फ़ोटोग्राफ़र सेन्या चिल्ला उठा, दोनों हाथ-पैर ज़मीन पर टिकाकर कूदने लगा ग्रौर उसने कीरा के कंधे थपथपाना शुरू कर दिया।

संपादक को भी जोश ग्रा गया ग्रौर उसने खड़े होने की कोशिश की ग्रौर उसका

सिर मंच के तख़्तों से जा टकराया। दूसरे ही क्षण सब कुछ भूलकर वह फिर उठने लगा।

"मैं पहचान गया था कि वे ही हैं। मैं बराबर देखता रहा हूं, मैंने उन्हें अंदर आते देखा था और उनका चेहरा देखते ही मैं समझ गया था कि मैंने इन्हें कहीं देखा है! मेरा तो जी चाहता है कि यहां से निकल चलूं और यदि हो सके तो उनसे बातें करूं और उनका फ़ोटो ले लूं!" (इतना कहते समय तीन बार उसका सिर तख़्तों से टकराया था।)

दोनों पत्रकार अधीर हो उठे और वे ज़ोर से बातें करने लगे, उन्हें ध्यान न रहा कि वे अपने को इस प्रकार मुसीबत में भी डाल सकते हैं। ल्योशा दरार से चिपका चुपचाप हॉल की ओर देखने में व्यस्त था।

सहसा वह पत्रकारों की ओर घूमा और मुस्कराते हुए उन्हें बताया—

"वे मेरे पापा हैं।"

"कहां, कौन हैं तुम्हारे पापा?" कीरा की समझ में नहीं आ रहा था।

"क्यों देखा नहीं तुमने, वही जिनकी तुम लोग चर्चा कर रहे थे, भावी डिप्टी इवानोव ही तो मेरे पापा हैं।"

पत्रकारों ने एक-दूसरे की ओर देखा, फिर ल्योशा की ओर घूरने लगे।

"अरे क्या मज़ाक करते हो, वे तुम्हारे पापा हैं?" कीरा ने कहा।

"अच्छा बताओ कौन हैं तुम्हारे पापा, हंसी की बात जाने दो..." अविश्वासपूर्ण ढंग से मंद स्वर में बोलते हुए सेन्या ने कहा।

"तुम्हें मेरा विश्वास नहीं? याद है तुम्हें, कल ही तो तुम मुझे और पापा को मिले थे? बेकरी के पास से तुम दो रोटियां लेकर जा रहे थे। अब याद आया तुम्हें?"

सेन्या कुछ देर के लिए चुप रहा, फिर सहसा उत्तेजित होकर उछल पड़ा।

"कीरा, ल्योशा सच कहता है, वे इसी के पापा हैं! ओह, देखो तो तस्वीर में उनके बाल काफ़ी काले मालूम देते हैं पर वास्तव में वे भूरे हैं। ल्योशा भाई, तुमने पहले ही बता दिया होता, क्यों नहीं बताया तुमने?"

ल्योशा एक बार फिर गंभीर हो गया। वह पेट के बल सरका और पीछे हट गया और अधिक से अधिक उदासीनता दिखाते हुए वह बोल उठा—

"मैं कहता ही क्यों? इसमें कौन सी ख़ास वात थी?"

संपादक फिर उछला और उसका सिर मंच के तख्तों से जा टकराया।

"यह क्या कम शान की वात है? अच्छा यह वताओ कि स्कूल में लोग जानते हैं कि तुम इवानोव के बेटे हो?"

"मैं ऐसा नहीं हूं कि खुद अपना डंका पीटूं और वढ़ वढ़कर वातें मारता फिरूं।"

ज्यों ही सभापति ने घंटी वजायी, पत्रकारों ने हेड-मास्टर इवान लुकीच को भाषण देते सुना। उनके वाद पूर्व छात्र और उच्च कक्षा के विद्यार्थी एक के वाद एक बोलने को खड़े हुए। अंत में जव इवानोव वोलने खड़े हुए तो हर्ष-ध्वनि तथा तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूंज गया। इवानोव मंच पर चढ़े और उन्होंने किसी विषय पर भाषण दे डाला। लड़कों ने सव कुछ सुना पर कुछ भी याद न रख सके।

"कीरा, ओ कीरा, देख रहे हो?" सेन्या ने आवेशयुक्त भाव में कहा, "सारा स्कूल उनकी चर्चा करता था पर आज तक कोई न जान पाया कि इवानोव जैसे महापुरुष का वेटा भी हम लोगों का सहविद्यार्थी है। वह हम लोगों के साथ ही पढ़ता-लिखता है पर उसने कभी भी बड़े वाप का वेटा होने की शान न दिखायी। यह कम महत्व की वात नहीं!"

"मुझे तो इसमें कोई विशेषता नहीं दिखाई देती।" संपादक तेज़ी से बोला, "इसे हम ल्योशा की विनम्रता कह सकते हैं। ल्योशा, हमारे अखवार के लिए अपने पिता के विषय में एक लेख लिख दो कि उनका विद्यार्थी जीवन कैसा था, कैसे और क्या क्या काम उन्होंने किये और कैसे वे डिप्टी पद के उम्मीदवार वने। क्यों लिखोगे न?"

"अच्छी वात है, यद्यपि इसके लिए समय थोड़ा है।"

"तुम जैसे भी हो सके लिख डालो और वाद में कीरा उसे ठीक संपादित कर देगा। अफ़सोस है कि हम उनका चित्र नहीं ले पा रहे हैं। ल्योशा, तुम्हारी क्लास टीचर कौन हैं? आन्ना फ़्योदोरोवना ही तो हैं? मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि तुम्हें अपनी कक्षा में पाकर उन्हें आजकल बड़ा अभिमान होता होगा।"

उन्होंने ल्योशा से सवाल पर सवाल पूछना शुरू कर दिया। सेन्या ने ठंडी सांस ली और निराश भाव से दुखी होने लगा कि वह कामरेड इवानोव का चित्र तक न ले सका। कीरा अपनी कहानी अखवार में प्रकाशित करने के सपने देख रहा था।

ग्रंत में उन्होंने इवान लुकीच को यह घोषित करते सुना कि उत्सव की रस्मी कार्यवाही खत्म की जाती है। हॉल में फिर बातचीत का शोर, कुर्सियों के हटने ग्रौर लोगों के चलने-फिरने की ध्वनि गूंजने लगी।

कीरा, ल्योशा की ग्रोर मुड़ा।

"ग्रच्छा तो तुम ग्रपने पापा को देखने ग्राये थे? बस यही देखना था तुम्हें कि स्कूल वाले उनका स्वागत किस प्रकार करते हैं, क्यों है न?"

"बस, मैं यों ही ग्राया था।"

"ग्ररे मूर्ख।" सेन्या ने कहा, "तो तुम यहां लुके-छिपे क्यों? यदि तुमने उनसे कहा होता कि मैं इवानोव का बेटा हूं तो वे बिना रोक-टोक हॉल में जाने की ग्रनुमति दे देते।" सेन्या कुछ क्षण के लिए चुप हो गया। पर जैसे ग्रकस्मात कोई बात उसे याद ग्रा गयी हो उसने ल्योशा की कोहनी थाम ली ग्रौर स्थिर भाव से उसकी ग्रोर देखते हुए कहा, "ल्योशा! तुम हमारा एक उपकार कर सकते हो?"

"कौन सा उपकार, मैं सुनूं भी?"

"हम लोग यहां से बाहर निकल चलें, तुम हमारा परिचय ग्रपने पापा से करा देना। मैं उनका एक चित्र ले सकूंगा, कीरा उनसे मिलकर बात करेगा ग्रौर ग्रखबार के लिए कुछ सामग्री प्राप्त कर सकेगा। क्यों ल्योशा, कैसा रहेगा यह?"

ल्योशा इस प्रस्ताव पर सोचने लगा।

"ग्राग्रो ल्योशा चलें," सेन्या ने विनयपूर्वक फुसफुसाते हुए कहा, "क्या तुम इतना करोगे, बताग्रो मुझे, करोगे न, क्यों क्या कहते हो? यदि हम तुम्हारे बिना जायेंगे तो शायद ग्रड़चन होगी, पर हम सब साथ चलेंगे तो शायद कोई रोक-टोक न होगी। ल्योशा, तुम जानते हो कि मैं कितना कुशल फ़ोटोग्राफ़र हूं। मैं तुम्हारे लिए दर्जनों चित्र खींच दूंगा। प्यारे ल्योशा, इतना तो कर ही दो, हम बड़े ग्राभारी होंगे।"

ल्योशा चुप रहा।

"बेशक सेन्या दूर की कौड़ी लाया है, पर ल्योशा, ग्रब तुम्हारी सहायता चाहिये, क्या तुम इतना कर सकोगे?" कीरा ने कहा।

"ग्रच्छी बात है, दोस्तो। तुम भी क्या कहोगे, तुम्हें पापा से मिलाने की जुगत

लगाऊंगा।" ल्योशा चौपाये की तरह खड़ा हो गया और कहने लगा, "हां, मैं तो इस ढब का हूं कि मैं मित्रों की बात कभी टाल ही नहीं सकता। [illegible] आओ चलें।"

वह अंधेरे में रेंगकर मंच के पिछवाड़े लगे छोटे दरवाजे की ओर बढ़ा। [illegible] दिल से दोनों पत्रकार उसके पीछे पीछे हो लिये।

तीनों जल्दी ही दरवाजे को फांदकर मंच के पीछे आ गये। वे अपने [illegible] झाड़ने लगे और बालों में भरा बुरादा तथा उनमें उलझे मकड़ी के जाले [illegible] करने लगे।

"ल्योशा," सेन्या ने फुसफुसाकर कहा, "तुम्हारे चेहरे पर कुछ अंक लिखे [illegible]"

"अरे अंक? कहां लिखे हैं?" उसने पूछा।

"ठीक इस ओर देखो स्याही से, अ वर्ग और धन का निशान, फिर [illegible] और बराबर का निशान, अ वर्ग ऋण दो अ ब वर्ग लिखा है। कुछ अंक और [illegible] स्पष्ट नहीं हैं। मैं उन्हें पढ़ नहीं पा रहा हूं।"

ल्योशा ने अपनी बायीं हथेली देखी।

"अरे मैंने कुछ फ़ारमूला यहां लिख रखे थे, मेरा चेहरा पसीने से तर है [illegible] लिए ये उभर आये हैं।"

चेहरे के दागों के बीच उभरे नीले अंकों को वह रुमाल से रगड़ रगड़कर मिटाने लगा।

"अच्छा आओ चलें।" उसने कहा, "इधर-उधर भटकने और डरने की [illegible] ज़रूरत नहीं, बस मेरे पीछे पीछे चले आओ।"

सेन्या को पर्दे पर एक लम्बी दरार दिखाई दी। उसी से वह मंच की ओर [illegible] और कहने लगा –

"अरे, आन्ना पुयोदोरोवना तुम्हारे पापा से बातें कर रही हैं।"

बोरा और ल्योशा ने भी देखा कि नाटे कद की दुबली अध्यापिका के साथ [illegible] कंधों वाले, लम्बे-तगड़े इवानोव पिछले पर्दे के बिल्कुल सामने ही टहल रहे हैं। आन्ना पुयोदोरोवना हाथ पीछे किये हुए गंभीरता से, पर कुछ रुक रुककर स्वाभाविक स्पष्ट भाव से बोली –

"मुझे बड़ी प्रसन्नता है, और प्यारे इवानोव मुझे तुमपर अभिमान भी है कि तुम्हें कितना आदर प्राप्त है। पर इस प्रतिष्ठा के साथ साथ तुमपर कुछ बड़ी ज़िम्मेदारियां भी हैं।"

"देखो, सुना तुमने?" सेन्या फुसफुसाया।

"हां-अं-अं..." अध्यापिका इतना कहकर कुछ देर चुप रहीं, पर फिर बोलीं, "लेकिन तुम्हें इन बड़ी ज़िम्मेदारियों के फेर में उन बातों से बेख़बर नहीं रहना चाहिये जो इनसे कम महत्वपूर्ण नहीं हैं।"

"आन्ना फ़्योदोरोवना, मैं आपका मतलब नहीं समझ पाया।" कामरेड इवानोव ने धीरे से गंभीर स्वर में पूछा।

"आओ हम दूर हट चलें, मैं नहीं चाहती कि लोगों के कानों में हमारी बातचीत की भनक पहुंचे। मैं इस समय वे बातें न छेड़ना चाहती थी जिनसे तुम्हारा दिल दुखेगा, पर मजबूर हूं कि मुझे कहना ही पड़ रहा है। पता नहीं तुमसे कब मुलाकात हो, क्योंकि यहां आने के लिए तुम्हारे पास समय ही कहां..."

वे मंच के सिरे पर कोने तक आ गये और इन लड़कों से करीब एक गज़ के फ़ासले पर खड़े हो गये।

"आन्ना फ़्योदोरोवना क्या आपको कुछ त्योशा के बारे में कहना है?" इवानोव ने बेचैनी दिखाते हुए पूछा।

"हां, मुझे तुम्हारे बेटे के ही बारे में कुछ कहना है।"

कीरा और सेन्या ने कनखियों से त्योशा की ओर देखा। त्योशा ने उनकी ओर देखा, फिर नज़रें हटा लीं। उसके कानों तक लाज की लाली दौड़ गयी।

"आन्ना फ़्योदोरोवना बताइये, मैं सुन रहा हूं!"

"अच्छा तो प्यारे इवानोव, सुनो, मैं तुम्हारे बेटे से क़तई ख़ुश नहीं हूं। दर असल साफ़ बात तो यह है कि मुझे तुमसे भी शिकायत है। ख़ैर मैं अभी तक न समझ सकी क्या बात है कि जब तक तुम्हारा बेटा पांचवीं कक्षा में रहा तब तक तो वह ठीक था, पर गर्मी की छुट्टी के बाद जब से वह छठी कक्षा में आया है तब से हाथ से हाथ हो गया है, उसमें सुधरने के कोई आसार ही नहीं नज़र आते। वह दर्जे में सब से पीछे है। अन्य लड़कों के बराबर चलना तो दूर रहा, उसने चोरी-चमारी, अध्यापकों

ग्रौर मित्रों ने झूठ बोलने का धंधा ग्रपना लिया है . . . कल ही की सी बात है कि मजबूरन तीसरी बार उसे बुरे नम्बर देने पड़े। यह तो तुम भी समझते हो कि ... बात न चलेगा।"

"ग्रान्ना फ़्योदोरोवना, मैं . . . मुझे इस बात का ग्रब तक कुछ भी पता न था," ल्योशा के पापा ने ग्रस्पष्ट स्वर में बड़बड़ाते हुए कहा।

"तुम्हें इन बातों का पता न था?" ग्रान्ना फ़्योदोरोवना ने धीरे से दोहराया ग्रौर फिर क्रमशः उनकी ग्रावाज़ तेज़ी पकड़ती गयी, "तुम कहते हो पता न था, क्यों? क्या तुम यह समझते हो कि बच्चे को एक बार स्कूल में दाखिल करा देने के बाद उसकी ज़िम्मेदारी का बोझ तुम्हारे सिर से हट गया? 'पता न था!' मालूम है कि बच्चे की मां तुम्हारी सहायता के बिना बालक को ठीक रास्ते पर नहीं ला सकती। वह भी ग्रपने काम-धाम में व्यस्त रहती है। ग्रौर तुम ऐसे हो कि यहां झांकने तक नहीं ग्राते! तुम्हें खबर नहीं कि तुम्हारा बेटा कभी स्कूल का सबक नहीं तैयार करता, सदैव उचक्कापन किया करता है। मैं तुम्हारी सराहना इसलिए कर सकती हूं कि तुम बहुत व्यस्त रहते हो, तुमपर ग्रनेक ज़िम्मेदारियां हैं। हो सकता है कि ग्रन्य लोगों से ग्रधिक तुम्हें व्यस्त रहना पड़ता हो, लेकिन बेटे की देखभाल तुम्हारा मुख्य कर्तव्य है। ग्रौर मेरा कर्तव्य है कि मैं तुम्हारा ध्यान इस ग्रोर ग्राकर्षित करूं। प्यारे इवानोव, मेरी बात का प्रयोजन यह है . . ."

भूरे बालों वाली, नाटी ग्रध्यापिका क्रोध के ग्रावेश में चौड़े कंधों वाले, लम्बे भावी डिप्टी इवानोव से सारी बातें कह रही थीं ग्रौर वे चुपचाप खड़े सुन रहे थे। लज्जा ग्रौर ग्लानि से उनका चेहरा तमतमा उठा था, वे बीच बीच में कहते जाते:

"ग्रान्ना फ़्योदोरोवना, मैं समझ रहा हूं सारी बात . . . मैं समझता हूं... स्वयं दिलचस्पी लूंगा इस विषय में। ग्राप निश्चिंत रहें ग्रान्ना फ़्योदोरोवना।"

सेन्या ने पर्दे की दरार बंद कर दी। पत्रकार ल्योशा की ग्रोर तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखने लगे। ल्योशा उन्हें भौचक्का सा देखने लगा। वह पीछे घूमा ग्रौर चुपके से दबे पांव मंच के नीचे दरवाज़े में घुस गया ग्रौर बिना कुछ कहे-सुने ग्रंधेरे में गायब हो गया।

"तो मामला यह है, ग्राग्रो चलें।" सेन्या ने कहा।

दोनों पत्रकार भी उसी दरवाज़े की ओर बढ़े।

तीनों अंधेरे में चुपचाप तख्तों की अगली दीवार तक रेंग आये। वे अपनी अपनी जगह फिर वापस आ गये। यहीं से उन्होंने शाम का उत्सव देखा था। दस मिनट तक तीनों बिल्कुल चुपचाप रहे।

"सुनो दोस्तो!" ल्योशा ने फुसफुसाकर कहा।

"क्या?" उन्होंने पूछा।

"अब किसी से मत कहना कि वे मेरे पापा हैं, क्यों कहोगे?

"हमें क्या गरज़ है कि कहते फिरें।" सेन्या बड़बड़ा उठा। "पर तुम स्वयं न बढ़ बढ़कर बातें मारना।"

मंच पर उच्च कक्षा के विद्यार्थियों के आर्केस्ट्रा ने वाल्ट्ज़ नाच की धुन बजाना आरंभ किया। नाच की धुन सुनते ही जोड़े हॉल के सूने फ़र्श पर थिरकने और फेरे लगाने लगे।

पर इस समय मंच के नीचे उदासी और सन्नाटा था।

खोजक

बात उस समय की है, जब मैं शिक्षण विद्यालय में पढ़ता था। एक स्कूल में उस्ताद हुआ करते थे जिनका नाम था निकोलाई निकोलायेविच। पढ़ाने का ढंग सीखते समय मैं उनके दर्जे में बैठा करता था।

एक बार की बात है कि निकोलाई निकोलायेविच दर्जे में पढ़ा रहे थे। लड़कों की ओर मुंह किये वे सीधे खड़े थे और उनकी भूरी बकरा-दाढी कुछ ऊपर उठी हुई थी। उनके सर के बाल सफ़ेद और घुंघराले थे। चांदी के महीन तार जैसे उजले इन लच्छेदार बालों की परछाईं चमकते ब्लैक बोर्ड पर पड़ती और उनका काला कोट बोर्ड के रंग से मेल खाकर उसी में घुला-मिला सा जान पड़ता। उनके दाहिने हाथ में खुली किताब थी और बायें में फ़ीतेदार बिना कमानी का चश्मा। चश्मे वाला हाथ धीरे से हिला हिलाकर, बिना किताब में देखे वे सुंदर धुन में कविता सुना रहे थे।

मैं पीछे की कतार में बैठा था और मेरे आगे थे उस दर्जे के छत्तीस विद्यार्थी। मैंने देखा कि कितनी दिलचस्पी से सब उनकी कविता सुन रहे थे। काले, हल्के

सुनहरे, चोटीदार तथा बेचोटी के बालों वाले सारे विद्यार्थी – क्या लड़के और क्या लड़कियां – सब के सब गर्दनें ज़रा ऊंची उठाये उनकी बातों में कुछ ऐसे रमे जान पड़ते कि हिलने तक का नाम न लेते।

अचानक दो लड़के उत्तेजित होकर हिले-डुले और काना-फूसी करते हुए अपनी खिचड़ी अलग पकाने लगे। इनमें से एक के सिर के बाल अंगारे की तरह सुर्ख और दूसरे के काले थे। दोनों पास पास एक ही डेस्क पर बैठे थे। आपस में ज़ोर से फुसफुसाकर वे एक दूसरे को छत की ओर देखने का इशारा करते।

निकोलाई निकोलायेविच की निगाह उनपर पड़ी और उन्होंने लड़कों को धिक्कार भरी नज़र से देखा। लड़के चुप हो गये पर अधिक देर शान्त न रह सके। सुर्ख बालों वाले लड़के का जी न माना, उसने हरकत फिर शुरू की और वह घूंसा ऊपर तानकर किसी को दिखाने लगा।

दर्जे के विद्यार्थी क्रोध से उसकी ओर घूरने लगे। यह देख उस्ताद की दाढ़ी ज़ोर से हिल उठी और उनकी निगाहें उसपर जा टिकीं।

"अनातोली! यदि तुम्हारा पढ़ने में जी नहीं लगता तो तुम दर्जे से जा सकते हो, पर दूसरों को तो पढ़ने-पढ़ाने दो।" इतना कहकर वे फिर कविता सुनाने लगे।

कविता के दूसरे पद पर पहुंचने तक उनके स्वर में उतार आ गया, वे कुछ रुकते से जान पड़े और दर्जे की ओर क्रोध से देखते हुए धीरे से कविता इस प्रकार कहते रहे जैसे कि मन का बोझ उनकी वाणी दबा रहा हो।

"हा-हा-हा!" कोई बेहूदे ढंग से हंस पड़ा।

निकोलाई निकोलायेविच ने झटके से किताब बंद की और कांपती सी आवाज़ में उन्होंने कहा –

"मैं नहीं पढ़ा सकता... मिखाईल यूरेविच लेर्मोन्तोव जैसे महत्वपूर्ण कवि की कविता के साथ यदि तुम लोग ऐसे मखौल का रुख दिखाओगे तो मैं कतई नहीं पढ़ा सकता। अनातोली, मैं तुमसे अभी शराफ़त से कहता हूं कि दर्जा छोड़कर चले जाओ।"

अनातोली अपनी जगह से न हिला।

"अनातोली! इसी दम दर्जे से बाहर हो जाओ! सुनते हो कि नहीं!" एक साथ कई विद्यार्थी उसपर बरस पड़े।

अनातोली ने गहरी सांस ली और दरवाजे की ओर बढ़ा।

"अनातोली, रुको! जरा इधर आना।" निकोलाई निकोलायेविच ने कहा।

लड़का मुड़ा और उस्ताद के निकट पहुंच गया। उसके छोटे से गुलाबी गालों पर सुर्ख दाग उभर आये और उसकी उत्सुक नीली आंखें उस्ताद पर आ टिकीं।

उस्ताद निकोलाई निकोलायेविच ने सावधानी से अनातोली की लाल टाई की ओर इशारा करते हुए पूछा –

"यह क्या है?"

"यह टाई है।" लड़के ने धीरे से कहा।

"कौन सी टाई?"

"बाल पायोनियरों वाली," लड़के ने फुसफुसाकर भर्रायी हुई आवाज में कहा। फिर भी उसका स्वर दर्जे के हर लड़के को स्पष्ट सुनाई दिया।

निकोलाई निकोलायेविच ने क्रोध से लड़कों की ओर देखा और कहने लगे –

"मैं सभी बाल पायोनियरों का ध्यान इस घटना की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। अनातोली, बाहर स्टाफ़-रूम के सामने मेरा इन्तजार करो।"

निकोलाई निकोलायेविच इतना कहकर चुप हो गये और उन्होंने चश्मे वाले हाथ से दरवाजे की ओर इशारा किया। लड़का दर्जे के बाहर निकल गया, पर उसके चेहरे पर तनाव आ गया था।

"बड़े शर्म की बात है, जरा सा भी अदब-कायदा लड़कों में नहीं रह गया।" निकोलाई निकोलायेविच ने बड़बड़ाते हुए फिर से किताब खोल ली।

निकोलाई निकोलायेविच बड़बड़ाकर चुप ही हुए थे कि किसी के खुसुर-फुसुर हंसने की आवाज सुन पड़ी। लड़के एक के बाद एक दबी आवाज में हंसने लगे। उनसे न रहा गया और फिर सारा दर्जा ठहाका मारकर हंस पड़ा। सभी की निगाहें छत के उसी स्थान पर टिकी थीं जिसने कुछ देर पहले अनातोली को आकर्षित किया था।

निकोलाई निकोलायेविच की भी दृष्टि उस ओर बरबस चली गयी और मैं भी उसी ओर देखने लगा कि मामला क्या है। ऊपर छत के समीप एक छोटा सा जालीदार चौकोर झरोखा था। जाली के पीछे से कोई झांकता नजर आ रहा था। निकोलाई निकोलायेविच इसे देखते रह गये, उनके मुंह से एक भी शब्द न निकल सका।

ब्लैक बोर्ड के पास से बिल्कुल अंगीठी के नीचे आ खड़े हुए, और उन्होंने अपने हाथ पीछे की ओर कर लिये।

"यह सब क्या तमाशा है?" उन्होंने गंभीरता से पूछा।

इतने ही में स्कूल की घंटी बजी, उस दिन की पढ़ाई खत्म हो गयी। लेकिन दर्जे में ठीक वैसी ही खामोशी थी, जैसे कि पढ़ाई खत्म होने के बजाय अभी शुरू हुई हो।

जाली के पीछे से झांकनेवाला चेहरा अंधेरे में गायब हो गया। निकोलाई निकोलायेविच तेजी से दर्जे के बाहर निकल गये और मैं उनके पीछे पीछे चल पड़ा।

• • •

हम दरबान के पास पहुंचे। उसने बताया कि इमारत के अंगीठों तक पहुंचने का रास्ता बायलर-रूम से है। हम तीनों ने अंगीठों तक पहुंचने का मार्ग खोजना शुरू किया। बायलर-रूम बंद था। दरबान से निकोलाई निकोलायेविच ने फुसफुसाते हुए पूछा –

"मार्केई इवानोविच, क्या मैं जान सकता हूं कि वे कैसे अंदर पहुंचे?"

"मेरे ख्याल से खिड़की से भीतर गये होंगे।" दरबान ने ताले में चाभी लगाते हुए कहा।

हम कमरे में घुसे। कमरा काफ़ी ठंडा था, बायीं ओर दो बड़ी खिड़कियां थीं और उनका ढाला नीचे की ओर झुका हुआ था। दायीं ओर दो ढंग लगे बायलर रखे हुए थे। एक सिरे पर खरंजों की दीवार आगे उभरी हुई थी। ऐसा जान पड़ता कि ईंटों की बनी बड़ी सी अंगीठी दीवार से सटी है। निचले भाग में बड़ा सा दरवाजा लगा था। दरबान ने बिना कुछ कहे-सुने उस ओर इशारा किया।

"निकोलाई निकोलायेविच..." मैंने कहना शुरू किया।

"श-श-श!" उन्होंने कहा।

हम सबने आवाज सुनी और बायलर के पीछे छिप गये।

"क्या बात है, कहीं तुम्हें चोट तो नहीं लगी?" दबे स्वर में किसी ने पूछा।

"अरे रुको भी! मालूम देता है कि मैं धर लिया गया।"

लोहे के दरवाजे को किसी ने ठेला और बारह वर्ष का एक दुबला-पतला लड़का घसिटकर बाहर निकल गया। उसका चेहरा गंभीर पर सुकुमार और भोला-भाला था। बाल एक अरसे से न कटे थे। सारे बाल धूल से भरे भूरे भूरे लग रहे थे। उसके पीछे गोल सिर वाला मोटा लड़का था। देखने में वह पहले लड़के से एक साल छोटा लगता था।

वे एक दूसरे की धूल झाड़ने लगे। पीठ पर हाथ पड़ते ही गर्द के बादल सर तक ऊंचे उठ जाते।

"जानते हो! शायद निकोलाई निकोलायेविच मुझे पहचान गये हैं।" मोटे लड़के ने कहा, "मैं कमरे में झांक रहा था, उन्होंने मुझे देख लिया और चिल्ला उठे कि यह क्या तमाशा है।"

निकोलाई निकोलायेविच बायलर के पीछे झुककर छिपे थे। वे सीधे खड़े हो गये। उनके साथ ही दरबान और मैं भी सीधा खड़ा हुआ। लड़कों के तो होश ही उड़ गये। डर के कारण बोल तक न निकल सका। वे एकदम चुप थे जैसे कि जबान पर ताला लग गया हो।

निकोलाई निकोलायेविच हाथ पीछे किये उनकी ओर बढ़ गये।

"अच्छा बताओ, तुम लोग ऊपर क्या कर रहे थे?" उन्होंने सामान्य स्वर में पूछा।

दोनों चुप रहे। मोटा लड़का अकारण खरंजे की दीवार की ओर देखने लगा और दुबला कोयले के एक टुकड़े को जूते के सिरे से फर्श पर लुढ़काता रहा।

"मैं तुम्हारे जवाब का इन्तजार कर रहा हूं।"

मोटे लड़के ने आंखें फैलाकर सहमी सहमी नजरों से निकोलाई निकोलायेविच की ओर देखा और फिर नजरें नीची कर लीं।

"हम खोजक हैं," उसने धीरे से फुसफुसाकर कहा।

"हम लोग यों ही ऊपर चढ़ रहे थे।" उसके साथी ने उसकी बात स्पष्ट करते हुए कहा।

"अच्छा इसी लिए तुम लोग बिना आज्ञा के दर्जे से भाग आये हो?"

'खोजकों' के पास इसका कोई उत्तर न था, वे चुप रहे।

"बहुत अच्छा!" निकोलाई निकोलायेविच ने कहा, "जानते हो, तुम्हारा यह आचरण किस कोटि का समझा जायेगा? बस यही समझो कि तुम लोग सरकार का पैसा नाहक बरबाद कर रहे हो। इसके अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता। सरकार तुम लोगों की पढ़ाई-लिखाई पर अच्छी-खासी रकम खर्च करती है ताकि पढ़-लिखकर तुम काम के आदमी बन सको। पर तुम लोग, पढ़ना-लिखना तो दूर रहा, उल्टे दूसरों के सर पर बला की तरह सवार रहते हो – न स्वयं पढ़ो और न दूसरों को पढ़ने दो। इसके सिवाय तुम्हारी हरकतों के बारे में और कहा ही क्या जा सकता है?"

मोटे लड़के ने सुबककर रोना शुरू कर दिया। दुबले लड़के ने कोयले के टुकड़े पर अपना पैर रख लिया और उसे सीमेंट की फ़र्श में रगड़ने लगा।

"अच्छा इस समय जाओ और स्टाफ़-रूम के सामने मेरा इन्तजार करो।"

'खोजक' शर्म से गड़े जा रहे थे। वे बायलर-रूम के बाहर निकल गये।

"मात्वेई इवानोविच, यह दरवाजा बंद कर देना, नहीं तो दूसरे लड़के भी इसमें घुसना शुरू करेंगे।" निकोलाई निकोलायेविच ने दरबान से कहा।

"इसमें तो ताला लगा था, न जाने कहां गुम हो गया।"

"भाई, देख लो, नहीं तो जल्दी ही दूसरा ताला लेकर इसमें बंद कर दो – दरवाजा खुला न रह जाय।"

दरबान बाहर चला गया और निकोलाई निकोलायेविच सिर हिलाकर कुछ सोचते हुए बायलर-रूम में टहलते रहे।

"बड़े बेढब हैं ये लड़के!" कहकर वे मुस्करा उठे।

दाढ़ी झटकते हुए उन्होंने उस सूने कमरे में चारों ओर नजर दौड़ायी, फिर चिंता प्रकट करते गहरी सांस लेकर धीरे से बोल उठे –

"मेरे प्यारे दोस्त, जिंदगी भी एक अजीब तमाशा है। मैं यहां पिछले तीस साल से पढ़ा रहा हूं और हमेशा से इन जालीदार झरोखों को देखता आया हूं, फिर भी मुझे पता ही न चल सका कि इतनी विचित्र भूल-भुलैयां के बिल्कुल निकट हम रहते और काम करते थे।"

उन्होंने एक बार फिर चारों ओर देखा और झुककर बायलरों में झांकने लगे।

"दरअसल यह अजीब बात है। जिस घर में आप रहते हैं, उससे आपका वास्ता हाल का नहीं वर्षों पुराना होता है। आप समझ बैठते हैं कि आपको उसके चप्पे चप्पे से जानकारी है, पर वास्तव में ऐसा होता है कि आपको उस घर के शतांश का ज्ञान नहीं होता। और फिर ऐसा ही छोकड़ा आता है और आपकी आंखें खोलता है। कहो न प्यारे दोस्त, क्या यह कोई कम आश्चर्य की बात है?"

"दरअसल... है क्यों नहीं।" मैंने अपना गला साफ़ करते हुए कहा।

बिना कमानी का चश्मा हिलाते हुए निकोलाई निकोलायेविच टहलते रहे।

"आखिरकार, वास्तविक ज्ञान-पिपासा यानी दुनिया की हर जानकारी प्राप्त करने की चाह मनुष्यमात्र की जन्म-जात स्वाभाविक आकांक्षा है। पर हम पंद्रह सोलह वर्ष की आयु में अपने आस-पास की अनेक घटनाओं की ओर ध्यान देना तक बंद कर देते हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि हम अपने को सीमित दायरे में बांध लेते हैं और उन्हीं के व्यापारों में अपना सारा ध्यान समेटकर केंद्रित कर देते हैं। जीवन में निश्चय ही ऐसा ही होता आया है..."

निकोलाई निकोलायेविच कुछ देर रुके, उन्होंने नाक पर बेकमानी का चश्मा चढ़ा लिया और खरंजे की दीवार का उभरा भाग ध्यान से देखने लगे।

"मेरे अनुमान से..." वे कहते कहते रुक गये और कुछ सोचते रहे, "मैं समझता हूं कि आजकल इमारतों में इस प्रकार के झरोखे बनाने का रिवाज नहीं है। आजकल के मकानों की दीवारें बहुत पतली होती हैं। पर इसे देखो...यह तो पूरा भूल-भुलैयां है।"

वे उसके नजदीक पहुंच गये।

"स्पष्ट है कि यही मुख्य और मध्य का मार्ग अथवा आधार-स्तम्भ है, क्यों तुम्हारा क्या ख्याल है? अरे, इसकी कई शाखाएं भी अंदर से फूटी हैं..."

निकोलाई निकोलायेविच लोहे का दरवाजा खोलकर अंदर झांकने लगे।

"और जहां से इसमें कई शाखाएं फूटी हैं वहीं से हवा का झोंका आता जान पड़ता है।"

निकोलाई निकोलायेविच ज्यों ज्यों आधार-स्तम्भ के भीतर सरकते जाते त्यों त्यों उनकी आवाज दबती सी जाती।

मैं ऊब रहा था, मैंने निकोलाई निकोलायेविच से कहा –

"अब तक तो हमें चला जाना चाहिये था, निकोलाई निकोलायेविच, चलेंगे नहीं क्या आप? आइये चलें।"

"अरे यहां छल्ले भी हैं।" उस संकरे मार्ग से आवाज सुनाई दी, "अरे वाह, देखो तो जरा ऊपर चढ़ने के साधनों का भी ध्यान रखा गया है। बड़ी हैरत है कि बनानेवाले पहले से ही हर बात का ध्यान रखते हैं। मेरा अनुमान है कि इसे साफ़ करने के लिए ये छल्ले लगाये गये हैं।"

निकोलाई निकोलायेविच का बड़बड़ाना धीमा होता गया और उनकी आवाज काफ़ी दूर से आती जान पड़ी। मैंने अपना सिर उसी छेद में थमा दिया। मैंने उनसे कहा –

"निकोलाई निकोलायेविच, आइये लौट चलें, अब तक तो सभी लोग घर जा चुके होंगे।"

ऊपर अंधेरे से उनकी आवाज सुनाई दी –

"अरे, तुम इस खम्भे को तो अच्छी तरह देख लो, आओ न ऊपर। देखो कैसे हर चीज़ पहले से ही सोच-समझकर बनायी गयी है! अरे तुम चढ़ क्यों नहीं रहे हो? मेरी बगल में इन्हीं संकरे रास्तों की एक शाख कहीं दूसरी ओर को फूटी है।"

मुझे डर था कि यदि मैं चढ़ने से इन्कार कर दूं तो यह बूढ़े उस्ताद कहीं बुरा न मान जायं। इसी लिए अंधेरे में छल्ले टटोलता हुआ मैं ऊपर सरकने लगा। सरकते सरकते मैं ऊपर पहुंचा ही था कि निकोलाई निकोलायेविच के जूतों से मेरा सिर जा लगा।

"माफ़ करना भाई।" वे कह उठे।

उसी समय नीचे बायलर-रूम में किसी के चलने-फिरने की ग्राहट मिली।

"निकोलाई निकोलायेविच, कोई नीचे ग्रा गया है ..."

"श-श-श!" निकोलाई निकोलायेविच ने मुझे चुप रहने का संकेत करते हुए धीरे से कहा। हम लोग चुप रहे। कदमों की ग्राहट पास ग्राती जान पड़ी। लोहे का दरवाज़ा ज़ोर से झनझना उठा ग्रौर झटके के साथ उसके बंद होने की ग्रावाज़ सुनाई दी। कदम दूर होते मालूम दिये, फिर उनकी ग्राहट भी न मिल सकी। पहले खम्भे के नीचे से थोड़ी थोड़ी रोशनी ग्रा रही थी, पर ग्रब इतना ग्रंधेरा हो गया था कि हाथ न सूझता था।

ऊपर कहीं पास ही निकोलाई निकोलायेविच बड़बड़ा उठे—

"मेरे दोस्त, ऐसा मालूम देता है कि हम लोगों से भयंकर भूल हो गयी है।"

"क्या मतलब है ग्रापका मैं नहीं समझा?" मैंने पूछा।

"मुझे विश्वास है कि नीचे दरवान ग्राया होगा।"

"क्या उसने हम लोगों को ताले में बंद कर दिया है?"

"हां मुझे ऐसा लगता है कि हम बंद हो गये!"

"ग्रोह, तब तो गज़ब हो गया!"

"हां-ग्रं-ग्रं!"

थोड़ी देर खामोशी रही। निकोलाई निकोलायेविच बेचैन बेचैन से जान पड़े। वे मुझसे कह उठे—

"मुझे उतर ग्राने दो, तुम जानते हो मेरी उम्र साठ से ज्यादा है।"

मैं उन छल्लों के सहारे नीचे उतरने लगा ग्रौर निकोलाई निकोलायेविच मेरे पीछे पीछे उतरने लगे। हम दोनों उस संकरे रास्ते में एक दूसरे से सट खड़े थे। मैंने दरवाज़े को हिला-झुलाकर देखा।

"इसमें तो ताला जड़ दिया गया है।" मैं बोल उठा।

"मेरे दोस्त, तब तो बहुत बुरा हुग्रा।" वे बोल उठे।

कुछ क्षण हम लोग चुपचाप खड़े रहे।

"क्या हम मदद के लिए किसी को पुकार सकते हैं?" अंत में हिम्मत करके मैं उनसे पूछ बैठा।

"मदद के लिए पुकारोगे? अरे हां... चिल्लाना... भाई नहीं, मेरी समझ में... कैसे कहूं... बड़ी अजीब बात होगी। यह समझ लो, पढ़ाई खत्म हो चुकी है, लेकिन बहुत से लड़के अलग अलग टोलियों में शामिल काम कर रहे हैं अथवा वाचनालय में बैठे पढ़ रहे हैं। समझ लो हम चिल्लायेंगे तो क्या होगा? हमारी आवाज़ हर कमरे में गूंजेगी। वे सोचेंगे यह क्या तमाशा है? मेरे ख्याल से उस समय हमारी कितनी बेइज्जती होगी जब लोग कहेंगे कि निकोलाई निकोलायेविच झरोखों के संकरे रास्ते में बंद हैं और मदद की पुकार कर रहे हैं।"

"तब क्या किया जाय?" मैं पूछ बैठा।

"मेरे दोस्त, मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा है। यकीन मानो ऐसे चक्कर में मैं कभी नहीं फंसा।"

"मुझे भरोसा है कि ऐसी घटना पहले न हुई होगी," मैंने उनसे कहा, पर इस समय मेरा गुस्से के मारे बुरा हाल हो रहा था।

निकोलाई निकोलायेविच ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और बोले–

"देखो भाई, तुम ठहरे जवान और चुस्त लड़के। एक बार फिर ऊपर चढ़ जाओ और किसी बगली रास्ते से होकर बिना शोर मचाये किसी को धीरे से बुला लेना और अपनी मुसीबत भरी कहानी सुनाना कि हम इस तरह फंस गये हैं, हमें उबार लो। कर सकोगे इतना? इस काम के लिए मैं तुम्हारा सदा एहसान मानूंगा।"

इसके सिवाय और कोई चारा न था। मुझे फिर ऊपर चढ़ना पड़ा। मैं एक एक छल्ला टटोलकर अंधेरे में ऊपर चढ़ने लगा। इस समय दियासलाई का अभाव खल रहा था। हर क्षण धूल सिर पर झर पड़ती और मुझे बार बार छींक आ जाती। अंधेरे में कुछ भी न सूझा कि कितने ऊपर मैं चढ़ आया था, लेकिन जब मैं पहली बगली सुरंग तक पहुंचा तो अनुभव हुआ कि मैं किसी अथाह गढ़े के ऊपर लटका हुआ हूं। नीचे से आती निकोलाई निकोलायेविच के गुनगुनाने की धुन सुनकर जी को कुछ तसल्ली हुई।

बगल की यह सुरंग चौकोर और करीब बीस फ़ीट लम्बी थी। इसके सिरे पर लगे जालीदार झरोखे से रोशनी आ रही थी। मैं पेट के बल उस संकरी सुरंग में आगे

की ओर बढ़ने लगा। सुरंग धूल, प्लास्टर और ईंटों के टुकड़ों से भरी थी, और सारी दरारों से होकर मैं गुज़र रहा था। सिरे पर पहुंचकर मैंने जाली से नीचे की ओर झांककर देखा। बड़ी देर तक तो मैं समझ ही न पाया कि मैं कहां से कहां पहुंच गया हूं। नीचे जो कमरा था, वह कई भागों में बांट दिया गया था। जब मेरी समझ में आया कि यह कैसा कमरा है तो मैं फिर लौट पड़ा। लौटते समय मुझे कूड़ा-करकट के ढेर से गुज़रना पड़ा। कूड़ा नीचे झरने लगा। निकोलाई निकोलायेविच खांसे और उन्हें लगातार छींकें आने लगीं।

"क्यों भाई कुछ पता लगा, पुकारा तुमने किसी को?" उन्होंने उत्साह दिखाते हुए पूछा।

"जिधर मैं गया था वह तो कपड़ा रखने की कोठरी निकली। वहां पुकारता किसको?"

"बड़े अफ़सोस की बात है।"

मैं इन भूल-भुलैयां की हर शाख में चक्कर काटता रहा। हर बार या तो किसी खाली कमरे के ऊपर पहुंचना अथवा ऐसे कमरे के ऊपर पहुंच जाना जहां बहुत से लड़के काम करते होते। अंत में मैं स्टाफ़-रूम के झरोखे तक पहुंच गया। अध्यापक गोल मेज़ पर बैठे हेड-मास्टर की बातें ध्यान से सुन रहे थे। मैं एकदम लौट पड़ा, मुझे एक और सुरंग दिखाई दे गयी। जिस सुरंग में मैं रेंग रहा था उसपर यह नयी सुरंग लम्ब के समान खड़ी थी। इसे मेरी नयी खोज ही समझिये। मैं इसमें घुस गया और रेंगते हुए किनारे तक पहुंचा। मैंने झरोखे पर लगी जाली से झांककर देखा और फ़ौरन पीछे रेंगने लगा।

यह जाली गलियारे के ऊपर थी। गलियारे में अनातोली (वही लाल बालों वाला लड़का जिसे स्टाफ़-रूम के सामने इन्तज़ार करने का आदेश निकोलाई निकोलायेविच ने दिया था) और वे दोनों 'खोजक' जो इस मुसीबत की जड़ थे खड़े आपस में बात कर रहे थे। मैं खम्भे के नीचे उतर गया, इतना थक गया था कि रग रग दुख रही थी।

"निकोलाई निकोलायेविच, बड़ा बुरा हाल है!" मैंने कहा।

"अरे! अब तक ऐसा आदमी न खोज सके जो हमारी मदद करता?"

"हां, खोजा तो है मैंने, स्टाफ़-रूम में अध्यापकों की सभा हो रही है।"

"वे समझेंगे कि मैं उनकी सभा में भाग न लेना चाहता था।"

"स्टाफ़-रूम के सामने तीन लड़के आपका इन्तजार कर रहे हैं। आपने उन्हें कुछ बातें करने के लिए रोक रखा है।"

मेरे निकट किसी स्थान पर खड़े निकोलाई निकोलायेविच गहरी सांस लेते जान पड़े और फिर बोले –

"क्या वे अभी तक मेरा इन्तजार कर रहे हैं? अच्छा, प्यारे साथी, तुम्हारी क्या राय है?" क्षण भर बाद उन्होंने पूछा।

"अब एक ही उपाय है कि मैं फिर रेंगकर स्टाफ़-रूम के झरोखे तक पहुंचूं।" मैंने कहा।

"अरे नहीं! मेरे दोस्त, ऐसा मत करना!" निकोलाई निकोलायेविच ने आतंकित स्वर में कहा। "आखिरकार तुम्हें मेरी इज्जत का भी ख्याल रखना है। हमारे हेड-मास्टर और सहयोगी अध्यापक अच्छे लोग हैं, लेकिन मैं उनके सामने क्या सफ़ाई दूंगा कि किस प्रयोजन से मैं यहां आ फंसा।"

"लेकिन भाई निकोलाई निकोलायेविच, फिर ऐसा कौन है जिसे आप अपने काम की सफ़ाई देने जायेंगे?"

"बेशक तुम ठीक कहते हो, पर मैं निश्चय ही इसके विरोध में हूं कि अध्यापकों से सहायता मांगी जाय।" उन्होंने कहा।

"अच्छा फिर इसके अलावा कौन सा उपाय है? क्या उन लड़कों से कहना उचित होगा?" मैंने पूछा।

निकोलाई निकोलायेविच ज़रा सकुचाये और कहने लगे –

"देखो मेरे भाई... यदि वे इस घटना की किसी से चर्चा न करें तो इससे उत्तम कोई उपाय नहीं है। मुझे विश्वास है कि वे मेरा आदर करते हैं, लेकिन इस समय किसी हद तक यह कहा जा सकता है कि वे मेरे अंकुश के नीचे हैं... तुम तो जानते ही हो कि वे क्यों मेरा वहां इन्तज़ार कर रहे हैं। इसी लिए मैं उन्हें किसी प्रकार की सहायता करने को बाध्य नहीं कर सकता।"

"निकोलाई निकोलायेविच, भूल भी जाओ ऐसी बातों को, मैंने तो केवल मज़ाक किया था।"

"अरे! भूल क्यों जाऊं। अरे सुनो! मैंने उपाय ढूंढ़ लिया है। अब तुम उनके पास जाओ।"

"किन के पास?" मैंने पूछा।

"उन लड़कों के पास। उनसे जाकर कहो कि मैं विपत्ति में फंस गया हूं। इनसानियत के नाते मैं उनकी मदद चाहता हूं। उनसे साफ़ कह दो कि मैं उन्हें ताड़ना तो दूंगा ही, क्योंकि ऐसा करना मेरा कर्तव्य है। मैं इनसानियत के नाते ही उनकी मदद चाहता हूं। इसका, इस बात से कोई सरोकार नहीं कि मैं उनका अध्यापक अथवा अधिकारी हूं।"

"आप कैसे उनसे मदद की आशा करते हैं? अभी आपने उन बालकों को इसी कार्य के लिए झिड़की दी है और अब..."

"मेरे दोस्त, तुम मेरा आशय बिल्कुल नहीं समझे। वे इस बात को भली भांति समझते हैं कि मैं इसलिए नाराज़ हुआ था कि उन्होंने पढ़ने से जी चुराया था। मैं इसलिए नहीं नाराज़ हुआ कि उन्होंने स्वाभाविक जिज्ञासावश खोजकों की सी स्वस्थ मनोवृत्ति का परिचय दिया है। आखिरकार मनुष्य में जिज्ञासा और चाह न होती तो अमेरिका जैसा इतना बड़ा महाद्वीप कैसे खोज निकाला जाता?"

"मेरी समझ में यह उचित होगा कि मैं तीनों लड़कों के बजाय किसी एक को अपना रहस्य बता दूं। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि मैं कैसे यह रहस्य एक ही बालक तक सीमित रख सकूंगा।"

"नहीं, यह तरीका ठीक न होगा! यह तय है कि अकेला लड़का इस रहस्य को न छिपा पायेगा। वह सब जगह गाता फिरेगा। मगर जब तीनों जान लेंगे तो बात उन्हीं के बीच रह जायेगी, आगे न बढ़ सकेगी। तुम मत घबराओ, वे सब कुछ समझ लेंगे। लेकिन शर्त यह है कि यह बात कानों कान किसी को न मालूम हो, इसका वचन पहले उनसे ले लेना।"

"अच्छा, आप इसे अब भी रहस्य बनाये रखने का हठ ठाने हैं?" मैंने पूछा।

"भाई, और कोई चारा ही नहीं है। ऐसे मौकों पर व्यक्ति रूढ़िगत चलन का सहारा न ले तो और क्या करे? अच्छा मेरे दोस्त, ऊपर चढ़कर उनके पास तक तो जाओ।"

निकोलाई निकोलायेविच ने मुझे हल्के से कोहनियाकर चढ़ने को प्रेरित किया।

जब मैं जाली के निकट पहुंचा तो मैं बड़ी देर तक लड़कों को देखता रहा। वे चुपचाप खड़े थे, कभी वे आगे-पीछे होते और कभी सूने गलियारे की ओर खामोश नज़रों से देख लेते। लाल बालों वाला अनातोली दीवार के सहारे खड़ा था। उसने जेब से पेंसिल निकाली और उसे कुतरने लगा।

"उस्ताद निकोलाई निकोलायेविच अब न आयेंगे, मैं दावे से कह सकता हूं कि वे घर चले गये!" लम्बे 'खोजक' ने कहा। अनातोली ने नज़र तक न उठायी। उसने कहा—

"जब तुम कुछ जानते-बूझते नहीं हो तो बेहतर है कि चुप रहो।"

"मैं क्या जानूं उन्हें—हमसे कुछ उम्मीद करना ही व्यर्थ है।"

'खोजकों' ने भी अनातोली की बगल में दीवार का सहारा ले लिया।

"अभी तो तुम लोग चौथे दर्जे में हो न?"

"हां।"

"तभी उनसे तुम्हारा पाला नहीं पड़ा। जब पांचवें में पहुंचोगे तब तुम उन्हें जान जाओगे!"

लाल बालों वाले लड़के ने फिर पेंसिल कुतरना शुरू किया। सहसा वह उन 'खोजकों' में से एक की ओर मुखातिब हुआ और बोला—

"जानते हो कि अच्छे अध्यापक का पहला सिद्धान्त क्या है? जो कुछ वह कहे उसे करे। वह जो कहता है शब्द-ब-शब्द करता है। निकोलाई निकोलायेविच भी इसी ढंग के अध्यापक हैं। वे हमारे अच्छे अध्यापकों में से हैं, उनकी प्रशंसा अखबार तक में की जा चुकी है।"

"मैं जानता हूं, लेकिन वे बहुत सख्त मिजाज रहे हैं," मोटे लड़के ने दुख प्रकट करते हुए कहा।

"अध्यापक नरमी बरतने लगते हैं तो हम क्या कम ऊधम जोतते हैं, सारा स्कूल सर पर उठाये फिरते हैं।"

लाल बालों वाले लड़के ने पेंसिल कुतरना फिर शुरू कर दिया। मैं लेटा उस छेद से लड़कों की ओर देख रहा था। उत्तेजना की वजह से मेरा इतना बुरा हाल

था कि कंठ खोलना मुश्किल था। करीब दो मिनट तक मैं कोशिश करता रहा, तब कहीं फुसफुसाते हुए कह पाया –

"लड़को!"

उन्होंने मेरी आवाज़ न सुनी। मोटा लड़का फिर बोल उठा –

"उनके साथ वह दूसरा नौजवान कौन था?"

अनातोली ने पेंसिल का लेड निकाल बाहर खींच लिया था और अब उसने हथेली पर कुछ लिखना शुरू कर दिया।

"कोई नहीं, बस एक विद्यार्थी।"

मेरा गला रुंध रहा था। नाक में धूल भर गयी थी और ऐसा लगता कि अभी छींक आना चाहती है।

"ओ! लड़को!" इस बार मैंने ज़रा ज़ोर से फुसफुसाकर आवाज़ लगायी।

तीनों लड़कों ने झटके से ऊपर सर उठाये और मेरी ओर देखकर चौंक पड़े। मोटा लड़का मुंह दबाकर हंस पड़ा और कहने लगा –

"देखा तुमने, एक और जा फंसा वहीं।"

अनातोली ने पेंसिल का बचा-खुचा टुकड़ा जाली की ओर फेंक दिया।

"बस तुम्हीं एक ऐसे हो जो ठीक से पता लगा लोगे! देखो न इन लोगों को, ये इसी इल्ज़ाम में पकड़े जा चुके हैं।"

"लड़को! सुनो तो सही... दरअसल मैं ... मैं उस प्रयोजन से नहीं चढ़ा हूं जैसा कि तुम समझ रहे हो। इनसानियत के नाते मैं तुमसे कह रहा हूं..., बात यह है कि निकोलाई निकोलायेविच ने मुझे भेजा है ... अरे नहीं, बात ऐसी नहीं है, निकोलाई निकोलायेविच ने वास्तव में मुझे नहीं भेजा..."

"क्या बकवास लगा रखी है तुमने?" मोटे लड़के ने पूछा।

"भाई बात यह है कि निकोलाई निकोलायेविच को तुम्हारी मदद की आवश्यकता है। ज़रा सी गफ़लत के कारण हम मुसीबत में पड़ गये हैं ... सारांश यह है कि हम भीतर बंद हो गये हैं ... दरबान ने हमें भूल से अंदर ही बंद कर दिया है। उसे पता न था कि हम भीतर हैं और अब हम यहां बंद हैं।"

लाल बालों वाले लड़के ने हंसना बंद कर दिया।

"क्यों! क्या तुम विद्यार्थी हो?" उसने पूछा।

"हां! मैं विद्यार्थी हूं!" मैंने प्रसन्न होकर कहा। अब मेरी आवाज़ अधिक स्पष्ट थी। "हम लोग यहां वंद हैं। निकोलाई निकोलायेविच वाहर निकलने में तुम्हारी सहायता चाहते हैं, पर एक शर्त है कि किसी को कानों कान खबर न हो।"

लड़के उत्साहित हो उठे और ऐसे प्रसन्न दिखाई दिये जैसे कि मैंने उन्हें उत्तरी ध्रुव की यात्रा के लिए निमंत्रित किया हो।

"ताला कहां लगा है? क्या लोहे के दरवाज़े के पीछे?" दुवले लड़के ने पूछा।

"हां, वहीं तहखाने में।"

मोटे लड़के ने हंसते हुए अपने साथी की पीठ पर धौल जमायी और वोल उठा—

"ओह! कितने अच्छे हैं हमारे निकोलाई निकोलायेविच!"

अनातोली ने उनकी बांहें खींचीं और कहा—

"आओ चलें!"

"हम तुम्हें आनन-फ़ानन वाहर निकाल लेंगे।" मोटे लड़के ने कहा।

तीनों मोड़ पर पहुंचनेवाले ही थे कि मैंने उन्हें रोका—

"लड़को! निकोलाई निकोलायेविच तुमसे इस वात का आश्वासन चाहते हैं कि तुम इस घटना की चर्चा किसी से न करोगे!"

"ज़रूर! इसमें क्या शक है?" अनातोली ने स्वीकार करते हुए सर हिला दिया।

जव मैं नीचे उतरकर निकोलाई निकोलायेविच के पास आया तो मैंने उन बालकों को दरवाज़े के पीछे फुसफुसाते हुए सुना। वे ज़ोर लगाकर कुछ खुरचते और धीमे स्वर में वातें करते जाते—

"लो, यह कील लगाओ! इसे खोलने के लिए तुम्हें कील घुमानी पड़ेगी!"

* * *

आधे घंटे बाद निकोलाई निकोलायेविच खाली दर्जे में डेस्क के पीछे बैठे थे। तीन लड़के उनके सामने खड़े थे और आंखें फाड़कर उनकी ओर देख रहे थे। अनुशासन, पढ़ाई आदि की चर्चा समाप्त हो चुकी थी।

"नहीं! मेरी समझ में तुम्हारी धारणा ठीक नहीं है।" निकोलाई निकोलायेविच ने झटके से ऐनक का डिब्बा बंद करते हुए कहा। हो सकता है कि सिद्धान्त के तौर पर झरोखों की यह प्रणाली हर कमरे में एक सा तापमान रखने में समर्थ हो, पर व्यावहारिक रूप में... क्या तुमने इसपर ध्यान दिया है कि..."

"निकोलाई निकोलायेविच, आप वहां क्या करने गये थे?" मोटा लड़का साहस बटोरकर पूछ ही तो बैठा।

निकोलाई निकोलायेविच उसकी ओर देखकर मुस्करा उठे और बोले—

"कहावत बहुत पुरानी है कि—आदमी चाहे जितना बूढ़ा क्यों न हो जाय बचपन का जोश कभी उबाल खाता ही है। वही हाल मेरा भी हुआ।"

तीनों लड़के एक स्वर में हंस पड़े। ऐसा प्रतीत होता था कि वे उस्ताद के इस उत्तर से संतुष्ट थे।

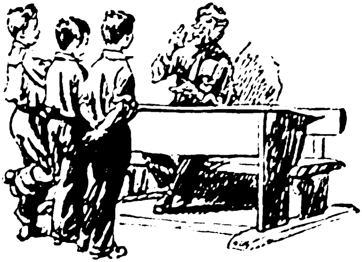

'सामन्त'

स्कूल के वाचनालय की चमचमाती हुई विशाल खिड़कियां एकदम खुली थीं। हल्की हवा का झोंका नम मिट्टी की सोंधी सुगंध बिखेर देता और गमलों में लगे फूल, पत्तियों को गुदगुदा जाता। गमलों के ये झाड़ जाड़े में मुरझाकर निर्जीव हो गये थे, पर अब इनमें मानो नयी जिंदगी आ गयी थी।

छात्र-कौंसिल के तीन सदस्य एक मेज पर बैठे थे। उनपर सूर्य की सुहावनी किरणें पड़ रही थीं। दूसरी मेज पर अपराधी दीमा रोजकोव और अभियोगी नूस्या वेलेंकाया बैठे थे। दोनों ही दुबले-पतले, नाटे और चपटी नाक वाले थे। उनके चेहरों पर रूखापन था। वे दोनों आमने-सामने बैठे अदालत की कार्यवाही शुरू होने का इन्तजार कर रहे थे। नूस्या के माथे पर चोट का बड़ा सा बैंगनी निशान दिखाई दे रहा था।

वसंत का यह सुहावना मौसम छात्र-कौंसिल के सदस्यों पर अपना प्रभाव जमा रहा था। सभी मस्त नजर आ रहे थे। भारी-भरकम साशा ग्रिल्गीना ने धूप की ओर

तिरछी नज़र से देखा। सांवरी-सलोनी ज़ोया कोलस्सोवा ने बांकी अदा से कंधे सिकोड़े और कुनमुनाकर हवा के उस झोंके का विरोध किया जो कानों में पीछे से फुसफुसाकर सिहरन पैदा कर रहा था। कौंसिल का चेयरमैन जेन्या ग्लुखानस्की धीरे से वाल्ट्ज़ की मधुर धुन सीटी बजाकर निकाल रहा था। चश्मे के पीछे उसकी बंद आंखें दिखाई देतीं, उसकी लम्बी टेढ़ी नाक झूमती और गोले और आठ का अंक बनाती हुई ऐसे भाव व्यक्त करती जान पड़ती कि वह भी ताल देकर धुन का साथ दे रही हो।

झटके के साथ दरवाज़ा खुला और ओल्या भीतर आ धमकी। उसे देखते ही चेयरमैन ने विचित्र मुद्रा बना ली। उसने सीटी की धुन गुनगुनाना बिल्कुल बंद कर दिया। वह तनकर बैठ गया और उसके होंठ भिंच गये।

ओल्या कुर्सी खींचकर बैठ गयी, उसने अपने ब्लाउज़ की आस्तीनें ठीक कीं और घुंघराले भूरे बाल संवारकर मुस्करायी तथा बोल उठी—

"आह! बाहर कितना प्यारा मौसम है! बस कुछ न पूछो इतना भला है कि मैं बयान नहीं कर सकती!"

ओल्या ने चुभती नज़र चेयरमैन जेन्या की ओर फेंकी। वह खम्भे की तरह सीधा तना साइन-बोर्ड की ओर नज़र गड़ाये था, जिसपर लिखा था: 'कमरे से जाते समय बत्तियां बंद कर देना'।

"मुझे अफ़सोस तो इसी बात का है कि आज मौसम बड़ा सुहावना है," उसने कहा "अगर मौसम खराब होता तो हमें इतनी देर ओल्या स्मिर्नोवा का इन्तज़ार न करना पड़ता।

इतना सुनकर ओल्या को ताव आ गया, वह बोली—

"ज़रा तो शर्म खाओ, क्या तुमने मुझे घर से आज की कार्यवाही की सू लाने नहीं भेजा था?"

उत्तर देने से पहले चेयरमैन ने ज़ोर से जम्भाई ली, फिर उसने कहा—

"मुझे क्या पता था कि तुम हमें इतनी देर इन्तज़ार करवाओगी और मौसम बहार के चक्कर में हमें भूल बैठोगी।"

"तो यह मतलब है तुम्हारा!" ओल्या क्रोध में उछल पड़ी, उसका चे अंगारे की तरह सुर्ख़ हो गया और उसकी नीली आंखें गोल हो गयी थीं। "कि ओछे हो तुम! मैं पूरे रास्ते भागती हुई आयी हूं और तुम मुझे..."

"अरे बंद भी करोगे बकवास तुम दोनों!" ग्रिश्मीना चिल्ला पड़ा।

"मैं न मानूंगी! तंग आ गयी हूं मैं इसकी छेड़-छाड़ से! और देखो न कैसा बात का बतंगड़ बना रहा है! आपसी मनमुटाव की आड़ में काम-काज में ऐब निकालना कहां तक जायज है?"

ओल्या बैठ गयी और रूमाल का कोना दांतों के बीच दबाने लगी।

"खैर ठीक है, आंखें लाल-पीली करके ताव दिखाना भी एक अच्छी ढाल है, इसमें सारे ऐब ढक-मुंद जाते हैं।" चेयरमैन इतना कहकर चुप हो गया।

कुछ देर तक कौंसिल के सदस्य चुप रहे और अप्रसन्न भाव से 'अभियुक्त' और 'अभियोगी' की ओर देखते रहे। दोनों परेशान और चिंतित अपनी कुर्सियों पर टेक लगाये थे।

चेयरमैन ने अपने काले बाल झटके और उदास भाव से घोषणा की—

"दोस्तो, कौंसिल के काफ़ी सदस्य गैरहाज़िर हैं। कुछ बीमार हैं और कुछ शतरंज की प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं। मैं समझता हूं कि कौंसिल के हम चार सदस्य अभियुक्त के चाल-चलन पर अपना मत देने के लिए काफ़ी हैं।"

चेयरमैन सीधा खड़ा था, उसने सर घुमाकर चमकते हुए ऐनक से झांकती आंखें दीमा पर जमा दीं।

"रोजकोव, बोलो तुम्हें इसके बारे में क्या कहना है? क्या यह सच है कि जब वेलेंकाया छमाही के बाद पहली बार स्कूल आयी थी तो तुमने उसकी चोटी का सिरा स्याही से भिगो दिया था?"

दीमा सिर झुकाये, कुर्सी का सिरा पकड़े बैठा था। उसने बड़े धीमे स्वर में कहा—

"हां, मैं स्वीकार करता हूं।"

"और तुमने जाड़े की छुट्टियों में सड़क पर चलते समय एक बार उसकी आंख पर बर्फ़ का ढेला चलाकर मारा था, यह भी ठीक है न?"

"हां ठीक है।"

"अच्छा! एक बार तुम ज़िंदा चूहा भी स्कूल लाये थे?"

दीमा चुप था। एक मक्खी उड़कर उसके घुटने पर आ बैठी। उसने उसे पकड़ लिया और देखने-भालने लगा।

"रोजकोव, मैं तुम्हीं से पूछ रहा हूं!"

"हां मैंने ऐसा किया था।" दीमा फुसफुसाया और मक्खी की एक टांग पकड़कर खींचने लगा।

"और क्या तुमने कैंटीन में वह चूहा वेलेंकाया की गर्दन पर नहीं छोड़ा था?"

दीमा फिर चुप हो गया। जोया ने पेंसिल से मेज़ खटखटायी और कहने लगी—

"रोजकोव! तुम्हारा चित्त ठिकाने नहीं है। तुम यह मक्खी छोड़कर सवाल का जवाब दो!"

दीमा ने भौंहें चढ़ाकर जोया की ओर देखा और बड़बड़ा उठा—

"गर्दन पर नहीं, पीठ पर छोड़ा था।"

"खैर ठीक है।" चेयरमैन कहता रहा, "मुझे विश्वास है कि हम लोगों ने पहले ही आगाह कर दिया था कि स्कूल में नये विद्यार्थियों से छेड़-छाड़ कतई बर्दाश्त न की जायेगी और तुम्हें इस बात की भी चेतावनी मिल चुकी है कि यदि तुम अपना रवैया न सुधारोगे तो उसका परिणाम भोगना पड़ेगा। लेकिन तुमने अपना रवैया सुधारने के बजाय अपनी हरकतें जारी रखीं। तुमने वेलेंकाया को गिरा दिया और गिरने के कारण उसके माथे पर चोट आ गयी है। क्यों मैं गलत तो नहीं कह रहा हूं?"

दीमा उद्विग्न हो उठा, वह नाक और मुंह से जोर की सांस लेने लगा। नूस्या सीधी खड़ी हुई और कांपती हुई धीमी आवाज़ में कहने लगी—

"इसके अलावा तीन दिन पहले की बात है कि अपनी गुलेल से इसने ऐसा निशाना लगाया कि मेरे कान पर खून छलछला आया।"

वह फिर कठोरता दिखाती बैठ गयी, उसके भावों में कोई परिवर्तन न दिखाई देता था। जेन्या भी बैठ गया और उसने नीचे पैर फैलाकर पीछे कुर्सी का सहारा ले लिया।

"मैं समझता हूं कि सारी बात स्पष्ट है, अब कौंसिल के सदस्य अपनी राय ज़ाहिर करें कि क्या निर्णय करना चाहिये।"

कौंसिल के सदस्य चुप रहे और न 'अभियुक्त' न 'अभियोगी' ने ही कुछ कहा-सुना। बाहर टेलीग्राफ़ के तार पर दो अबाबीलें आ बैठीं। वे तार पर फुदककर चलतीं और गर्दनें ऊंची करके खिड़की के अंदर झांकने की कोशिश करतीं।

"बस, निकालकर बाहर करो दीमा को!" ग्रित्सीना बड़बड़ाया।

ज़ोया ने उंगली उठाते हुए कहा—

"नहीं साथियो! बाहर निकालना तो आसान है। अवश्य ही हम कोशिश कर सकते हैं कि दीमा को किसी दूसरे स्कूल में भेज दिया जाय, लेकिन इससे समस्या का अंत न हो सकेगा। हम सयाने विद्यार्थियों के बीच कभी ऐसी घटना नहीं हुई कि कोई लड़का किसी लड़की को मारे। लेकिन पांचवें दर्जे के विद्यार्थियों की यह आम शिकायत है। लड़के लड़कियों को अपने से हीन और नीच समझते हैं तथा उनके साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते। साथियो, मेरे विचार से ऐसे व्यवहार उन दिनों की याद दिलाते हैं जब कि लोग स्त्रियों को गुलाम समझते थे।"

"ओह! तिल का ताड़ बना दिया!" ग्रित्सीना बोल उठा।

"साथियो! मेरी राय है कि हम रोजकोव का मुकदमा दोस्तों की अदालत में पेश करें। हम इस घटना का अधिक से अधिक प्रचार करें और स्कूल में मनमानी करनेवाले सामंतों के इस रवैये को सदा के लिए खत्म कर दें।"

ज़ोया बैठ गयी। 'सामंत' दीमा अपने निचले होंठ चबा रहा था। नूस्या उसकी ओर देख रही थी।

"ग्रित्सीना उसे स्कूल से निकालने की सलाह देता है और ज़ोया मामला दोस्तों की अदालत में ले जाने की बात कह रही है।" चेयरमैन ने कहा, "स्मिर्नोवा! तुम्हारी क्या राय है?"

"यदि हम उसे इतने ज़रा से अपराध के लिए स्कूल से निकाले जाने की सज़ा देना चाहते हैं तो तुम्हें न जाने कितने पहले स्कूल से निकाला जाना चाहिये था। याद है तुम्हें छठवें दर्जे में तुम मुझे कितना सताया करते थे?" ओल्या ने रूमाल का कोना चबाते हुए बड़े सहज भाव में कहा।

चेयरमैन भड़क उठा। क्रोध में बोलते ही उसके काले बाल चश्मे पर झुक आये।

"देखो स्मिर्नोवा! हम रोजकोव की चर्चा कर रहे हैं... मेरा ख्याल है कि तुम यह बात अच्छी तरह समझती हो। मेरी समझ में सब के सामने सारी बातें स्पष्ट हैं। रोजकोव को समय समय पर चेतावनी भी दी जा चुकी है। हम स्कूल में इस तरह का हंगामा बर्दाश्त नहीं कर सकते।"

"हंगामे से तुम्हारा क्या अभिप्राय है?" एक मधा हुआ सुरीला स्वर गूंज गया, "इसमें तो हंगामे की कोई बात नज़र नहीं आती।"

सब की निगाहें उस ओर घूम गयीं। सूर्य की तिरछी किरणें वाचनालय को दो भागों में बांटती जान पड़ती थीं। इस नीले विभाजन के पीछे दूर कोने में हल्के पीले रंग के बालों वाली, करीब तेरह वर्ष की लड़की बैठी थी। वह मेज पर झुकी हुई थी, उसकी लाल टाई के सिरे कंधों पर पड़े थे। वह दीवारी अखबार के लिए शीर्षक लिख रही थी।

"क्या? तुमने क्या कहा?" जेन्या ने उससे पूछा।

"इसमें तो हंगामे की कोई बात मुझे नज़र नहीं आती।"

"तब तुम्हारे मत से यह सब क्या है?"

लड़की ने सिर झुकाये हुए उत्तर दिया—

"सच बात तो यह है कि वह हमेशा नूस्या के लिए तड़पा करता है।"

"क्या कहा तुमने?" ग्रित्सीना ने उसकी ओर देखकर पूछा।

"मैं दोहराती हूं कि वह नूस्या के लिए तड़पता रहता है, वह उसे प्यार करता है।"

चेयरमैन ने चश्मा उतारकर मेज़ पर रख दिया। उस समय वह अदालत के सरपंच की हैसियत से न बोल रहा था।

"देखो! तुम बिल्कुल बेसिर-पैर की बातें कर रही हो! मान लो यदि वह प्यार ही करता है तो इस तरह उसे तंग क्यों करता है?"

"भाई, हर प्रेमी की हालत ऐसी ही होती है। मुझे याद है कि जब अन्तोश्किन मेरे पीछे दीवाना था तब उसने मार मारकर मेरा कचूमर निकाल दिया था, पर मैंने किसी से उफ़ तक न किया।"

"कैसी विचित्र बात है!" जेन्या बड़बड़ाया और हाथ पीछे करके कमरे में टहलने लगा।

दीमा फुर्ती से खड़ा हो गया और अपनी तीखी भूरी नज़रें कमरे में चारों ओर दौड़ाने लगा। क्रोध से वह तमतमा उठा था।

"मैं उसके पीछे दीवाना नहीं हूं!" वह उत्तेजना में चिल्ला उठा।

नूस्या ने पलकें नीची कर लीं, उसके चेहरे पर भी वैसी ही लाली दौड़ गयी जैसी कि दीमा के तमतमाये चेहरे पर थी।

"वह झूठ बोल रही है! मैं किसी पर दीवाना नहीं हूं!" दीमा ने पहले से अधिक उत्तेजित होते हुए दोहराया।

चेयरमैन दीमा के सामने आ खड़ा हुआ और कहने लगा–

"मैं कहता हूं... समझे कि नहीं ... तुम दोनों थोड़ी देर के लिए कमरे के बाहर चले जाओ।"

दीमा तीर की तरह कमरे के बाहर निकल गया। नूस्या भी अपनी दुबली-पतली टांगें बढ़ाती उसके पीछे पीछे दौड़ गयी। चेयरमैन जेन्या मेज़ के पास पड़ी अपनी कुर्सी पर फिर बैठ गया।

"अजीब समस्या है।" वह हल्के पीले बालों वाली लड़की की ओर मुड़ा और पूछने लगा, "सुनती हो तुम! क्या नाम है तुम्हारा? क्या तुम्हें पक्का पता है कि वह... उसपर दीवाना है?"

"ओह ओह! यह भी कोई कहने-सुनने की बात है!" लड़की ने कहा, "सारा दर्जा जानता है इस बात को।"

"अच्छा। ठीक है, ठीक है।" जेन्या अपनी नाक सहलाने लगा। "हम इस मामले का क्या फ़ैसला करें? ऐं? अब तो मामला ही कुछ और है। यदि साधारण झगड़ा-झंझट के कारण उसने उसे सताया होता तो हम दीमा की अच्छी मरम्मत कर सकते थे। लेकिन ..."

"हम इस झगड़े में क्यों पड़ें कि वह नूस्या को प्यार करता है या नहीं!" ग्रित्सीना ने कहा, "दरअसल समस्या यह है कि वह उसे सताया करता है। क्या वह ऐसा नहीं करता?"

"नहीं ग्रित्सीना! तुम मामले को गहराई से नहीं देख रहे हो, तुमने केवल उसके व्यावहारिक पहलू पर दृष्टि डाली है। आखिरकार वह इनसान है। और साथियो! शायद वह दिल-जला दीवाना है।" ज़ोया ने बड़ी गंभीरता से कहा।

ओल्या ने आखिरकार रूमाल का कोना चबाना छोड़ दिया, उसने रूमाल को मोड़-माड़कर गेंद की तरह कर लिया और वह बिना आंखें ऊपर उठाये धीरे से बोल उठी–

"मैं सिर्फ़ इतना जानना चाहती हूं कि... ऐसा होता है कि यदि तुम किसी को पसंद नहीं करते और उसे सताते हो तो तुम सजा के हकदार हो। पर यदि तुम किसी को प्यार करते हो तो यदि तुम चाहो तो उसे तंग कर सकते हो और तुमपर रहम भी किया जायेगा। है न, आश्चर्य की बात?"

चेयरमैन जेन्या कुछ झेंप सा गया।

"इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं, सारी बातों का आधार मनोवैज्ञानिक प्रकृति है।"

"दिलचस्प बात है, तुम्हारा मतलब किस प्रकार के मनोविज्ञान से है?"

"मेरा अभिप्राय ऐसी स्थिति से है जब कि कोई लड़का किसी लड़की को प्यार करता है पर उससे प्रकट नहीं कर पाता तब वह..."

वह हकलाकर कह रहा था कि ज़ोया ने उसकी सहायता की—

"बात यह है कि वह अपने दिल की बात उससे नहीं कह पाता, पर उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना चाहता है, समझ गयीं न?"

"और इसी लिए वह उसे मारता-पीटता है?"

"हां। इस मार-पीट में हंगामे की भावना नहीं है, यह तो उसे आकृष्ट करने का एक साधन है।"

ओल्या उठ खड़ी हुई, उसने जेन्या पर तीखी नजर डाली।

"साथी चेयरमैन, क्या मैं भी कुछ कह सकती हूं?"

"हां-हां, कहो न, तुम्हें रोकता कौन है?"

"मैं कहती हूं, रोजकोव ही केवल ऐसा नहीं है हमारे बीच। उसी की तरह के कई लोग हैं। छोटे दर्जे के विद्यार्थियों की कौन कहे, सयाने विद्यार्थियों में भी ऐसे लोग पड़े हैं। मेरे मत से रोजकोव और उसकी कोटि के विद्यार्थियों को दोस्तों की अदालत में पेश करना चाहिये। मैं ज़ोया के इस विचार से सहमत हूं, क्योंकि यह बड़ी ही लज्जाजनक बात है। इसमें किसी का क्या दोष है यदि रोजकोव जैसे लोगों का अहम इन्हें मनुष्योचित व्यवहार नहीं करने देता। यदि मेरी चले तो मैं ऐसे लोगों का हुक्का-पानी बंद कर दूं। ये लोग समझते होंगे कि इनकी हरकतों पर किसी की नजर ही नहीं पड़ती। जेन्या का यही विचार गलत है। अभी इस लड़की ने कहा

है कि रोजकोव का हाल सभी लोगों को मालूम है। मेरी समझ में अन्य लोगों के बारे में भी लोग जानते होंगे। भाई, ऐसी संगत से तो हम सब बाज आये। हमें ऐसे लोगों से तो दूर ही से नमस्कार करना चाहिये . . ."

कमरे में फिर खामोशी छा गयी। चेयरमैन का चेहरा छांह में था, पर सूर्य की किरणें उसके कानों पर पड़ रही थीं, कान बिल्कुल सुर्ख हो गये थे।

"मैं तुम्हारी बेतुकी बातों का कुछ भी मतलब नहीं समझ सका," वह बड़बड़ाया, "बिना सोचे-समझे बेसिर-पैर की बातें करना तो केवल कोरी बकवास ही है।"

"मैं तो जानती ही हूं मैं क्या बोल रही हूं, तुम भी सब कुछ समझ जाओगे।" ओल्या ने कहा और फिर रूमाल का कोना चबाने लगी।

"तुम्हारी बातों में व्यापक उदाहरणों के अलावा और है क्या? आम रवैये की चर्चा करने से भला इस समय क्या फ़ायदा? हमें तो केवल रोजकोव के आचरण के विषय में निर्णय करना है, यही चर्चा का उपयुक्त विषय है।"

"मेरी समझ में तो अनुशासन के कठोर तरीकों का प्रयोग नहीं करना चाहिये, लेकिन इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि हम ऐसा वातावरण पैदा कर दें ताकि मित्रता के संबंध कायम रख सकें।" ज़ोया ने कहा।

"जरूर ऐसा वातावरण पैदा करो।" ग्रित्सीना ने कंधे सिकोड़कर कहा।

"सब से ठोस कदम तो यह है कि रोजकोव और नूस्या को कोई ऐसा काम दिया जाय जिसमें उन्हें एक साथ काम करने का मौका मिले।"

"हां, यह सुझाव ठीक है।" चेयरमैन ने कहा।

"यह बेकार है।" ओल्या बोली।

"क्यों बेकार है? एक साथ काम करने में एक दूसरे के निकट आने का मौका मिलता है।"

"लेकिन मैं जानती हूं कि यह बिल्कुल बेकार है!"

चेयरमैन ओल्या की ओर मुखातिब हुआ और चिल्लाकर कहने लगा—

"देखो स्मिर्नोवा! घुमा-फिराकर बात करना बंद करो! साफ़ साफ़ कहो कि तुम क्या कहना चाहती हो?"

"वही तो मैं कहने की कोशिश कर रही हूं।"

"स्पष्ट बताओ कि उन्हें कौन सा काम सौंपा जाय?"

ग्रिश्मीना ने अंगड़ाई ली और कहने लगा—

"उन्हें मई दिवस के नारे लिखने का काम सौंप दो।"

"नहीं, यह ठीक नहीं।" ज़ोया ने कहा, "काम ऐसा होना चाहिये जिसमें कि वे दिलचस्पी ले सकें और उन्हें प्रोत्साहन मिले।"

वे सभी थोड़ी देर तक चुपचाप सोचते रहे। चेयरमैन नाखून कुतरने में व्यस्त था। ग्रिश्मीना रोशनाई से सने अपने लम्बे हाथों की ओर निगाहें गड़ाये था। ओल्या उत्तेजित भाव से सामने की ओर घूर रही थी और उसके होंठों में रूमाल दबा था। दो-तीन मिनट यों ही गुज़र गये।

"मैं इसपर दीवाना नहीं हूं!" दरवाज़े के पीछे से दीमा की आवाज़ सुनाई दी।

तड़ातड़ एक-दो-तीन तमाचों की आवाज़ सुनाई दी और फिर हल्की सी चीख़। कौंसिल के सदस्य हड़बड़ाकर उठ खड़े हुए। कुर्सी ज़ोर का शब्द करती फ़र्श पर लुढ़क गयी।

"रोजकोव! तुमने फिर वही हरकत की!" जेन्या ने चिल्लाकर कहा, "आओ तो फ़ौरन मेरे पास!"

दरवाज़े के पीछे अब बिल्कुल शांति थी।

"मैं कहता हूं भीतर आ जाओ!"

दरवाज़ा खुला और नूस्या बाल बिखेरे, तमतमाती हुई अंदर आ पहुंची। वह अपने सिर का पिछला भाग सहला रही थी।

"रोजकोव कहां है?"

"वह चला गया।" नूस्या ने धीरे से कहा, "वही तो था जो भाग खड़ा हुआ है।"

"क्या उसने तुम्हें फिर पीटा था?"

नूस्या ने चुपके से हाथ नीचे कर लिया और सिर सहलाना बंद कर दिया।

"मैं पूछता हूं क्या उसने तुम्हें फिर मारा था?"

नूस्या थोड़ी देर सोचती रही, फिर उसने सिर झुका लिया और बोल उठी—

"उसने मुझे नहीं मारा है।"

...सब लड़के जा चुके थे। वाचनालय खाली हो गया था। सूने कमरे में केवल वह लड़की दीवारी अखबार पर झुकी सर खपा रही थी। वह उठी और खिड़की के निकट जा पहुंची तथा चौखट पर चढ़ गयी। उसने सूनी गली में झांककर देखा। गली में धूप फैली हुई थी। लड़की दोनों पैर झुलाती धीरे से किसी गीत की धुन गुनगुनाने लगी। आस-पास के घरों की छतें बिल्कुल सूखी थीं, पर सड़क जहां नीले, गुलाबी और भूरे खरंजे जड़े थे, वहां गीली और स्याह दिखाई देती थी।

ज़ोया और ग्रित्सीना साथ साथ इमारत से बाहर निकले। उन्होंने आपस में अभिवादन किया और एक-दूसरे से विदा हो गये।

उनके बाद नूस्या दौड़ती हुई बाहर आयी और प्रसन्नता से छलांग भरती हुई पटरी पर दौड़ गयी।

ओल्या अपना भूरा कोट पहने लम्बे और दुबले चेयरमैन के साथ बाहर आयी। चेयरमैन के हाथों में दो थैले थे। वे थोड़ी देर रुके और बातें करते रहे, फिर वर्षा के फुहार से धुली पटरी पर चलने लगे। वे सतर्क थे कि कहीं सूखते हुए गड्ढों में उनका पैर न चला जाय। दोनों थैले चेयरमैन की लम्बी टांगों को बारी बारी थपकियां देते रहते।

लड़की खिड़की के चौखट से उतर आयी और अपने काम में लग गयी। वह अपनी लाल टाई का छोर अंगुली में उलझाती, उदासी में डूब गयी और नष्ट-भ्रष्ट शीर्षक को ताकने लगी। शीर्षक में लिखा था: 'उम काम—पढ़ने में मन लगाना'।

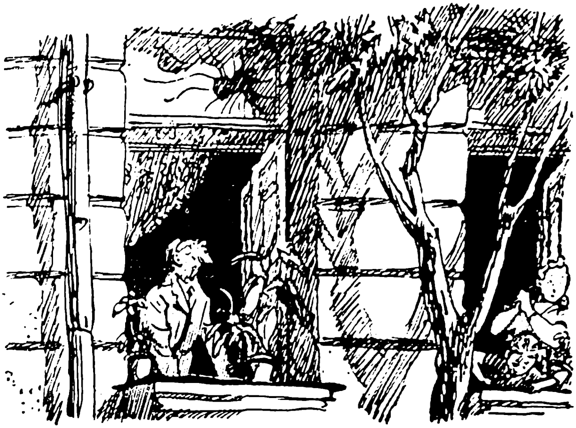

तूफ़ानी टोली

पट-कथा

खट – ख़न-खन-खन ! ! !

खिड़की के ऊपरी कांच से गेंद टकराता है, शीशा चूर चूर होकर गिर पड़ता है और गेंद फिर अहाते में आ गिरता है।

नीचे, अहाते में, ज़ोर-शोर से फ़ुटबाल मैच चल रहा है। खेल सहसा बंद होता है और खिलाड़ी भयभीत टूटी खिड़की देखने लगते हैं।

"आउट!" सात वर्षीय बालक-रेफ़री स्त्योपा चिल्लाता है।

खिलाड़ी, रेफ़री तथा अन्य बालक सब के सब भागते हैं।

वृद्ध प्रोफ़ेसर शापोशनिकोव डेस्क पर से स्लैड-रूल लेकर खड़े हो जाते हैं और टूटी खिड़की की ओर देखने लगते हैं।

उनकी पत्नी येलेना द्मीत्रियेवना और भतीजी गाल्या एक के बाद एक दौड़ती हुई कमरे में आती हैं।

"क्या हुआ? मीशा!" प्रोफ़ेसर की पत्नी पूछती है।

"प्यारी येलेना! इस बार शैतानों ने दाहिनी ओर का शीशा तोड़ दिया।"

येलेना द्मीत्रियेवना और गाल्या दौड़कर खिड़की की ओर जाती हैं। नीचे शोर सुनाई देता है–

"अहा-हा! गो-ओ-ल! अरे गोल लेना भी भूल गये!"

स्त्योपा अहाते में लौटता है और गोल की सीमा निर्धारित करने वाली दोनों टोपियां उठा लेता है तथा फिर दौड़ने लगता है।

"मेरा भी यही ख्याल है कि फिर बारह नम्बर घर के उसी शैतान लड़के ने ऊधम जोता होगा।" येलेना द्मीत्रियेवना बोल उठती है।

वह कमरे के बाहर जाती है और गाल्या खिड़की से झांकने लगती है।

"अरे! ये लोग अपने को खिलाड़ी कहते हैं! देखा आपने, जब देखो तब 'आउट'। इसके सिवाय इन्हें क्या आता है?" गाल्या कहती है।

"गाल्या! मेरी समझ में नहीं आता इसे हम कहें क्या, बस कुछ न पूछो, नाक में दम है इसके कारण, काम करना मुसीबत हो गया है।" प्रोफ़ेसर कह उठते हैं।

येलेना द्मीत्रियेवना सामने के घर का दरवाज़ा खटखटाती है। तान्या दरवाज़ा खोलती है–ग्यारह वर्ष की लड़की। तान्या अपने हाथ में बड़ा सा कलछुल लिये है।

"क्या तुम्हारे पापा और मामा इस समय घर पर हैं?" येलेना द्मीत्रियेवना हर शब्द पर ज़ोर देकर कहती है।

"पापा किसी काम से गये हैं, मामा छुट्टी बिताने और बहन काम पर गयी हैं।"

"अच्छा देखो! उन शैतानों ने फिर खिड़की का शीशा चूर चूर कर दिया है।"

"मेरे स्त्योपा ने ऐसा न किया होगा, वह तो खेल का रेफ़री है।"

"खेल तो सभी साथ रहे हैं, इसलिए सब के सब अपराधी हैं। इस समय तुम्हीं घर में सयानी हो, अतः मैं तुम्हीं को उलाहना दूंगी कि आइंदा ऐसी हरकत न हो। मैं यही अन्य लड़कों के भी माता-पिता से कहना चाहती हूं। देखो न, यह कितनी ज्यादती है!"

लड़कों के कमरे में येलेना द्मीत्रियेवना का धीमा स्वर सुनाई देता है। बोरीस पलथी मारे सूटकेस के सामने बैठा है। वह सूटकेस से सामान निकाल रहा है और ल्योवा कमरे में टहल रहा है। बोरीस हृष्ट-पुष्ट और फुर्तीला है। ल्योवा दुर्बल, पर उसकी मुद्रा बड़ी ही गंभीर तथा शांत है।

"चलो अच्छा हुआ कि तुम आ गये। तुमने कैसे ताड़ लिया कि मैं कैम्प से लौटा हूं?" बोरीस कहता है।

"अरे यह भी कोई बड़ी बात है, हमेशा तान्या तीन रोटियां दूकान से लाती थी, पर आज तीन की जगह चार थीं। मैंने झट अनुमान लगा लिया कि तुम आ गये हो।"

"भाई पक्के जासूस हो तुम।" बोरीस सूटकेस से एक मोटी कापी निकालता हुआ पूछता है, "अच्छा बताओ तो नगर पायोनियर कैम्प खुल गया कि नहीं?"

"हां, दो हफ़्ते पहिले खुला है।"

"अच्छा, तो सुनो।" बोरीस अभिमान से कहना आरंभ करता है, "तुम्हारी टोली का नायक बेकार मक्खी नहीं मारता रहा है। मैंने ऐसी योजना सोच रखी है कि हमारी टोली न केवल अपने दल में सब से अच्छी निकलेगी बल्कि नगर भर में बेजोड़ होगी।"

"अच्छा, ऐसी बात है?" ल्योवा बड़बड़ाया।

"अच्छा बताओ, तुम लोग योजना के अनुसार कैसे काम कर रहे हो?"

"कैसी योजना?"

"क्यों! टोली के लिए क्या कोई कार्यक्रम नहीं बना है? हम लोगों ने एक योजना बसंत ऋतु में ही बनायी थी।" बोरीस कापी में देखने लगता है। "उदाहरण के लिए इसी को ले लो, 'नगर पायोनियर कैम्प के लिए टेरारियम का निर्माण।' तुम लोगों ने मेंढक और भेक पकड़े कि नहीं?"

"हां, पकड़े क्यों नहीं।"

"तो वे हैं कहां?"

"सब के सब मर गये।"

"कैसे मर गये?"

"मीशा उन्हें खुराक देना भूल गया, इसी लिए भूख से तड़पकर वे खतम हो गये।"

"अच्छा तो फिर तुम सब के सब पायोनियर कैम्प में करते क्या हो?"

"मैं स्वयं कोई खास काम नहीं करता पर आजकल मैं एक बड़े पेचीदे खाके में उलझा हुआ हूं।"

"तुम्हारे पास हमेशा कोई न कोई पेचीदा खाका रहता है। अच्छा टोली के अन्य लड़कों की क्या दिनचर्या है?"

"अन्य लड़कों की..."

तान्या कमरे में प्रवेश करती है। रास्ते में पड़ी कुर्सियां एक ओर ढकेलती है। कुर्सियां हटाने का स्वर कमरे में गूंज जाता है। तान्या हाथ का कलछुल मेज पर जोर से फेंक देती है।

"तुमपर आज कौन सा भूत सवार है?"

"कुछ नहीं, बस मैं तो तंग आ गयी हूं जिंदगी से। पापा बाहर हैं, मामा छुट्टियां मना रही हैं, ओल्गा को जरूरी कामों से फ़ुर्सत कहां है। मेरे ही माथे घर-बार और स्त्योपा की देख-रेख है।"

"क्या किया है उसने?"

"तुम्हारी फ़ुटबाल की टीम के साथ खेलकर घर की खिड़कियों के शीशे चकनाचूर किया करता है। इसके अलावा उसके काम ही क्या हैं?"

"मेरी टीम?"

"उस चंडाल-चौकड़ी ने तो घर की पांच खिड़कियां तोड़ डाली हैं। खेल ही खेल में चाची माशा का मुर्गा मार डाला। तीमोशा इम्तहान में फ़ेल हो गया है और शरद् में उसको फिर इम्तहान देना है, लेकिन वह पढ़ने की ओर कतई ध्यान ही नहीं देता। मैं... मैं कहती हूं कि यह सब हंगामा बिल्कुल बंद होना चाहिये। और..."

"ओफ़ तान्या, बंद करो अपनी बकवास! पहली बात तो यह है कि बड़ों से बात करने का यह ढंग नहीं है और दूसरी..." बोरीस ल्योवा की ओर देखते हुए कहता है, "खैर, यह बात तो सही है कि टोली नम्बर दो काबू के बाहर हो गयी है?"

ल्योवा कंधे झटककर कहता है—

"मेरे ख्याल से तो नम्बर दो टोली का कोई नाम-निशान तक नहीं है।"

बोरीस भ्रम में पड़ गया।

"कोई टोली ही नहीं है? तो फिर है क्या?"

"बस केवल एक फ़ुटबाल-टीम जिसका नाम 'तूफ़ान' रखा गया है।" ल्योवा शांतिपूर्वक उत्तर देता है।

कुछ क्षण तक बोरीस, ल्योवा की ओर देखता रहता है और कुछ सोचने लगता है। उसके भावों से पता लगता है कि उसने कोई पक्का इरादा कर लिया है। लम्बे डग बढ़ाता हुआ कमरे के दूसरे किनारे पहुंचता है और कुर्सी पर पड़ी लाल टाई उठाकर चुपचाप पहन लेता है।

"आओ चलें।" बोरीस, ल्योवा से कहता है, "देखें, तीमोंशा क्या कर रहा है, हम उसी के पास चलेंगे।"

"जरा सोचो तो वह मिलेगा भी घर पर।" तान्या बड़बड़ाती है।

"बड़ों की बातों में दखल मत दिया करो! समझीं कि नहीं?" बोरीस तान्या की ओर मुड़कर कहता है।

"यदि मेरा यकीन नहीं है तो देख लो घर पर, तब तो विश्वास हो जायेगा।" तान्या उन दोनों के पीछे पीछे चलती हुई कहती है।

तीनों तीमोंशा के दरवाज़े के सामने आ खड़े होते हैं। सौम्य व्यक्तित्व की एक अधेड़ महिला दरवाजा खोलती है।

"शुभ प्रभात, वेरा अन्द्रेयेवना, क्या तीमोशा घर पर है?" बोरीस पूछता है।

वह स्त्री पीछे बंद दरवाज़े की ओर बड़ी ही उत्सुकता से देखती है।

"श-श-श-श!"

"क्या पढ़ रहा है?" बोरीस फुसफुसाकर पूछता है।

स्त्री संतोषजनक भाव में मुस्कराकर सर हिला देती है।

"रात को उसके पापा और मैंने उसे काफ़ी समझाया-बुझाया था, मालूम देता है हम लोगों की सीख काम कर गयी है।" वह तीमोंशा के कमरे के पास पहुंचती

है और बहुत धीरे से दरवाज़ा खोलती है। "देखो न सवेरे से अब तक वह डेस्क से हिला तक नहीं है। बच्चो, इस समय जाओ, उसे तंग मत करो, शाम को आना।"

तीनों बाहर निकलकर अहाते में आ जाते हैं।

"कितनी विचित्र बात है। उसकी मां कहती है कि वह कमरे में पढ़ रहा है और मैंने उसे सड़क पर बोलते सुना था।" तान्या कहती है। वह दीवार की कारनिस पर चढ़ जाती है और तोलोगा की खिड़की से झांकने लगती है। "कहा था न मैंने, ज़रा झांककर देखो, तुम्हें मालूम हो जायेगा कि वह कहां है।" वह कह उठती है।

बोरीस और ल्योवा दीवार पर चढ़ते हैं और झांककर देखते हैं कि कितनी चतुराई से पुतला मेज़ के ऊपर झुका दिया गया है ताकि दूर से बैठे हुए लड़के की आकृति लगे।

"आओ चलें।" बोरीस कहता है, "चलो, अनातोली के यहां चलें।"

अनातोली के घर का दरवाज़ा खुला दिखाई देता है। तीनों घुस जाते हैं। गलियारे के अंधेरे छोर से किसी बूढ़ी स्त्री के बड़बड़ाने की आवाज़ सुनाई देती है—

"अच्छा, ऐसे हैं तुम्हारे लच्छन! मैंने अपने लड़के-नातियों को कभी एक हाथ तक नहीं लगाया है, पर मैं देखती हूं कि आज तुम्हारी मुझे झाड़ू से खबर लेनी पड़ेगी! तब तुम्हें पता चल जायेगा कि दूध लेने जाने के लिए तीन घंटे बाहर घूमने का क्या मज़ा मिलता है!"

"देखा तुमने, यह दूसरी मिसाल तुम्हारे सामने पेश है।" तान्या कहती है।

तीनों दबे पांव घर के बाहर आ जाते हैं।

जड़े हुए गोल पत्थरों के फ़र्श पर दूध का बर्तन रखा है। एक कुत्ता उसमें मुंह घुसेड़े अपनी पूंछ ज़ोर से हिलाने में व्यस्त है।

दूध का बर्तन गोल के पास रखा है। गोल की सीमा दो टोपियों से बना दी गयी है। चित्तीदार चेहरे वाला गोल-कीपर अनातोली उत्तेजित होकर उछलता है और झुक जाता है। वह हाथों में गरम दस्ताने पहने है। पीछे की ओर उसकी सफ़ेद कमीज़ निकली हुई है। अहाते में खेल रुक जाने के बाद अब गली में शुरू हो गया है। लड़के

पटरियों पर जमा हैं, कुछ खाली दूकान के ऊंचे मंच पर इकट्ठे हैं। एक लड़की की गोद में साल भर का बच्चा है। वह खिलाड़ियों को घूरता है और सामने खड़े लड़के के सर पर अपने खिलौने से थपथपाता जाता है।

पास ही, 'नगर पायोनियर कैम्प नम्बर सात' का बोर्ड लगा है। यह बोर्ड कैम्प के फाटकों पर लगा है। लाल पताका पर सफ़ेद अक्षर बड़े सुंदर लग रहे हैं।

सहसा लड़कों का शोर गूंज गया। गेंद एक ओर की टोपी पर से होता हुआ दूध के घड़े से टकराते टकराते बचा।

"गोल!" 'धड़ाका' टीम के खिलाड़ी ज़ोर से चिल्ला उठे।

स्त्योपा ने सीटी बजा दी।

"गोल!" वह भी बोल उठा, "चार गोल और शून्य का अनुपात है, 'धड़ाका' टीम जीत रही है।"

चपटी नाक वाला तीमोशा बाल बिखेरे रेफ़री के पास दौड़कर जाता है।

"क्या मतलब है तुम्हारा गोल से?" वह चिल्लाकर कहता है। "देखते भी हो गेंद यहां से होकर गया है।" तीमोशा टोपी की ओर इशारा करता है। "वह गोल-पोस्ट से टकराया है, इसे हम गोल कतई नहीं मानते!"

रेफ़री ढुल-मुल दिखाई देता है। फिर सर खुजलाकर कहता है—

"हां, तुम ठीक कहते हो। मुझसे भूल हो गयी। यह सही है कि गेंद गोल-पोस्ट से टकराया हुआ ही माना जायेगा। अच्छा तो, तीन गोल और शून्य का ही अनुपात रहा।"

काले बालों वाला चिड़चिड़ा कप्तान अपनी टोपी आंखों तक खिसका लेता है और धीरे धीरे रेफ़री की ओर बढ़ने लगता है।

"क्यों, एक गोल यों ही घटा देना चाहते हो? पहले तो तुम्हीं ने गोल की घोषणा की थी और अब बदल गये क्यों, अब लगे कहने कि गेंद केवल गोल-पोस्ट से टकराया है? इसी बात पर यह लो इसकी सज़ा!" कप्तान रेफ़री की गर्दन पर ज़ोर की धौल लगाता है।

रेफ़री के आंसू निकल पड़ते हैं। तीमोशा कप्तान पर झपटता है—

"तुम्हारा इरादा क्या है? तुमने उसे मारा क्यों?"

"यह एक गोल का गड़बड़ किये दे रहा है!"

"देखो, वह रेफ़री है, तुम उसे छोड़ दो नहीं तो..."

तीमोशा कप्तान को ज़ोर का धक्का देता है। कप्तान लड़खड़ाकर गोल-कीपर पर जा गिरता है, दोनों गिरकर दूध का घड़ा लुढ़का देते हैं। कुत्ता टांगों के बीच दुम दबाकर भागता है और सभी खिलाड़ी आपस में भिड़ जाते हैं।

तीमोशा और गोल-कीपर पराजित कप्तान पर टांगें फैलाये बैठे हैं और घूंसों का वार करते हुए कहते हैं–

"यह लो रेफ़री को मारने का प्रसाद!"

बोरीस आ जाता है।

"अरे! बंद भी करोगे यह हंगामा तुम लोग!"

तीमोशा मुड़कर देखता है और कप्तान के ऊपर से हट आता है। वह मुस्कराने लगता है। झगड़ा-फ़साद उसी समय बंद हो जाता है। लड़के आश्चर्य से चिल्ला उठते हैं, "बोरीस लौट आया है! देखो न वह यहीं आ गया है!" सब के सब बोरीस को घेर लेते हैं। लड़के उत्तेजना में पागल जान पड़ते हैं। उनके बाल बिखरे हुए, सारे शरीर पर गर्द जमा तथा वे थके थके से लगते हैं। गोल-कीपर एक पैर से खड़ा होकर हाथ से दूसरे पैर के चोट खाये अंगूठे को सहलाने लगता है।

"अजब हालत है तुम लोगों की!" बोरीस के मुंह से बरबस निकल पड़ा।

"यह गेंद तो रेफ़री का ही था।" कोई लड़का खिसियाहट के स्वर में बोल उठा।

"क्या ही अजब हुलिया है तुम सब का!" बोरीस ने दोहराया।

तीमोशा को उसका कथन अच्छा न लगा और वह झट बोल उठा–

"तुम्हें तो इस प्रकार न कहना चाहिये–खेलकूद तो लाभदायक है, यह तुम भी मानते हो।"

बोरीस तीमोशा के बिल्कुल निकट आ जाता है और उसकी नज़रों से नज़रें भिड़ाकर देखते हुए धीरे से कहता है–

"और जब वह पुतला तुम्हारे लिए व्याकरण का पाठ याद करता है तब वह भी तुम्हारे लिए लाभदायक होगा क्यों, ठीक है न?"

तीमोशा झटपट आंखे मिचकाने लगता है।

"और वे टूटी हुई खिड़कियां तथा चाची माशा का वह मरा हुआ मुर्गा भी तुम्हारे लिए लाभदायक है क्यों है न?" बोरीस इस बार तनिक ज़ोर से कहता है।

तीमोशा अपने साथियों की आड़ में छिप जाता है और किसी साथी से फुसफुसाकर कह उठता है –

"देखा तुमने, अभी आये देर नहीं हुई, पर हर बात की सूचना उसे है।"

बोरीस तनकर खड़ा होता है।

"यहां आओ, तीमोशा!" अधिकारपूर्ण ढंग से आदेश करते हुए बोरीस ने कहा।

तीमोशा झट आगे आता है और आज्ञाकारी सैनिक की भांति तनकर खड़ा हो जाता है।

"हां, क्या हुक्म?" पूछता है।

"टोली लाइन में खड़ी करो!"

"अच्छा, हां! तुम लोग सब एक कतार में आ जाओ!"

पूरी टोली कतार में खड़ी हो जाती है और बोरीस उसका मुआयना करता है।

"नगर पायोनियर कैम्प की ओर चल दो!"

टोली फुर्ती से फाटकों की ओर मार्च करने लगती है। गोल-कीपर लंगड़ाता हुआ सब के पीछे चलने लगता है।

"अरे वाह! चल कहां दिये, खेल का क्या होगा?" 'धड़ाका' टीम का कप्तान चिल्लाकर पूछने लगता है।

"अब तुम लोग स्वयं ही खेल लो।" तीमोशा पीछे से चिल्ला उठता है।

"अच्छा, तो तुम लोग डरकर भाग खड़े हुए, है न यही बात?"

"ओहो, भाग खड़े हुए हारकर! देखो तो कितने डरपोक हैं!" लड़के एक स्वर से चिल्लाने लगते हैं।

"तुम लोगों को 'धड़ाका' टीम ने खदेड़कर ही चैन ली, आहा! तुम सब बड़े कायर हो!" लड़के प्रसन्नता से उछलते-कूदते उन्हें चिढ़ाते हैं।

"क्यों कितने गोल हो चुके हैं?" बोरीस पूछता है।

"उन लोगों ने चार गोल हमपर मार दिये हैं और हम अभी एक भी नहीं कर पाये हैं।" तीमोशा उदास होकर कहता है।

बोरीस अपनी चाल धीमी कर देता है और कहता है—

"बड़े शर्म की बात है तुम लोगों के लिए!"

"यह 'धड़ाका' टीम हर टीम को हरा रही है। इनके कप्तान का बड़ा भाई फुटबाल का अच्छा खिलाड़ी है और वही इन लड़कों को ट्रेनिंग देता है।" तीमोशा कहता है।

"कायर! डरपोक! भगोड़े!" दूर खड़े लड़के चिल्लाते हैं।

बोरीस रुककर कुछ सोचने लगता है। वह सहसा आदेश देता है—

"टोली रुक जाय!"

टोली के सभी लड़के रुक जाते हैं।

"नम्बर दो टोली ने खेल में कभी पीठ नहीं दिखायी है, चाहे उसे हार ही क्यों न खानी पड़ी हो! अच्छा, अब तुम लोग पीछे मुड़ो!"

पूरी टीम पीछे मुड़ती है। लंगड़ाकर सब से पीछे चलने वाला गोल-कीपर अब सबसे आगे हो जाता है। पटरी पर खड़े ल्योवा और तान्या बेचैनी से टीम की ओर देखने लगे। एक युवक राहगीर पास ही आकर खड़ा हो जाता है। उसके लच्छेदार काले बाल और घनी भौंहों की छांह में भूरी आंखें हैं। वह उल्लास प्रकट करते हुए कभी लड़कों की ओर और कभी नगर पायोनियर कैम्प के दरवाजों की ओर देखता है। उसने अपने होंठ कसकर भींच लिये। वह मुस्कराहट दबाने की भरसक कोशिश करने लगा।

लड़कों ने फिर अपनी जगह खड़े होकर खेल शुरू कर दिया। दर्शक खुश होकर हुल्लड़ मचाने लगे। गोल-कीपर लंगड़ाता हुआ बोरीस के पास आकर कहता है—

"बोरीस! मेरे पैर की चोट दुख रही है, मैं न खेल सकूंगा।"

"अच्छी बात है, तुम्हारी जगह मैं खेलूंगा। बाकी के सभी लोग अपने-अपने स्थान पर जाकर खड़े हों! रेफ़री, खेल शुरू होने की घोषणा करो!"

स्त्योपा सीटी बजाता है और खेल आरंभ हो जाता है। स्त्योपा सीटी मुंह में दबाये ध्यान से खेल की सरगर्मी देखता है। सहसा कोई उसके मुंह से सीटी छीन लेता है। तान्या गुस्से में लाल-पीली आंखें दिखाती उसके सामने खड़ी हो जाती है।

"चलो यहां से!"

"ज़रा तो ठहरो तान्या, मुझे थोड़ी देर और खेल लेने दो!"

"चलो बस इतना काफ़ी है।" तान्या उसकी बांह पकड़कर कैम्प के दरवाज़ों की ओर खींचती है।

मिलीशिया-मैन आता दिखाई देता है। सीटी की तीखी आवाज़ गूंज जाती है।

"अरे, ओ खिलाड़ियो! क्या तुमने इसे 'दिनामो' स्टेडियम समझ रखा है? हटो यहां से!"

खिलाड़ी और दर्शक दोनों ही इधर-उधर भाग खड़े होते हैं। ल्योवा कंधे झटकता है और वहां से चल देता है। युवक कुछ देर तक खिलाड़ियों को देखता रहता है और फिर कंधे झटकते हुए दृढ़ भाव से कैम्प के उसी फाटक की ओर जिधर तान्या और स्त्योपा गये थे बढ़ जाता है।

पायोनियर कैम्प अच्छा-खासा वगीचा है। वहां तरह-तरह के फूल और पेड़ हैं। तान्या को चमकीले बालों वाली बीस साल की लड़की टहलती दिखाई दी। वह गले में लाल टाई बांधे है। वह युवा नायिका बड़े ही गंभीर स्वभाव की मालूम देती है। उसकी बगल में एक स्वस्थ आदमी हाथ में भारी थैला लिये टहल रहा है।

"ओल्गा! देखो मैं इसे आखिरकार घसीट ही लायी!" स्त्योपा को आगे खींचती हुई तान्या कहती है।

"तान्या, तुम्हें पहले अभिवादन करना चाहिये था," थैले वाले व्यक्ति की ओर देखते हुए उसने कहा। "यह मेरी बहन है। यह छोटी उम्र के लड़के-लड़कियों की टोली में काम करती है।"

"नमस्ते।" तान्या कहती है, "शैतानों ने एक खिड़की फिर चूर चूर कर डाली। बोरीस लौट आया है और वह भी इसी हुल्लड़बाज़ी में शरीक हो गया है।"

"अच्छा! बोरीस भी?"

"हां! मेरा तो उनपर कोई दबाव है नहीं। तुम्हें उनसे यह हंगामा बंद करने के लिए कहना चाहिये।"

"बहुत अच्छा, मैं आज शाम को ही बोरीस से कहूंगी। और स्त्योपा तुम...

तुमसे भी गम्भीरता से बातचीत करनी है। क्यों! ग्राज सवेरे फिर कैम्प में क्यों नहीं आये ?"

"अच्छा नहीं लगता, यहां बिल्कुल सूना सूना है।" स्त्योपा बड़े धीमे स्वर में जवाब देता है।

लड़की उसकी ओर दृष्टि जमाते हुए कहती है–

"जैसा सूना यहां तुम्हें लगता है मुझे क्यों नहीं लगता ?"

स्त्योपा चुप रहता है।

"जानते हो स्त्योपा तुम्हें यहां क्यों नहीं अच्छा लगता? न तो तुममें यहां के प्रति आदर भाव है और न तुम अनुशासन में ही रहना चाहते हो। समझ गये न ?"

"हां मैं समझ गया।" स्त्योपा फुसफुसाया।

"सरकार और नगर के लोगों ने धन और हर प्रकार की मदद करके इस कैम्प को बनाया है ताकि तुम गर्मी की छुट्टियों का समुचित लाभ उठा सको। पर तुम... तुम्हें शर्म आनी चाहिये स्त्योपा! तुम्हें लज्जित होना... ओह!" ओल्गा चिल्ला उठती है। जिस युवक से हमारी भेंट पटरी पर हो चुकी थी उसे अपनी ओर आते देखकर व्याकुल हो जाती है। कहती है, "कामरेड द्रोज्दोव, कैसे हैं आप? आप इनसे भेंट करें? ये हैं 'गिगान्त' कामगार कमेटी के चेयरमैन कामरेड पेरेवालोव।"

"ओल्गा व्लादीमिरोवना, हम लोगों की मुलाकात पहले हो चुकी है।" पेरेवालोव मुस्कराकर कहता है।

तान्या स्त्योपा को अपनी बगल में घसीट लेती है और कान में कहती है–

"अरे जानते हो यह कौन है? क्षेत्रीय कोमसोमोल कमेटी में स्कूल और बाल पायोनियर विभाग के प्रधान हैं। मैं इनसे तुम्हारे बारे में सारी बातें बता दूंगी, तभी तुम्हारी अक्ल दुरुस्त होगी।"

सयाने लोग घूमकर धीरे-धीरे कैम्प के केन्द्र की ओर बढ़ते हैं। तान्या उनके पीछे चलती है। स्त्योपा द्रोज्दोव को चिंतित भाव से देख रहा है कि कहीं लौट न पड़े। सहसा वह झाड़ियों के बीच घुस जाता है।

"अच्छा, बताओ यहां के क्या हाल-चाल हैं?" द्रोज्दोव पूछता है।

ग्रोल्गा उत्तेजित जान पड़ती है। वह ऐसे भाव प्रदर्शित करना चाहती है जैसे कि वह बहुत महत्वपूर्ण ग्रौर कामकाजी है। वह जल्दी जल्दी बोलने का प्रयत्न करती है पर बीच बीच में हकलाती जाती है–

"कामरेड द्रोज्दोव! ग्रभी तक तो सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है। हम फ़ेहरिस्त के मुताबिक सारा कार्यक्रम चला रहे हैं..."

"कौन सी फ़ेहरिस्त?" द्रोज्दोव ग्राश्चर्य से पूछता है।

"हां! सारा कार्यक्रम एक फ़ेहरिस्त के मुताबिक ही चलाया जा रहा है। लेकिन उसमें कुछ ग्रड़चनें ज़रूर हैं। कामरेड पेरेवालोव उन बाधाग्रों को दूर करने में हमारी सहायता करते हैं।"

द्रोज्दोव सुनकर ग्रोल्गा की ग्रोर कनखियों से देखता है ग्रौर उसके चेहरे पर मधुर मुस्कान खेलने लगती है। पेरेवालोव वार्तालाप में शामिल हो जाता है।

"कामरेड द्रोज्दोव, तुम देख-रेख के सिलसिले में ग्रन्य पायोनियर कैम्पों में भी जाते हो, है न ऐसा ? ग्रच्छा, बताग्रो बाहरी सजावट के मामले में हमारा कैम्प सब से बढ़-चढ़कर है ग्रथवा कोई ग्रन्य कैम्प भी ऐसा है जो इससे भी बाज़ी मार ले गया है?" वह द्रोज्दोव से पूछता है ग्रौर गली तक लगे रंग-बिरंगे झंडों की कतार तथा रूसी बाल-कथाग्रों के ग्राधार पर बने विभिन्न चित्रों की ग्रोर उसकी निगाहें दौड़ जाती हैं।

"यहां की सजावट तो वास्तव में बड़ी शानदार है।" द्रोज्दोव स्वीकार करता है।

पेरेवालोव प्रसन्नता से मुस्कराने लगता है।

"हां! बुरे तो नहीं लगते क्यों। हमारा यही सिद्धान्त है कि हर वस्तु बच्चों के लिए है। केवल यही नहीं बल्कि उत्तम से उत्तम वस्तु उनके उपयोग में ग्रा सके – ज़रा उस छोटे से सुंदर ग्रीष्म-गृह को तो देखो!"

वे छोटे से, सुंदर ग्रीष्म-गृह की ग्रोर ग्राते हैं, जहां लड़कियां एक बुढ़िया की सहायता से कसीदे का काम सीख रही हैं।

"यह कढ़ाई-मंडल है, इसमें ग्रौसत उपस्थिति करीब बीस लड़कियों की रहती है।" ग्रोल्गा बताती है।

द्रोज्दोव चुपचाप कनखियों से उसकी ग्रोर देखने लगता है।

"अच्छा, तुम्हीं बताओ क्या यह मंडप सुंदर कला का नमूना नहीं है? एक बहुत ही कुशल कलाकार ने इसे हमारे लिए तैयार किया था।" पेरेवालोव बड़े चाव से कहता है।

"यहां बच्चे आराम से पढ़ अथवा शान्त खेल खेल सकते हैं।" ओल्गा समझाती है।

मंडप में पूर्ण शांति है। कुछ लड़के बैठे किताबों के पन्ने उलट-पलट रहे हैं। दो लड़के शतरंज खेल रहे हैं। उनमें से एक खिलाड़ी ऊपर निगाह उठाता है और कुछ क्षण तक उदासीन भाव से द्रोज्दोव की ओर देखता रहता है। फिर वह विचारों में डूब जाता है।

"खेलकूद का क्या प्रबंध है तुम्हारे यहां?"

"कामरेड द्रोज्दोव, उसके लिए हमारे पास जगह काफ़ी नहीं है। बस यह समझो हमारे पास खुली जगह का बहुत बड़ा अभाव है।" पेरेवालोव कहता है। "जैसे-तैसे वहां हम खिलौना-घर बनाने में सफल हो सके हैं। आओ उसे भी देख लो। कामरेड द्रोज्दोव, उसमें बहुत खर्च लग गया है! लेकिन क्या किया जाय, बच्चों के लिए सब कुछ करना ही पड़ता है। हमारे नन्हे-मुन्ने भावी नागरिक हैं, क्यों ठीक है न कामरेड द्रोज्दोव?"

द्रोज्दोव खिलौने-घर में झांककर देखता है। अंदर बालकों के लिए फ़र्नीचर व्यवस्थित है। एक छोटी चारपाई पर मोटा-ताज़ा बालक आराम से सो रहा है। द्रोज्दोव घर के पास से जाता है।

"वास्तव में बड़ा ही शांत वातावरण है।"

"अरे। हमारे यहां सबसे उत्तम अनुशासन है। क्या मजाल कि मक्खी तक भिनक जाय, समझे न कामरेड द्रोज्दोव।"

"फिर भी बच्चों की संख्या बहुत कम है।" द्रोज्दोव ओल्गा की ओर देखकर कहता है।

ओल्गा लम्बी सांस लेकर कहती है—

"हां! सबसे बड़ी कमी यहां पर यही है। कामरेड द्रोज्दोव, जब यहां कोई फ़िल्म दिखाया जाता है, कंसर्ट होता है अथवा कोई दिलचस्प कार्यक्रम होता है तब काफ़ी बच्चे जमा हो जाते हैं।"

"और जब खास कार्यक्रम नहीं होता तब?" द्रोज्दोव पूछता है।

गली में फ़ुटबाल का खेल ज़ोर-शोर से चल रहा है, आवाज़ आती है –

"ल्योशा! ओ ल्योशा! गेंद मेरी ओर बढ़ा दो! मुझे कोई नहीं ताड़ रहा है!"

बोरीस आगे की ओर झुकता है और गिर पड़ता है। गेंद गोल में घुस जाता है।

"गो-ओ-ल!" दर्शक चिल्ला उठते हैं। "'धड़ाका' टीम के सत्रह गोल और 'तूफ़ान' टीम केवल दो ही गोल कर पाती है!"

"कामरेड द्रोज़्दोव, यहां जब कोई खास जलसा नहीं होता तो उपस्थिति बहुत कम हो जाती है।" ओल्गा खिन्न भाव से कहती रही, "मैं स्वीकार करती हूं कि हम अध्यापक सभी बालकों का ध्यान कैम्प की ओर आकर्षित करने में सफल न हो सके। हम..."

इसी बीच दूरस्थ किसी कारखाने की सीटी का स्वर गूंज गया। द्रोज़्दोव ने घड़ी की ओर दृष्टि दौड़ायी।

"माफ़ करना, अब एक बज चुका है। मुझे जल्दी जाना है। कमेटी में लोग मेरा इन्तज़ार कर रहे होंगे। अच्छा सुनो, ओल्गा व्लादीमिरोवना। तुम मुझसे कल मिलो। हम मिलकर तजवीज़ सोचेंगे कि कैसे कैम्प की ओर लड़कों को आकर्षित किया जाय।"

"कामरेड द्रोज़्दोव, धन्यवाद।"

"क्या मैं इस रास्ते से कमेटी-दफ़्तर तक जा सकता हूं?"

"हां। इसी ऊसर के बीच से होकर नदी के किनारे किनारे चले जाइये और पुल पार करने के बाद आप ठीक राह पर पहुंच जायेंगे।"

"धन्यवाद" कहकर द्रोज़्दोव चल देता है। सड़क की दूसरी ओर से द्रोज़्दोव ऊसर भूमि में प्रवेश करता है। यहां स्थान स्थान पर गड्ढे और कूड़ा-करकट फैला हुआ है। द्रोज़्दोव एक पत्थर पर ठोकर खाता है, वहीं खड़ा हो जाता है और इस मैदान को अच्छी तरह देखता-भालता है।

"जगह की कमी है, कह रहे थे!" वह बड़बड़ाता और अपनी राह पर फिर चल देता है।

"गोल!" कहीं दूर से सुनाई देता है।

"गोल!" गली में लड़कों का शोर सुनाई देता है।

"अठारह अनुपात दो, 'धड़ाका' टीम जीत रही है!"

"बस! खेल खत्म हुआ, टीम कतार में खड़ी हो जाय!" 'धड़ाका' टीम का कप्तान अपने खिलाड़ियों से कहता है और वे कतार में खड़े हो जाते हैं।

"अभी कहां खत्म हुआ खेल! हम अभी और खेलेंगे!" बोरीस आवेश में चिल्लाता है।

"डर गये क्या? कायर कहीं के!" तीमोशा उन्हें चिढ़ाने लगता।

"हम डरते नहीं हैं। हम कायदे के पाबंद हैं। हम दिन में एक घंटे से ज्यादा नहीं खेलते।" 'धड़ाका' टीम का कप्तान बताता है। वह अपनी टीम की ओर रुख करके हुक्म देता है, "आगे बढ़ो! सांस लो और सांस निकालो, हां, एक-दो, एक-दो!"

पूरी टीम दोनों हाथ ऊपर-नीचे करती तथा सांस लेकर, बाहर निकालती हुई जल्दी से आगे बढ़ जाती है।

"उन्हें तुमसे डरना ही क्यों चाहिये? क्या उन्होंने तुम्हारी टीम को बुरी तरह नहीं हराया है?" दर्शक हंसते हुए कहते हैं।

बोरीस अपनी टीम को घूरकर देखता है।

"कितने शर्म की बात है! अठारह गोल हमपर चढ़े और हम केवल दो ही कर पाये। अच्छा, तुम सब कतार में खड़े हो जाओ। हम ट्रेनिंग शुरू करेंगे।"

"बोरीस, मैं घर जा रहा हूं।" ल्योवा कहता है।

"अच्छी बात है, मैं अभी आध घंटे में आता हूं।"

उसी शाम। ल्योवा के कमरे में। किताबों का ढेर लगा है, पुरानी चायदानी, बोतलों आदि के बने कई आपरेटस रखे हैं। ल्योवा अपनी मेज़ पर बैठा वायरलेस सेट के तार जोड़ने में व्यस्त है। कोई दरवाज़ा खटखटाता है।

"अभी आया!" ल्योवा मेज पर लगा हत्था हटाता है।

कोई वस्तु भनभना उठती है और फिर जोर का कर्कश शब्द होता है। ब्लॉक से लटका कोई वज़नी बटखरा दरवाज़े के पास खड़े खम्भे से गिरता है। किवाड़ों का खटका हटता है और दरवाज़ा एकदम खुल जाता है। हल्की टक्कर सी लगती है, बोरीस अपना माथा सहलाता हुआ भीतर घुसता है।

दरवाज़ा बंद होते समय पीठ में लगता है। खटका झटके से अपने स्थान पर आते समय उसकी बगल में आघात करता है।

मेज़ की बगल में पड़ी आराम कुर्सी पर बोरीस एकदम ढह पड़ता है। उसके बाल बिखरे और सारे शरीर में धूल चढ़ी हुई है तथा वह बिल्कुल पस्त जान पड़ता है।

"यह अलकली तो नहीं है?" साफ़ तरल पदार्थ से भरा गिलास उठाकर वह पूछने लगता है।

"नहीं, यह टांका लगाने वाला तेज़ाब है।"

बोरीस चौंककर चुपचाप वह गिलास फिर मेज़ पर रख देता है। ल्योवा उठकर उसे पानी दे देता है।

"आज आठ घंटे तक खेल की ट्रेनिंग देता रहा, फिर भी वे ठीक तरह से नहीं खेल पाते।"

"बोरीस, तुम भी बड़े अजीब हो। सवेरे तुम स्वयं फ़ुटबाल टीम का विरोध कर रहे थे और खुद जाकर खेलने लगे।"

"हां ठीक है! क्योंकि मैं देखता हूं कि हमारी टोली में कोई खेलकूद नहीं है।"

"अच्छा यह बात है..." ल्योवा फिर वायरलेस सेट में जुट जाता है।

"अरे! कल सवेरे आठ ही बजे से हम ट्रेनिंग शुरू कर देंगे। हम खाना, सोना तक हराम कर देंगे पर 'धड़ाका' टीम को हराकर चैन लेंगे। तुम भी आना, तुम्हें हम रिज़र्व खिलाड़ियों में रखेंगे।"

"मुझे माफ़ करो, मैं न आ सकूंगा।"

बोरीस ऐसे उछल पड़ता है जैसे कि उसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो।

"अच्छा, तो तुम इसे इस दृष्टि से देखते हो? तुम्हारे दिल में टोली की इज्ज़त का कोई ख्याल नहीं है?"

"मैं तुम्हारी टोली की इज़्ज़त दूसरे तरीके से बढ़ाने की फ़िक्र में हूं।"

"सो कैसे ?"

ल्योवा दराज़ से एक अखबार निकालकर बोरीस के हाथ में पकड़ा देता है।

"लो इसे पढ़ो।"

बोरीस पढ़ता है –

"'प्रोफ़ेसर शापोशनिकोव और उनके सहायक इवानोव ने एक ऐसा वायरलेस टेलीफ़ोन सेट बनाया है जो अल्ट्रा-शार्ट वेव बैंड पर काम करेगा और सामूहिक खेतों में इस्तेमाल किया जा सकेगा। जल्दी ही आविष्कारक 'कामनी पारवार' राजकीय फ़ार्म जानेवाले हैं। वे इस सेट की परीक्षा फ़ार्म में करेंगे।' तो इसका क्या मतलब ?"

"मुझे पायोनियर हाउस की ओर से इस सेट का खाका दिया गया था। मैंने इसके तारों को ठीक से व्यवस्थित कर लिया है। देखो, यह रहा मेरा सेट!"

बोरीस उस छोटे से बक्स को बड़े चाव से देखता है।

"क्या यह काम करने लगा है?"

"कल तो यह काम करता था, पर आज इसमें कुछ खराबी आ गयी है। जब मैं इसे ट्यून कर रहा हूं तो किसी को माइक्रोफ़ोन पर बोलना चाहिये।"

बोरीस उस सेट को बड़ी देर तक देखता रहा।

"क्या ही अच्छा हो कि हमारी टोली के पास ऐसा ही सेट रहे! क्या इसे सुधारने में काफ़ी समय लगेगा ?"

"नहीं! बस दस मिनट में ठीक काम करने लगेगा। अच्छा तुम माइक्रोफ़ोन के सामने ज़ोर से गिनती गिनो और मैं इसे रसोईघर में ले जाकर सुनता हूं।"

बोरीस माइक्रोफ़ोन के सामने बैठा है और गिनता है –

"तीन हज़ार दो सौ एक, तीन हज़ार दो सौ दो... ल्योवा क्या जल्दी न आओगे ? मैंने सवेरे के नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया है, पेट में चूहे कूद रहे हैं।"

"दरवाज़ा खोलो।" दरवाज़े के पीछे ल्योवा की आवाज़ सुन पड़ती है।

बोरीस दरवाज़े की मशीन चलाता है और दरवाज़ा आप ही आप खुलने लगता है। ल्योवा रेडियो-सेट लेकर सही-सलामती से कमरे में घुसता है।

"बैटरी खाली हो गयी है, मुझे इसे चार्ज करना पड़ेगा।"

"अरे भाई जल्दी करो न, मैं तो अधमरा हो गया हूं।"

"इसमें कुछ मिनटों से ज्यादा देर न लगेगी।" ल्योवा सेट से छोटी सी बैटरी निकालता है, मुरब्बे के खाली बर्तनों के बने रेक्टीफ़ायर से जोड़ देता है और कहता है, "अब मैं रेक्टीफ़ायर को चालू कर दूंगा।"

वह तार जोड़ता है। एकदम तार से फुलझड़ी के समान चमक निकल पड़ती है और विचित्र चटचटाहट का शब्द होता है। फिर सारा घर अंधेरे में समा जाता है।

"शार्ट-सर्किट।" ल्योवा गहरी सांस लेकर कहता है।

दोनों गलियारे में मोमबत्ती लिये खड़े हैं और दीवार पर ऊपर लगे सेफ़्टी प्लग की ओर देख रहे हैं।

"आओ, मेरे कंधों पर चढ़ जाओ।" बोरीस कहता है।

ल्योवा उसके कंधों पर लड़खड़ाता है पर अपने को साध नहीं पाता, वह बोरीस के बाल पकड़ लेता है।

"अरे, क्या इरादा है तुम्हारा? मुझे दर्द हो रहा है! अच्छा, तुम नीचे आ जाओ!" वह बड़बड़ाता है और ल्योवा को नीचे उतार देता है और कहता है, "अच्छा, अब मुझे चढ़ने दो।"

बोरीस ल्योवा के कंधों पर चढ़ता है, ल्योवा उसका बोझ नहीं संभाल पाता और नीचे झुक जाता है। बोरीस दीवार की खूंटी से लटक जाता है, फिर नीचे कूद पड़ता है।

"तुम भी हो पूरे निकम्मे!"

"यहीं कहीं सीढ़ी मौजूद है, हम कितने मूर्ख हैं कि एक दूसरे के कंधों पर चढ़ते-फिरते हैं।" ल्योवा कहता है और रसोई में सीढ़ी खोजने चला जाता है। फ़र्श पर किसी वस्तु के गिरने का धमाका सुनाई देता है।

"क्या हुआ ल्योवा?" बोरीस पूछता है।

"शायद मैं प्रायमस स्टोव से टकरा गया हूं।"

बोरीस उसकी सहायता के लिए दौड़ता है।

रोशनी होने लगती है। बोरीस सीढ़ी से उतरता है।

"रेडियो में सर खपाने के बजाय तुम्हें कसरत करने की अधिक जरूरत है, समझ गये न?"

"अरे, छोड़ इसे, बोरीस। आदमी कोई घोड़ा तो है नहीं। उसे दिमागी ताकत की ज़रूरत है, जिस्मानी की नहीं।"

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। लेकिन अब मैं तुम्हारी सहायता नहीं करूंगा। नमस्ते, मैं जाता हूं।"

बोरीस अपने घर की सीढ़ियों पर चढ़ता है। शापोशनिकोव के दरवाज़े पर चौड़े कंधों वाला लम्बा व्यक्ति हाथ में विलक्षण आकार का छोटा सा बक्स लिये दिखाई देता है। चेहरे पर उभरी हड्डियों वाला एक मधुर व्यक्ति बोरीस को देखता है, उसके चेहरे पर भय के भाव उभर आते हैं। वह जल्दी से अपने हैट का किनारा खींचता है और कोट का कालर उठाने लगता है। बोरीस उसे कनखियों से देखता है और अपने घर का दरवाज़ा खोलने लगता है।

वह दबे पांव कमरे में घुसता है, बिस्तर की बगल में रखा लैम्प जल रहा है। वह देखता है कि ओल्गा सो रही है।

"मैं बोरीस को मजबूर करूंगी।" ओल्गा सोती हुई बड़बड़ाती है।

बोरीस दूसरे कमरे में जाता है। तान्या सो रही है। स्त्योपा सोते हुए कम्बल के नीचे पैर चला रहा है।

"मुझे क्यों मार रहे हो?.. चार गोल चढ़ गये!" वह चिल्ला उठता है।

प्रोफ़ेसर शापोशनिकोव दरवाज़ा खोलते हैं और उस लम्बे व्यक्ति को अंदर बुला लेते हैं।

"इवान सेर्गेयेविच, अंदर आ जाओ। बड़ी खुशी हुई कि तुम आ गये। अरे कालर क्यों उठाये हो? बाहर तो गर्मी है।"

"मिखाईल पेत्रोविच, मैं लड़कों से बचना चाहता था।"

"क्या कहा तुमने? मैं ठीक से समझ नहीं पाया।" हॉल में प्रवेश करते हुए प्रोफ़ेसर ने पूछा।

"लड़के मुझे चैन नहीं लेने देते। मिखाईल पेत्रोविच, फ़ुटबाल का नामी खिलाड़ी होना भी एक मुसीबत है।"

"अरे हां तुम फ़ुटबाल के खिलाड़ी भी हो, मैं तो बिल्कुल भूल ही गया था। इसे क्या कहा जाय, यह भी एक व्यसन है। अच्छा! तुम ले आये न उसे?"

"यह रहा सेट, प्रोफ़ेसर।" आगंतुक बक्स मेज़ पर रख देता है।

प्रोफ़ेसर जल्दी से ढक्कन खोलते हैं। छोटा सा वायरलेस टेलीफ़ोन सेट निकल आता है।

"बहुत अच्छा है।" प्रोफ़ेसर धीरे से बोल उठते हैं, "तुमने इसकी जांच कर ली है न?"

"हां। कल सवेरे मैं लेबोरेटरी से सेट की सहायता से आपसे सम्पर्क स्थापित करूंगा।"

"बहुत खूब! तो अब हमें राजकीय फ़ार्म चलने में देर न करनी चाहिये।"

"मीशा, जल्दी करो! चाय ठंढी हो रही है।" येलेना द्मीत्रियेवना की आवाज़ सुनाई देती है।

प्रोफ़ेसर मेहमान को खाने के कमरे में ले जाते हैं।

"प्यारी येलेना देखो, यह हमारे पूर्व छात्र हैं और अब मेरे सहयोगी इवान सेर्गेयेविच इवानोव हैं। इवान सेर्गेयेविच, यह मेरी भतीजी गाल्या है।"

"चाचा जी! ये 'स्व्याज़ीस्त' टीम के खिलाड़ी भी हैं क्या?" गाल्या फुसफुसाती है।

"बहुत खूब गाल्या। लेकिन फुसफुसाना अशिष्टता है।"

इवानोव जेब टटोलने लगता है।

"कल के खेल के मेरे पास तीन टिकट हैं। क्या आप मैच देखना पसंद करेंगे?" वह पूछता है।

गाल्या खुशी से नाच उठती है—

"क्या ही दिलचस्प बात है! 'स्व्याज़ीस्त' और 'मेदीक' का मुकाबला है!"

"हां, गाल्या।" इवानोव उसे टिकट दे देता है। "प्रोफ़ेसर, आप भी देखने चलेंगे?"

"मैं? अरे... मैं नहीं... धन्यवाद, सच बात तो यह है..."

"इवान सेर्गेयेविच, हम तो तंग आ गये हैं इस खेल से।" येलेना द्मीत्रियेवना रुखाई से कहती है। "कुछ न पूछो हम फ़ुटबाल से नाक तक छके हुए हैं। चैन नहीं मिली है अभी तक!"

"जानते हो यहां खिलाड़ी गेंद से रोज़ हमारी खिड़कियों की खबर लिया करते हैं। काम करना बहुत कठिन हो गया है।"

"अच्छा। तो खिलाड़ी लड़के चैन नहीं लेने देते आपको क्यों?" इवानोव कहता है।

"ये खिलाड़ी 'तूफ़ान!' और 'धड़ाका' टीम के हैं।" गाल्या समझाती है।

"तुम्हें टिकटों के लिए बहुत बहुत धन्यवाद।" येलेना द्मीत्रियेवना कहती है, "लड़कों को तो उछल-कूद और दौड़ शोभा देती है, पर सयाने लोगों को..."

"अरे! प्यारी येलेना!"

"क्या हुआ?"

"ज़रा शक्कर का कटोरा मेरी ओर बढ़ा दो।"

"वह आपके सामने है... हां, ठीक तो है। सयाने लोगों को उछल-फांद में दिलचस्पी लेते देखा जाय तो इसे नासमझी के अलावा और कहा ही क्या जा सकता है?"

"आयें... हां, आयें... प्यारी येलेना, तुम इस पहलू को इन्साफ़ की नज़र से नहीं देख रही हो..." प्रोफ़ेसर हकलाकर बोल उठते हैं, "कभी कभी तो काफ़ी संभ्रान्त लोग भी फ़ुटबाल खेलने का मन करते हैं।"

"मीशा बकवास छोड़ो! कोई भी इज़्ज़तदार परिवार तुम्हारे उन संभ्रान्त लोगों को अपने पास न फटकने देगा... गाल्या! तुम्हें हो क्या गया है? मेरे मोज़े फाड़ डालोगी।"

इवानोव गाल्या की ओर देखता है और मुस्कराकर आंख का इशारा करता है। वह एक नोट-बुक निकालता है।

"हां, क्या नाम है उन टीमों का? ज़रा दोहराओ तो– 'तूफ़ान' और 'धड़ाका' न?"

"हां," गाल्या लज्जित होकर धीरे से कहती है।

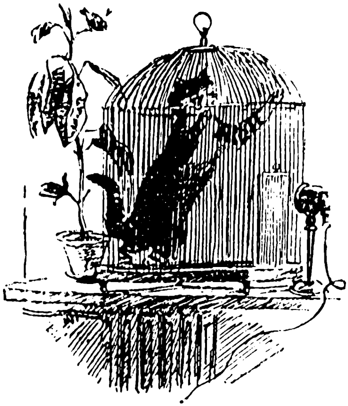

इवानोव नोट-बुक पर कुछ लिखता है और येलेना दमीत्रियेवना की ओर मुड़कर कहने लगता है –

"और यदि मैं आपका पिंड 'तूफ़ान' और 'धड़ाका' टीमों से छुड़ा दूं तब तो आप मुझे अपने पास फटकने देंगी ?"

येलेना दमीत्रियेवना उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगती है।

चिड़िया पिंजड़े में बंद है और पिंजड़ा ल्योवा के कमरे में खिड़की की चौखट पर रखा है। एक बिल्ली उसे भूखी आंखों से देख रही है।

ल्योवा पिंजड़ा खोलकर चिड़िया बाहर कर देता है और बिल्ली को अंदर बंद करता है। बिल्ली म्याऊं-म्याऊं करने लगती है। ल्योवा माइक्रोफ़ोन पिंजड़े के सामने रख देता है।

"अरे! यदि तुम चूहे पकड़ने में सुस्त हो तो अच्छा होगा कि तुम एनाउन्सर बनकर अपनी रोज़ी कमाओ।" सेट के साथ कमरे के बाहर जाता हुआ ल्योवा कहता है।

बिल्ली गला फाड़कर म्याऊं-म्याऊं कर रही है।

मिखाईल पेत्रोविच परेशान से पढ़ने के कमरे में घूम रहे हैं।

"बड़ी भद्दी बात है... दरअसल... बड़ी भद्दी बात है... मैं तो... हां मैं तुम्हें आगाह करना ही भूल गया था और तुम..." वे कहते हैं।

"हाय भगवान! देखा इनको।" येलेना दमीत्रियेवना तुनककर बोल उठती है। "मैं क्या जानती थी? देखने में तो वह अच्छा-खासा आदमी मालूम देता था। कौन जानता था कि वह भी फ़ुटबाल का खिलाड़ी निकलेगा।"

येलेना दूर्मीत्रियेवना धड़ाके से दरवाज़ा बंद करती हुई कमरे के बाहर निकल जाती है। मिखाईल पेत्रोविच छोटा वायरलेस टेलीफ़ोन सेट उठा लेते हैं और कमरे में कदम नापते हुए गाल्या से कहते हैं—

"कुछ सुना तुमने गाल्या! बहुत जल्द इवान सेर्गेयेविच और मेरे प्रयत्नों से बड़ी अद्भुत वस्तु हाथ लगनेवाली है। मान लो तुम अपनी किसी सहेली के साथ टहल रही हो और तुम्हारे हाथ में यह छोटा बक्स रहेगा। तुम्हारी चाची तुमसे आधा पौंड मक्खन खरीदने के लिए कहना चाहती हैं तो वे घर पर अपने सेट का बटन दबायेंगी। तुम जहां कहीं भी होगी, उसी क्षण तुम्हारा सेट भनभनाने लगेगा।" इतना कहते हुए मिखाईल पेत्रोविच ने अपने टेलीफ़ोन सेट का बटन दबाया और...

ल्योवा के सामने रखा सेट भनभनाने लगता। ल्योवा उछल पड़ता और हड़बड़ाकर सेट की ओर देखने लगता। फिर उसे उठाकर कमरे की ओर जाता।

वहां बिल्ली म्याऊं म्याऊं कर रही है।

प्रोफ़ेसर रिसीवर कान में लगाकर खड़े के खड़े रह जाते हैं। वे परेशान दिखाई दे रहे हैं।

"एंह... गाल्या ज़रा सुनना तो, मेरे कानों को धोखा तो नहीं हो रहा है?.. क्या यह बिल्ली की आवाज़ सुनाई दे रही है?"

गाल्या रिसीवर उठाकर क्षण भर सुनती है, फिर बोल उठती है—

"हलो!"

"हां, हलो!" ल्योवा माइक्रोफ़ोन होंठों से सटाकर उत्तेजित होकर चिल्ला पड़ता है।

ल्योवा की मेज़ पर रखी अलार्म-घड़ी ग्यारह बजने में पच्चीस मिनट बता रही है।

प्रोफ़ेसर की मेज़ पर एक पुरानी कांसे की घड़ी रखी है जिसमें ग्यारह बजकर पांच मिनट हो गये हैं। मिखाईल पेत्रोविच गहरी आराम कुर्सी में धंसे और रिसीवर कान से लगाये बैठे हैं।

"प्यारे बच्चे! तुम सबेरे आकर मुझसे जरूर मिलो। मैं तुमसे मिलकर तथा तुम्हारा सेट देखकर बड़ा प्रसन्न होऊंगा।" वे कहते है।

दूसरे दिन सबेरे। बोरीस का कमरा। ओल्गा मेज पर बैठी कॉफ़ी की चुसकी ले रही है और पत्र लिखती जाती है –

"मां, बोरीस का तो यह हाल है कि वह स्वयं कैम्प में जाने का नाम नहीं लेता और उसके कारण दूसरे लड़के भी उधर नहीं आते। वे उसके साथ फ़ुटबाल खेलने में दीवाने रहते है। मुझे आशा है कि मैं उसे सही रास्ते पर लाने के लिए कोई शिक्षा-शास्त्र संबंधी उपाय खोज निकालूंगी।

आपकी – ओल्गा।"

पत्र समाप्त करके ओल्गा बगल के कमरे में जाती है। बोरीस अभी तक सो रहा है। तान्या कमरा साफ़ कर रही है, स्त्योपा अभी तक मटरगश्ती कर रहा है। ओल्गा, बोरीस की चारपाई के पास रुक जाती है।

"बोरीस!" वह पुकारती है।

बोरीस सोते हुए कुछ बड़बड़ाता है।

"तान्या," स्त्योपा फुसफुसाता है, "क्या ओल्गा बोरीस पर इसी समय अपना प्रभाव जमाना चाहती है?"

"हां। शोर मत मचाओ।" तान्या फुसफुसाकर जवाब देती है।

"बोरीस! उठो!" ओल्गा उसे पुकारती है।

कुनमुनाकर बोरीस आंखें खोलता है और ओल्गा का हाथ हिलाते हुए मुस्कराता है।

"हलो, ओल्गा! मैं कल सबेरे आया था, पर अब तक हम लोगों की मुलाकात न हो सकी।"

अनिर्विकार और गम्भीर भाव दिखाती ओल्गा उसकी चारपाई के किनारे पर बैठ जाती है।

"हां बोरीस, हम एक दूसरे से न मिल सके।" ओल्गा गम्भीरता से कहती है।

बोरीस उसकी ओर चुपचाप देखने लगता है।

"मुझे आशा थी कि तुम मुझसे आते ही मिलोगे क्योंकि मैं तुमसे कुछ आवश्यक बातें करना चाहती थी।" ओल्गा ने कहना आरंभ किया।

बोरीस उदास होने लगा।

"हां, कहो क्या बात है?" अरुचि का भाव दिखाते वह बोला।

थोड़ी देर रुककर ओल्गा गम्भीर भाव में बोलती है—

"बोरीस! मुझे जवाब दो, तुम पायोनियर हो न?"

बोरीस उठकर बैठ जाता है और कपड़े पहिनने लगता है। फिर जम्भाई लेकर बोल उठता है—

"तुम्हारा यह तरीका गलत है।"

"तुम्हारा क्या मतलब है? कौन सा तरीका?" ओल्गा सम्भलकर बैठ जाती है।

"यह तरीका शिक्षा-शास्त्र की दृष्टि से बेतुका है। तुम मुझपर अपना प्रभाव जमाना चाहती हो, फिर भी मूर्खतापूर्ण प्रश्न कर रही हो।"

"यह सब क्या बखेड़ा है?"

"तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैं पायोनियर हूं। ऐसे ढंग से तुम स्त्योपा के साथ पेश आया करो। अब मैं कोई बच्चा नहीं हूं। पूरा तेरह वर्ष का हो गया हूं समझे।"

ओल्गा तान्या और स्त्योपा की ओर देखती है।

"तुम, दोनों यहां क्या कर रहे हो? कमरे के बाहर जाओ!" जब वे चले जाते हैं तब ओल्गा फिर एक बार बोरीस की ओर मुखातिब होती है, "पहली बात तो यह है कि, बोरीस, तुम्हें बड़ों के मुंह इस प्रकार न लगना चाहिये, और दूसरी यह कि मैं तुमपर अपना अधिकार जमाने नहीं आयी हूं, बस केवल तुम्हारा ध्यान इस ओर अवश्य आकर्षित करना चाहती हूं कि तुमने अपने साथियों को कैम्प के प्रति उदासीन बना दिया है। अब तुम्हीं बताओ क्या किसी पायोनियर को यह सब शोभा देता है? सरकार ने बहुत साधन कैम्प-निर्माण में खर्च किया है। उस योजना से लाभ नहीं उठाना चाहते बल्कि खिड़कियां तोड़ते फिरते हो।"

बोरीस सर खुजलाने लगता है।

"रही खिड़कियों की बात... हां, तोड़-फोड़ बुरी चीज है। अच्छा सुनो यदि हम लोग कैम्प में ही ट्रेनिंग आरम्भ कर दें तो कैसा रहेगा?"

ओल्गा तिरस्कार से कंधे झटकती है।

"बोरीस, फ़ज़ूल की बातें बंद करो। हमारे पास इतनी जगह कहां है कि फ़ुटबाल खेला जा सके? इसके अलावा और भी तो कई दिलचस्प दिल-बहलाव के साधन हैं। हमारे पास शतरंज और ड्राफ़्ट्स भी तो हैं।"

"उन्हें तो घर पर बैठकर भी खेला जा सकता है।" बोरीस ने निराश होते हुए कहा।

"अच्छा तो कढ़ाई का काम सीखने में क्या हर्ज है?"

"मुझे उसमें रुचि नहीं है।"

"संगीत मंडल भी तो वहां है।"

"उसके लिए गायकों का सा गला कहां से लायें?"

"और प्रायः हमारे यहां भाषण हुआ करते हैं। आज ही शाम भाषण है जिसका विषय है, 'कसरत अच्छे स्वास्थ्य का साधन है'।"

बोरीस उठकर खड़ा हो जाता है। वह कपड़े पहनकर तैयार हो चुका है।

"हम इस कसरत में ही तो सबसे गये-गुज़रे हैं, हमें भाषण नहीं बल्कि कसरत..."

तीमोशा बिना दरवाज़ा खटखटाये अंदर आता है।

"बोरीस, टोली ट्रेनिंग के लिए तैयार खड़ी है।" वह कहता है।

"मैं चल रहा हूं!"

लड़के कमरे से बाहर निकल जाते हैं।

"बोरीस, नाश्ता तो करते जाओ?"

"मुझे फ़ुर्सत नहीं है।"

"बोरीस! ओ छोकड़ो, छोकड़ो!" ओल्गा रुआंसी आवाज़ में चीख उठती है। "लड़को! आज रात बहुत दिलचस्प तमाशा होनेवाला है! हम खेलों के कार्यक्रम का आयोजन कर रहे हैं और एक अकार्डियन वादक भी आनेवाला है!"

बाहर का दरवाज़ा ज़ोर से खुलकर बंद होता है, लड़के बाहर निकल जाते हैं।

ओल्गा दीवार तक जाती है और तसवीर की ओर दृष्टि गड़ा लेती है। उसका मन भर भर आता है और वह रोना चाहती है। तान्या धीरे से अपनी बहन के पास आ जाती है और उसके हाथ पर अपना गाल रगड़ने लगती है।

"अच्छा, मैं अब चलूंगी। कैम्प का समय हो गया है।" ओल्गा धीरे से कहती है और कमरे के बाहर दौड़ जाती है।

तान्या कमरे के बीच उदास खड़ी रह जाती है और वह विचारों में खोयी खोयी सी जान पड़ती है। सहसा उसकी नज़र स्त्योपा पर पड़ती है। वह दबे पांव सदर दरवाज़े की ओर जाता दिखाई देता है। स्त्योपा हाथ में रेफ़री वाली सीटी दबाये है।

"स्त्योपा! कहां जा रहे हो तुम?"

"तान्या!" स्त्योपा दृढ़ता से कहता है, "तुम मुझपर अपना प्रभाव जमाने की कोशिश मत करो! ओल्गा तक सफल नहीं हो सकी है..."

"लेकिन मैं तुमपर अपना प्रभाव जमाऊंगी!" तान्या स्त्योपा को पकड़ लेती है और गुसलखाने में बंद कर देती है।

ओल्गा अहाते में आ जाती है। वहां बोरीस लड़कों के साथ खड़ा है। ओल्गा रुकती है जैसे कि वह उनसे कुछ कहना चाहती है, पर कुछ सोचकर वह फिर शीघ्रता से चल देती है और फाटक के बाहर आ जाती है।

तीमोशा गेंद उछालने को तैयार खड़ा है। वह एक उड़ती नज़र प्रोफ़ेसर की टूटी खिड़की पर डालता है।

"बोरीस," वह बोल उठता है, "कल हमसे उस खिड़की का शीशा ज़रा सा टूट गया था।"

"अच्छा, आज सावधानी से खेलना।"

"अच्छी बात है।" तीमोशा गेंद उछालता है, गेंद प्रोफ़ेसर की खिड़की के पास तक उछल जाता है।

घर में तैयार किया हुआ ल्यांवा का भारी सेट कारखाने में बने छोटे सेट के साथ प्रोफ़ेसर की मेज पर रखा है।

"बस तुम्हें इतना ही सुधार करना है कि इसकी प्लेट का थोड़ा वोल्टेज बढ़ा दो ताकि ठीक काम करने लगे।" प्रोफ़ेसर उससे कहते हैं।

"मिखाईल पेत्रोविच, इस सुझाव के लिए तुम्हें धन्यवाद।"

"तुम मेरे पास कभी भी बेरोकटोक ग्रा सकते हो। मुझे जानकर खुशी हुई कि तुम मेरे युवा पड़ोसी हो ग्रौर ऐरा-गैरा कामों में दिलचस्पी नहीं रखते बल्कि तुम्हें ऐसे काम से रुचि है जो वास्तव में काम ग्रायेगा।" प्रोफ़ेसर ने ल्योवा से कहा।

"हां-हां, तुम कभी भी हमारे यहां ग्रा सकते हो," येलेना द्मीत्रियेवना प्रोफ़ेसर की बात का समर्थन करती है, "गाल्या! ग्राग्रो तुम्हारा इस लड़के से परिचय करायें। देखो कितना गंभीर लड़का है, यह उन लड़कों की भांति ऊधमी ग्रौर खिलाड़ी नहीं है।"

नीचे ग्रहाते में लड़कों का शोर सुनाई देता है।

"समय की बलिहारी है, मैं क्या कहूं," प्रोफ़ेसर ल्योवा की ग्रोर मुखातिब होकर कहते हैं, "जानते हो, यदि मुझे कोई काम करना होता है तो केवल रात ही में कर पाता हूं।"

"काश वे ठीक ढंग से खेलते होते!" गाल्या खेद प्रकट करते हुए कहती है, "मुझसे तो इतना बुरा खेल देखा नहीं जाता, परेशान हो जाती हूं मैं!"

भनभनाहट का स्वर गूंज उठता है।

प्रोफ़ेसर झट रिसीवर उठा लेते हैं। फ़ुटबाल के खिलाड़ियों की बात भूली-बिसरी सी हो जाती है। सबकी ग्रांखें प्रोफ़ेसर पर जा टिकती हैं।

"हलो, इवान सेर्गेयेविच! क्या मेरी ग्रावाज़ तुम तक पहुंच रही है? मैं भी तुम्हें बिल्कुल साफ़ साफ़ सुन रहा हूं। क्या तुम शाम को यहां ग्राग्रोगे? क्या कहा? ग्ररे मैं तो बिल्कुल भूल ही गया था कि तुम्हारा फ़ुटबाल मैच है ग्राज। भाई इवान सेर्गेयेविच, कल की घटना के लिए मुझे माफ़ कर दो... वास्तव में बड़ा ही भद्दा प्रसंग उठ खड़ा हुग्रा था... वैसे तो मेरी पत्नी बड़े ही नेक दिल की हैं पर बाज़ समय ज़रा... हां क्या कहा तुमने? नहीं, खास बात क्यों नहीं है। शायद तुम्हें उनका कोई कथन बड़ा ग्रशिष्ट लगा हो, इसका मुझे बड़ा खेद है..."

"मिला!" बाहर से ग्रावाज़ ग्राती है।

गेंद खिड़की से भीतर ग्राता है ग्रौर मिखाईल पेत्रोविच के सर से जा टकराता है। वे चौंक उठते हैं ग्रौर बड़ी रुखाई से माइक्रोफ़ोन पर बातें करने लगते हैं—

"माफ़ करना, ग्रचानक हमारी बातचीत में खलल पड़ गया था। खैर, पत्नी

के कटु वचनों की सफ़ाई देना मेरा कर्तव्य था, इसी लिए मैंने इतना कहा है। यद्यपि मैं कभी कभी उनके विचारों से सहमत होता हूं। अच्छा। हां। नहीं। शायद। कामरेड इवानोव, भला हो तुम्हारा।" प्रोफ़ेसर ल्योवा की ओर मुड़ते हैं और कहते हैं, "ओफ़ क्या ज़िंदगी है! क्या मुसीबत है यह सब!"

ल्योवा अपना सेट उठा लेता है।

"मैं इस हंगामे को बंद करवाऊंगा!" वह दृढ़ता से कहता है, "मैं उनसे बातें करूंगा!"

येलेना द्मीत्रियेवना मुंह फुलाये चुपचाप अपना हैट पहनती है और गेंद हाथ में दबाकर चल देती है।

येलेना द्मीत्रियेवना तान्या का दरवाज़ा खटखटाती दिखाई देती है। तान्या दरवाज़ा खोलती है।

"देखो आज फिर मेरे पति के कमरे में गेंद आकर गिरा है। मैं नहीं जानती कि तुम्हारा छोटा भाई आज खेल में शरीक था अथवा नहीं पर मैं..."

"मेरा छोटा भाई आज सवेरे से घर पर है।"

"मैं कतई खेल में शामिल नहीं हुआ," गुसलखाने से स्त्योपा की आवाज़ सुनाई देती है। "मेरा बड़ा भाई बोरीस आज खेल रहा है।" वह कहता है।

"बहुत अच्छा। मैं देख रही हूं तुम लोग टाल-मटोल कर रहे हो। अब मैं सीधे थाने में जाकर रिपोर्ट करूंगी।"

येलेना द्मीत्रियेवना चली जाती है। तान्या गुसलखाने का दरवाज़ा खोलती है और स्त्योपा को निकालती है।

"तान्या, कितना अच्छा हुआ कि तुमने मुझे गुसलखाने में बंद कर दिया था! थाने में जाने से गुसलखाने में बैठना कहीं अच्छा है!"

तान्या लाल पायोनियर टाई स्त्योपा के गले में बांधती है।

"अच्छा, कैम्प जाओ, पर ओल्गा को यह मत बताना कि उन्होंने खिड़की का एक और शीशा तोड़ डाला है। समझ गये न?"

"लेकिन मैं उससे यह सब क्यों न कहूं?"

"मैं नहीं चाहती कि तुम उसे नाहक परेशान करो। मैं स्वयं इसका उपाय कर लूंगी।"

येलेना द्मीत्रियेवना सड़क पर जल्दी जल्दी चली जा रही है। बीच बीच में अगल-बगल नज़रें घुमाकर देख लेती। सफ़ेद रेशमी स्पोर्ट-कमीज़ पहने एक युवक उसे रोक लेता है और कहता है–

"माफ़ कीजियेगा, क्या आप बता सकती हैं कि मकान नम्बर ६ कहां है?"

"यह रहा अगला मकान, आपको किसकी तलाश है?"

"मैं... बात यह है कि मैं कुछ लड़कों की तलाश में हूं जो 'तूफ़ान' और 'धड़ाका' नाम की टीमों के खिलाड़ी हैं।"

"'तूफ़ान' और 'धड़ाका'? मैं भी तो उन्हीं की तलाश में घूम रही हूं। अच्छा, मेरे साथ आओ!"

वे दोनों साथ साथ चल देते हैं। युवक माथे का पसीना पोंछता है।

"वे मेरे लिए तो जी का जंजाल बन गये हैं।"

"वही मेरा भी हाल है। कितनी अजब बात है!"

"बारह टीमें अपना नाम लिखा चुकी हैं।"

"नाम लिखा चुकी हैं, कहां?"

"हम लोगों ने 'स्व्याज़ीस्त' स्टेडियम में फ़ुटबाल खिलाड़ियों का बाल-विभाग खोल रखा है। हमने तो नाम लिखना ही बंद कर दिया था, लेकिन मेरे एक साथी ने इन टीमों का मास्कोवस्काया स्ट्रीट में पता लगाकर नाम लिखने का बहुत आग्रह किया है। वे हमारे क्षेत्र के खिलाड़ी भी नहीं हैं फिर भी..."

येलेना द्मीत्रियेवना धीरे चलने लगती है और पूछती है–

"ज़रा रुको, हां बताओ यह है क्या? यह फ़ुटबाल विभाग किसलिए खोला गया है?"

"क्या आप यह भी नहीं समझीं? उन्हें अनुभवी खिलाड़ियों द्वारा खेलना सिखाया जायेगा। इसके बजाय कि वे सड़कों में हुल्लड़ मचाते फिरें उन्हें स्टेडियम में खेलने दिया जायेगा।"

येलेना द्मीत्रियेवना रुक जाती है।

"ठहरो! तुम्हारा मतलब यह है कि वे अब हमारी खिड़कियां तोड़ने के बजाय स्टेडियम की खिड़कियां तोड़ेंगे?"

"स्टेडियम में खिड़कियां नहीं हैं।" युवक कहकर मुस्करा उठता है।

येलेना द्मीत्रियेवना विचारों में खोयी खोयी जान पड़ती है। वह स्त्योपा की ओर ध्यान नहीं देती। स्त्योपा उससे टकरा जाता है, डरकर वह पलट पड़ता है और धीरे से पीछे लौट जाता है।

"अच्छा आओ! हमें उन लड़कों का शीघ्र ही पता लगा लेना है!" येलेना द्मीत्रियेवना कहती है और युवक को पास ही सड़क पर टहलते हुए मिलीशिया-मैन की ओर घसीट ले जाती है।

"कामरेड मिलीशिया-मैन! क्या तुमने उन लड़कों को देखा है जो प्रायः यहां फ़ुटबाल खेला करते थे?"

"उन लड़कों ने तो मुझे भी तंग किया है। मुझे तंग करके वे पायोनियर कैम्प की ओर भाग गये हैं।"

स्त्योपा सड़क पार करता है और पायोनियर कैम्प की ओर भागता है।

नगर पायोनियर कैम्प में। लड़कों तथा लड़कियों का समूह उस मंडप के नीचे बैठा है जहां बैठकर शांत खेल खेले जाते हैं। वे व्यायाम के बारे में व्याख्यान सुन रहे हैं। बोलने वाला स्वयं ऐसा मालूम देता है कि इसे कभी भी व्यायाम और खेलकूद से वास्ता नहीं रहा है। वह बिल्कुल नीरस स्वर में कहने लगता है–

"अतः हमने यह प्रमाणित कर दिया कि व्यायाम प्रतिदिन उचित पद्धति के संयोग के साथ करना शारीरिक विकास के लिए लाभकारी है। अब मैं हर स्थिति की चर्चा विस्तार से करूंगा..."

ओल्या और एक प्रौढ़ अध्यापिका पास ही के संकरे रास्ते पर टहल रही हैं। मंडप की ओर देखकर अध्यापिका कहती है–

"हां, प्यारी ओल्गा! लड़कों की उपस्थिति बढ़ाने का हमें कोई उपाय जरूर खोज निकालना है। यह तो बड़ी लज्जा की बात है कि कुल बत्तीस बच्चे कैम्प में हैं। इतने बच्चों में तो हमारी रोटी हराम की ही समझिये।"

"आज मैं द्रोज़्दोव से मिलने जाऊंगी।" ओल्गा कहती है। सहसा वह अपनी दृष्टि फेरती है। उसे कैम्प की ओर आते लड़के दिखाई देते हैं। उसकी आंखें खुली की खुली रह जाती हैं। वह मुस्करा उठती है। "देखो! वे आ गये!" वह चिल्ला उठती है।

प्रौढ़ अध्यापिका मुड़कर देखती है, 'तूफ़ान' के लड़के एक साथ झूले पर बैठे दिखाई देते हैं।

"प्रिय ओल्गा!" अध्यापिका आश्चर्य और खुशी के आवेश में फुसफुसाती है, "ये नटखट लड़के भी आ गये?"

"यह मेरे प्रयत्न का फल है!" ओल्गा प्रसन्न होकर कहती है, "आज सवेरे मैं अपने भाई से बातें कर रही थी। मैंने सदैव ऐसा अनुभव किया है कि बालकों से कोई काम कराने के लिए उन्हें निरंतर प्रोत्साहन देते रहने की ज़रूरत पड़ती है, तभी कुछ सफलता हाथ लग पाती है।"

लड़के निराशा में डूबे उदास से जान पड़ते हैं।

"ऐसा जान पड़ता है कि हमें फ़ुटबाल छोड़ना पड़ेगा।" बोरीस कहता है, "आखिर हर दिन तो हम खिड़कियां तोड़ नहीं सकते!"

"यही ज़िन्दगी है!" गोल-कीपर ठंडी सांस लेकर कहता है।

स्त्योपा दौड़ता हुआ आता है।

"बोरीस! बचो! वह इसी ओर आ रही है।"

"कौन आ रही है?"

"वही जिसकी खिड़की आज सवेरे तुम लोगों ने... वह अभी मिलीशिया-मैन से बात कर रही थी।"

स्त्योपा रफ़ूचक्कर हो जाता है और लड़के कूदकर भागने को तैयार होते हैं।

"आओ चलें!" तीमोशा सब को आवाज़ देता है।

लेकिन उसी समय ग्रोल्या उनके पास ग्रा जाती है।

"बच्चो! मुझे खुशी है कि तुम्हें इस पायोनियर कैम्प में दिलचस्पी है। इससे ग्रधिक प्रसन्नता की बात ग्रौर क्या..."

"लड़को!" येलेना द्मीत्रियेवना युवक को ग्रपने साथ घसीटते शीघ्रता से ग्राती है ग्रौर बालकों को ग्रावाज़ देती है। उसे देखकर लड़के भाग खड़े होते हैं।

"लड़को, तुम जा कहां रहे हो? वे तुम्हें ढूंढ़ने यहां ग्राये हैं!" ग्रोल्या लड़कों को बुलाती है।

बोरीस कुछ क्षण के लिए रुकता है–

"ठहरो सब लोग! हमें ग्रपने कारनामों की सफ़ाई देनी ही होगी!"

"संपूर्ण शारीरिक ग्रंगों को सामान्य रूप से बलवर्धक बनाने तथा नाड़ी मंडल को मज़बूत बनाने के लिए ठंढे जल के गुण विलक्षण मानना पड़ेगा..." व्याख्यान-दाता मंडप में कहता है।

उसकी धीमी ग्रावाज़ सहसा उठते हुए हुर्रा के शोर में डूब जाती है।

"मेहरबानी करके," व्याख्यान-दाता एक लड़की से कहता है, "इन लड़कों से कह दो कि शोर करना एकदम बंद कर दें।"

लड़की इन बालकों के पास दौड़ी ग्राती है। तीमोशा से न रहा गया, वह दोनों हाथ ज़मीन पर टेककर कलाबाज़ी करने लगा। ग्रन्य लड़कों ने ग्रपनी उछल-फांद दिखाने में कोई कोर-कसर बाकी न रखी।

"ग्रच्छा तो याद रहे तुम लोगों को कल ठीक ग्यारह बजे स्टेडियम पर ग्राना है।" युवक उन बालकों से कहता है। "लेकिन हम उन्हीं बालकों को लेते हैं जो थोड़ा बहुत खेलना जानते हैं। क्या ये लोग ग्रच्छे खिलाड़ी हैं?" युवक येलेना द्मीत्रियेवना की ग्रोर मुड़कर पूछता है।

"ये पक्के खिलाड़ी हैं।"

"तो ग्रब मैं 'धड़ाका' टीम के खिलाड़ियों को ढूंढ़ने जाता हूं। ग्रच्छा ग्रलविदा।"

युवक ग्रागे बढ़ जाता है ग्रौर पीछे बालकों की हर्षध्वनि सुनाई देती है।

"बालको! देखो कहीं मेरी शान पर बट्टा मत लगवा देना!" येलेना द्मीत्रियेवना लड़कों को संबोधित करती है।

"बस हमें थोड़ी सी ट्रेनिंग की ज़रूरत है।" तीमोशा कहता है।

येलेना द्मीत्रियेवना गेंद दे देती है और कहती है—

"अच्छा अहाते में लौटकर फ़ौरन ट्रेनिंग शुरू कर दो।"

ओल्गा अचम्भे में चुपचाप सारा दृश्य देखती है, फिर येलेना द्मीत्रियेवना के पास आती है।

"क्षमा कीजिये, इस सब का क्या मतलब है?"

"इसका मतलब यह कि लड़कों को खेल की तालीम मिलनी चाहिये।" येलेना द्मीत्रियेवना जवाब देती है और बालकों के साथ चल देती है।

लड़की मंडप में फिर लौट आती है और अपने स्थान पर बैठ जाती है।

"बाहर कोई लड़कों का नाम फ़ुटबाल विभाग के लिए लिख रहा है।" लड़की अपने पास बैठी सहेली से फ़ुसफ़ुसाकर कहती है।

"कहां है? कौन है?... लड़को! फ़ुटबाल विभाग के लिए नाम लिखे जाते हैं।" सारी जमात में यह चर्चा फैल जाती है।

लड़के एक एक करके मंडप के बाहर निकल आते हैं। व्याख्यान-दाता हारकर अपना भाषण समाप्त कर देता है। कैम्प में खोजने के बाद लड़के सड़क पर दौड़ आते हैं लेकिन युवक का कोई पता नहीं लग पाता।

ल्योवा अभी तक शापोशनिकोव के घर पर है। वह प्रोफ़ेसर और गाल्या के सामने टहल रहा है।

"मैं मजबूर करूंगा कि टोली की आम सभा बुलायी जाय और मांग पेश करूंगा, 'भाइयो! यही समय है कि हम फ़ुटबाल के लिए दीवानापन एकदम खत्म कर दें। मनुष्य को उछल-कूद के बजाय ज्ञान की अधिक आवश्यकता है।'"

"मेरे बच्चे! तुम ठीक कहते हो, मनुष्य की ही बुद्धि ने चलने-फिरने वाला एक्सकावेटर तैयार किया है जो हज़ारों खोदनेवालों का काम करता है।"

"हां फेंको! उछालो!" बाहर से शोर आता है।

"फिर आ गये शैतान!" प्रोफ़ेसर गहरी सांस लेते हैं।

येलेना द्मीत्रियेवना कमरे में आती है और खिड़की पर जाकर अहाते की ओर

झांकने लगती है। इस बार गेंद उछलकर खिड़की पर लगता है पर कोई कांच नहीं टूटता।

"मैं अभी जाकर यह हंगामा बंद करवाता हूं!" ल्योवा कहता है।

"ल्योवा, तुम चुपचाप बैठो। उनके खेल में दखल मत दो।" येलेना द्मीत्रियेवना खिड़की से खेल देखती है और वहां से बिना हटे कह उठती है।

कमरे के लोग आश्चर्य से एक-दूसरे को देखते हैं।

"अऍं! प्यारी येलेना... क्या मतलब है इसका... अचानक यह कैसा परिवर्तन?"

"सारा भेद मैं आज ही न बताऊंगी। मुझे डर है कि कहीं कोई गड़बड़ न हो जाय। मीशा! बस एक बात बताये देती हूं कि तुम्हारा इवानोव बड़ा प्यारा इन्सान है।" (गेंद फिर खिड़की से टकराता है।) "गाल्या, तुम्हारी क्या राय है क्या ये लोग अच्छे खिलाड़ी हैं?"

"कतई नहीं! तुम्हें वास्तविक खेल देखना चाहिये।"

"दोनों की तुलना करना बड़ी दिलचस्प बात होगी। अच्छा तुम्हारे पास वे टिकट तो हैं न?"

"हां, हैं मेरे पास।" गाल्या कहती है।

येलेना द्मीत्रियेवना कुछ सोचती हुई खिड़की के बाहर देखती है। प्रोफ़ेसर और ल्योवा कंधे झटकते हैं और एक दूसरे की ओर देखते हैं।

"मीशा।"

"हां, प्यारी येलेना।"

"भोजन के बाद कपड़े बदल लेना, हम लोग स्टेडियम चल रहे हैं।"

"अऍं! क्या? कहां?"

"स्टेडियम। तुम्हें ताज़ी हवा में घूमना चाहिये। एक अरसे से तुम घर में बंद हो।"

"प्यारी येलेना, मुझे माफ़ करो पर क्या वास्तव में तुम यह... ऍंह... खेल देखना चाहती हो?"

"क्यों, क्या इसमें कुछ शक है? मुझे देखना ही चाहिये।"

"प्यारी येलेना... अरे... तुम जो चाहो सो करो, पर मैं नहीं जाना चाहता। मैं फिर कहता हूं तुम अपने को हर प्रकार से खुश रखने के लिए स्वतंत्र हो। तुम चाहो तो घूंसेबाज़ी के स्कूल में अपना नाम लिखा सकती हो, मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

क्षेत्रीय कोमसोमोल कमेटी का दफ़्तर। तान्या एक दरवाज़े के सामने खड़ी है जहां बहुत से नामों की तख्तियां लगी हैं, जिनमें से एक में लिखा था, 'स्कूल और पायोनियर विभाग के प्रधान'।

तान्या बड़ी सावधानी से दरवाज़ा खोलती है और डरते डरते उन लोगों पर नज़र डालती है जो अपनी डेस्कों पर बैठ काम कर रहे हैं।

टाइपिस्ट, टाइप करना बंद करके पूछती है–

"तुम्हें किससे मिलना है?"

"मैं... मैं स्कूल तथा पायोनियर के प्रधान से मिलना चाहती हूं।" तान्या कहती है।

"'स्कूल तथा पायोनियर विभाग के प्रधान'।" टाइपिस्ट उसकी भूल सुधारने के प्रयोजन से कहती है और कमरा बता देती है, "उस कमरे में जाओ।"

तान्या बगल के कमरे का दरवाज़ा खोलती है।

"नमस्ते। क्या मैं स्कूल तथा पायोनियर के प्रधान के विभाग से मिल सकती हूं?" वह कहती है।

"मैं ही स्कूल तथा पायोनियर के प्रधान का विभाग हूं।" द्रोज्दोव उसकी ओर एकटक निहारते हुए उत्तर देता है।

"नमस्ते। मैं एक ज़रूरी काम से आयी हूं।"

"तुम्हें मुझसे कौन सा ज़रूरी काम है?"

"मैं फ़ुटबाल के बारे में कुछ कहने आयी हूं।"

"अच्छा, तो बैठ जाओ।"

उसी कमरे में। तान्या और द्रोज्दोव के सामने कुछ चाय के खाली प्याले रखे हुए हैं। प्यालों में थोड़ी बहुत चाय पड़ी जान पड़ती है।

"मैं आपके पास इसी लिए आयी हूं। बोरीस के हेड-मास्टर छुट्टी पर गये हैं और पापा काम पर, मां छुट्टी बिताने स्वास्थ्य-केंद्र गयी हैं। लड़कों को काबू में रखना ओल्गा के बस की बात नहीं है।" तान्या कहती है।

"क्या ओल्गा?"

"हां, वह पायोनियर कैम्प में एक टोली की नायिका है। इन फ़ुटबाल के खिलाड़ियों के कारण उसकी अक्ल ही हैरान है।"

द्रोज्दोव कुर्सी से उठकर टहलने लगा।

"हां, यह तो बड़ी बुरी बात है कि पड़ोसी उलाहना देते हैं। लड़कों ने खिड़कियां तोड़ी हैं और चाची माशा का मुर्गा मार डाला है। बताओ हम क्या करें?"

"आप बोरीस और उसके साथियों को बुलाकर यह हिदायत कर दें कि वे रोज़ कैम्प में उपस्थित रहा करें और उनसे कह दीजिये कि यह मूर्खतापूर्ण खेल एकदम बंद कर दें।"

"इसे बंद क्यों किया जाय? अन्य खेलों की तरह फ़ुटबाल भी अच्छा खेल है। हमने लड़कों के लिए स्टेडियम में एक फ़ुटबाल विभाग भी खोला है। मुख्य बात यह है कि खेल स्टेडियम में ही खेलना उचित है, अन्य किसी जगह इस प्रकार खेलना बेतुका है।" द्रोज्दोव सहसा तान्या के सामने रुकता है और कहता है, "सुनो, कैम्प में खेलकूद के संगठन का काम तुम अपने ज़िम्मे क्यों नहीं ले लेतीं?"

तान्या आंखें फैलाकर द्रोज्दोव को देखती रहती है।

"आह!" एक हल्की सांस लेती वह कह उठती है। द्रोज्दोव उसकी कुर्सी के हत्थे पर बैठ जाता है।

"तुम्हारे कैम्प के निकट बहुत बड़ा ऊसर पड़ा है। तुम लोग मिल-जुलकर वहां एक स्टेडियम क्यों नहीं बनाते? तुम्हारा अपना पायोनियर स्टेडियम! क्यों?"

"आह!" तान्या फिर हल्की सी सांस लेती है।

"आह करने की जरूरत नहीं है, इसपर विचार करो।"

"आह, उसमें तो गड्ढे ही गड्ढे हैं।"

"वे गड्ढे पाटे जा सकते हैं।"

"आप समझते है कि उन्हें पाटना बड़ा आसान है?"

"वास्तव में तुम इसे अकेले नहीं कर सकतीं, जितने अधिक साथी तुम्हारी सहायता कर सकें उन्हें जमाकर काम शुरू कर दो।"

"मैं लड़कियों से सहायता के लिए कह सकती हूं, पर क्या लड़के हमारी बात पर ध्यान देंगे?"

"यह तुमपर निर्भर है।"

टाइपिस्ट दरवाजे से झांकती है।

"कामरेड द्रोज्दोव, आपसे कोई मिलना चाहता है।"

"खुशी से!" द्रोज्दोव उठकर कहता है।

ओल्या अन्दर आती है। वहन तान्या को देखकर वह रुकती है।

"तान्या, तुम यहां कैसे आयीं?"

"तुम लोग एक-दूसरे को पहले से जानती हो? ओल्गा, बैठ जाओ।" द्रोज्दोव मुस्कराकर कहता है। "जरा माफ़ कीजियेगा।" वह रिसीवर उठाकर टेलीफ़ोन करता है, "कामरेड पेरेवालोव आप कैसे हैं? आपने पायोनियर कैम्प में खिलौना-घर बनवाने में कितना खर्च किया है? हां कितना?" द्रोज्दोव अचरज प्रकट करता हुआ सीटी बजाने लगता है। "कामरेड पेरेवालोव, क्या कुछ लट्टे कैम्प को आप दे सकते हैं और कुछ तख्ते तथा एक बढ़इयों की तिपाई भी? क्या कहा? अरे हां! बच्चों ही के लिए चाहिये। इसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद, बड़ी कृपा है आपकी।"

ओल्या अब भी बीच कमरे में खड़ी है।

"अरे, बैठ जाओ न।" द्रोज्दोव उसकी ओर मुड़कर कहता है।

लड़के स्टेडियम के टिकट-घर की ओर जल्दी जल्दी जा रहे हैं। टिकट-घर पर बोर्ड लगा है–'सब टिकट बिक गये'।

"कहो कैसा रहा?" बोरीस पूछता है।

"फ़िक्र मत करो।" तीमोशा उसे हिम्मत बंधाता है। "इतने पर भी हम अपने बैठने का इन्तज़ाम कर लेंगे।"

लड़के स्टेडियम की सीमा के पास एक पेड़ पर चढ़ जाते हैं। गोल-कीपर और तीमोशा यह नहीं जान पाते कि जिस शाख पर वे आराम से बैठे हैं उसके ठीक नीचे आख़िरी क़तार में येलेना दूर्मास्त्रियेवना और गाल्या की सीट रास्ते के ही निकट है।

येलेना दूर्मास्त्रियेवना दूरबीन लगाकर देखती है–

"वह रहा मेरे पति का विद्यार्थी! कितनी अजब बात है।"

बोरीस शाख पर बैठा खेल देख रहा है। जिस शाख पर वह बैठा है वह स्टेडियम के भीतर रास्ते की ग्रोर झुकने लगती है।

"वहां मैदान में क्या हो रहा है?" येलेना दूमीत्रियेवना पूछती है।

"'स्पुयाज़ीस्त' गोल की ग्रोर पेनाल्टी किक लगायी जा रही है।" गाल्या बताती है।

"मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं ग्रा रहा है।"

"यह एक प्रकार की ऐसी किक है जो गोल के निकट से मारी जाती है, गोल-कीपर ही केवल इसकी बाढ़ को रोकता है, ग्रन्य खिलाड़ी इसमें हिस्सा नहीं लेते।"

गेंद गोल से करीब ग्यारह गज की दूरी पर रख दिया गया है। बोरीस ग्रपनी गर्दन ऊंची करके ग्रागे की ग्रोर झुकता है। उसके वजन के दबाव से शाख नीचे झुकने लगती है।

एक खिलाड़ी किक मारकर गेंद गोल की ग्रोर उछालता है।

शाख एकदम नीचे झुक जाती है ग्रौर बोरीस ग्रंदर रास्ते में ग्रा गिरता है। वह झाड़-पोंछकर खड़ा होता है। उसकी ग्रोर कोई ध्यान नहीं देता।

"गो-ग्रो-ल!" पूरे स्टेडियम में ज़ोर का शोर होता है।

येलेना दूमीत्रियेवना घबरायी हुई जान पड़ती है।

"ग्रब क्या हो रहा है? क्या किसी ने ग्रच्छी किक जड़ दी?" वह पूछने लगती है।

"ग्ररे चाची, यह तो बेशक ग्राश्चर्यजनक थी। 'मेदीक' ने एक गोल चढ़ा दिया।"

"तुम्हारा इवानोव क्या कर रहा था? क्या वह घास काटने लगा था?"

"ग्ररे नहीं, वह ग्रभी ग्रपने करतब दिखायेगा!"

बोरीस की विचित्र दशा थी जैसे काटो तो खून ही न हो। टिकट-कलेक्टर उसके पास ग्राती है ग्रौर पूछती है—

"छोकड़े! तुम्हारा टिकट?"

बोरीस हड़बड़ाकर आंख मिचमिचाने लगता है।

"देखो कैसा मासूम बन रहा है।" गाल्या के निकट बैठे एक दर्शक ने व्यंग किया।

गाल्या मुड़ती है और बोरीस को देखती है।

"अरे चाची देखो। हमारे यहां की टीम का वह लड़का।"

"जनाब आपका टिकट!" टिकट देखने वाली लड़की फिर पूछती है।

"यह रहे टिकट।" गाल्या दिखा देती है।

"ठीक है और उस लड़के का कहां है?"

खिलाड़ी 'स्वयाजीस्त' गोल की ओर सिमटते हैं और फिर एक गोल हो जाता है।

येलेना द्मीत्रियेवना दूरबीन से खेल देख रही है। गाल्या उसकी गोद में बैठी है। 'तूफ़ान' टीम का गोल-कीपर गाल्या की सीट पर बैठा है, उसकी गोद में दूसरा लड़का मीशा है। उसकी बगल बोरीस की गोद में तीमोशा बैठा है।

"गाल्या अब क्या हो रहा है?"

"अरे, चाची, तुम स्वयं क्यों नहीं देख लेतीं?" गाल्या तुनककर कहती है।

"उनपर दो गोल हो चुके हैं। कहो कैसा लग रहा है तुम्हें?" येलेना द्मीत्रियेवना उत्तेजित हो उठती है। "ज़रा देखो तो गाल्या! जान पड़ता है अब 'स्वयाज़ीस्त' भी कुछ कमाल दिखायेगी। क्यों तुम्हारा क्या ख्याल है? क्या नाम है उस खिलाड़ी का... इवान सेर्गेयेविच? काफ़ी अच्छा दौड़ सकता है। देखा उस बेवकूफ़ को! गोल करने की कोशिश करनी चाहिये पर गेंद इतने ज़ोर से मारा कि पार निकल गया।"

"उसने गेंद किसी खास वजह से उस ओर फेंका है।" तीमोशा समझाता है।

"विरोधी गोल के बचाव का यह स्थान कमज़ोर है।" गोल-कीपर कहता है।

"इवानोव गलती नहीं कर सकता, वह बड़ा होशियार खिलाड़ी है।" बोरीस कहता है।

"मुझे अपने पति के विद्यार्थी से ऐसी ही उम्मीद करनी चाहिये।"

"किसका विद्यार्थी?"

"मेरे पति, मिखाईल पेत्रोविच का। देखो! देखो! वह फिर गेंद पा गया है।"

बोरीस और तीमोशा एक दूसरे को देखते हैं।

"सुन रहे हो न तुम?"

"आखिर तुम्हारे पति अच्छे उस्ताद जो हैं!"

दर्शकों के बीच फिर ज़ोर का हल्ला होने लगता है। येलेना द्मीत्रियेवना बड़े ध्यान से खेल देख रही है। इवानोव शीघ्रता से विरोधी गोल की ओर गेंद ले जाता है।

"देखो गाल्या! देखो! वह फिर गेंद लेकर बढ़ गया! ओह, कितना आश्चर्यजनक है!"

इवानोव गेंद गोल के भीतर उछाल देता है तथा गेंद जाल में जा उलझता है।

"गो-ओ-ल!" येलेना द्मीत्रियेवना खड़ी हो जाती है और उत्तेजित होकर चिल्ला उठती है।

"गो-ओ-ल!" सारे स्टेडियम में ज़ोर का स्वर गूंज जाता है।

फिर अहाते का दृश्य। डूबते सूरज की किरणें ऊपरी मंज़िल की खिड़कियों को चूमती हैं और सुनहरे प्रकाश में खिड़कियां झिलमिला रही हैं।

लड़कों के बीच घिरी येलेना द्मीत्रियेवना फाटक में घुसती है।

"लड़को," अपने दरवाज़े पर रुकती हुई वह कहती है, "अब मैं जान पायी कि तुम लोग कितना बुरा खेलते हो। सुनते हो तुम्हें अपना बाकी समय ट्रेनिंग में बिताना चाहिये।"

"हम ट्रेनिंग में ही तो समय बिताते हैं।" बोरीस उत्तर देता है। "तीमोशा! जाओ गेंद उठा लाओ।"

"और हम खाना कब खायेंगे?" गोल-कीपर पूछता है।

"खेल के बाद।"

शाम का समय। पायोनियर कैम्प का शांत खेल मंडप। ओल्गा मेज़ के पास खड़ी है, मेज़ पर अधूरा लिखा हुआ बोर्ड पड़ा है–

सुनो! सुनो! सुनो!

अपना निजी पायोनियर स्टेडियम बनाने में . . .

स्योपा, तान्या और तीन अन्य लड़कियां भी वहीं हैं। एक लड़की हाथ में कागज लेकर ओल्या के पास आती है और बताती है—

"मैंने इस फ़ेहरिस्त के बारह लोगों से बात कर ली है। कल वे सब अपनी कुदालें लेकर आ जायेंगे। ल्यूबा गोर्चोलिना ही केवल ऐसी है जो मेरी बातों में दिलचस्पी नहीं ले रही है और कहती है कि, 'क्या हम भूमि खोदनेवाले मजदूर हैं? यह काम लड़कों को करना चाहिये।' वेरा पोस्नेवा के पिता ने वेरा के बड़े भाई को हमारी मदद के लिए भेजने का वादा किया है। वे कहते हैं, 'यदि वह आनाकानी करेगा तो मैं उसकी खबर लूंगा। अहाते में शोर-गुल से तो मैं तंग आ गया हूं।'"

"हम किसी को जबरदस्ती मजबूर नहीं करना चाहते।" ओल्या कहती है, "अतः हमने सैंतीस कार्यकर्ता इकट्ठे कर लिये हैं।"

"आशा है कि नीना कुछ अन्य लोगों को इस कार्य के लिए तैयार कर लेगी।" तान्या कहती है, "वह नम्बर ग्यारह से इस विषय की बातचीत कर रही है।"

"ओल्या!" स्योपा बोल उठता है, "पहलकदमी करने वाले का क्या मतलब है? तान्या कहती है कि लड़कियां स्टेडियम बनाने का काम पहले शुरू करने वाली हैं अतः वे ही पहलकदमी करने वाली कहलायेंगी।"

"मैं क्या कहूं? नये और प्रगतिशील विचारों को जो जन्म देता है . . . जो आदमी पहलकदमी करता है . . . वह तो . . ." ओल्या खड़ी हो जाती है और स्योपा की ओर मुड़ती है, "स्योपा! अब तुम्हारे सोने का समय हो गया। अब तुम घर जाओ।"

"अच्छा ओल्या! अपना प्रभुत्व जमाकर बोरिस को प्रेरित करो कि वह इस काम को आरम्भ करे, क्यों ऐसा करोगी न?"

"कहना तो दूर रहा, मैं इस बारे में कभी सोचती तक नहीं हूं!" ओल्या ने दृढ़ता से कहा।

"अच्छा ओल्या! यदि बोरिस यह काम अपने जिम्मे नहीं लेगा तो वह पहलकदमी करने वाला न बन सकेगा क्यों?"

"स्त्योपा! क्या तुम नहीं जा रहे हो? जाओ, गोओ जाकर। वेलक वह पहलकदमी करने वाला न बन सकेगा।"

"अच्छा मैं जाता हूं। ओल्गा मैं स्वयं बोरिस को मजबूर करूंगा।" स्त्योपा कहकर चल देता है।

प्रोफ़ेसर का कमरा। मिखाईल पेत्रोविच डेस्क के पीछे बैठे काम कर रहे हैं। येलेना दमीत्रियेवना और गाल्या खिड़की पर खड़ी हैं। अहाते में दूधिया चांदनी फैली हुई है और वहां खिलाड़ियों का शोर सुनाई दे रहा है।

गेंद खिड़की के चौखट से टकराता है। प्रोफ़ेसर चौंक उठते हैं और कागजात देखना बंद कर ऊपर सर उठाते हैं। येलेना दमीत्रियेवना और गाल्या खिड़की से हिलती तक नहीं हैं।

"गोल में नहीं बल्कि इधर-उधर गेंद फेंक रहे हैं।" गाल्या बड़बड़ाती है।

"कितने बुरे खिलाड़ी हैं कि इनके खेल से चिढ़ लगती है।" येलेना दमीत्रियेवना हताश स्वर में कहती है।

प्रोफ़ेसर उन्हें आतंकित दृष्टि से देखते हैं। वे गुर्राने से लगते हैं और कुनमुनाकर फिर कागजों की ओर दृष्टि गड़ा लेते हैं।

अहाते में।

"बस, आज इतना काफ़ी है!" बोरिस कहता है।

खेल बंद हो जाता है।

"इसी का नाम है ट्रेनिंग!" गोलकीपर हांफते हुए मया माथे का पसीना पोंछकर कहता है, "मेरा सर भी क्या है जैसे ढोल।"

"मुझे अभी व्याकरण याद करना है जाकर।" सीमोनो उदासीन भाव में कहता है।

बोरिस थका-मांदा झुका हुआ कमरे में घुसता है और झटके से बत्ती जलाता है। पहले एक, फिर दूसरा जूता उतारकर फेंक देता है। वह पैंट उतारने का प्रयत्न करता है पर रुक जाता है, बिना कपड़े उतारे ही बिस्तर पर धम से गिर पड़ता है।

जब स्त्योपा कमरे में प्रवेश करता है तब बोरीस सो चुका होता है। बड़ी गंभीर मुद्रा बनाकर वह बोरीस की चारपाई के किनारे बैठ जाता है और कुछ क्षण तक उसे देखता रहता है।

"बोरीस! मैं कहता हूं, बोरीस!"

बोरीस हिलता तक नहीं है।

"बोरीस, ज़रा उठो! मुझे तुमसे बातें करनी हैं।"

बोरीस सोता रहता है।

"बोरीस, तुम अपने को पायोनियर कहलाने का दावा करते हो? ज़रा जवाब दो मुझे? खैर! यह बताओ तुम पहलकदमी करने वाला बनने का श्रेय लेना चाहते हो अथवा नहीं?"

बोरीस नींद ही में बड़बड़ाता है और बदन फैलाते हुए करवट बदलता है।

अहाते में ओल्गा और तान्या ऐसी खिड़की के पास से गुज़रती हैं जिस में से रोशनी छन रही है।

"तीमोशा अभी तक जाग रहा है।" तान्या खिड़की पर नज़र डालकर कहती है।

"उसके पास दूसरा काम ही क्या है, सारे दिन गेंद खेलता है और सारी रात जागकर व्याकरण से सर खपाता है।" ओल्गा कहती है।

तान्या खिड़की के नीचे आती है और कारनिस पर चढ़कर उसके कमरे में झांकती है।

तीमोशा खिड़की के सामने डेस्क पर औंधा सो रहा है। उसकी बगल में बंद किताब रखी है जिसपर 'व्याकरण की पुस्तक' लिखा है।

"ज़रा देखो तो उसे!" नीचे कूदकर तान्या कहती है।

दोनों बहनें अपने कमरे में प्रवेश करती हैं। बोरीस बिस्तर पर मुर्दों से बाज़ी लगाकर सो रहा है। स्त्योपा उसके पैताने सिकुड़ा खर्राटे भर रहा है।

सवेरे। सूर्य की एक किरण बोरीस के चेहरे को गुदगुदाती और चूमती आगे बढ़ रही है। वह जागकर चारों ओर नज़र दौड़ाता है। कमरे में कोई नहीं दिखाई देता। उसे यह देखकर आश्चर्य होता है कि तान्या और स्त्योपा अपने बिस्तर पर नहीं हैं।

बोरीस झटपट कपड़े पहनता है और दूसरे कमरे में प्रवेश करता है। वहां भी उसे कोई नहीं दिखाई देता। चायदानी देखता है। वह भी ठंडी पड़ी है। फिर गहरी सांस लेकर रोटी का टुकड़ा काटता है और उसे सूखी ही चबाने लगता है।

"बोरीस!" बाहर से आवाज़ आती है।

तीमोशा के अलावा टोली के सभी सदस्य अहाते में बोरीस के दरवाज़े पर एकत्र हैं और उसकी खिड़कियों की ओर निहार रहे हैं। बोरीस सामने दरवाज़े पर आ खड़ा होता है। उसके हाथ में रोटी का टुकड़ा है। उसी समय येलेना दमीत्रियेवना अपनी खिड़की से झांकती है और पूछती है–

"लड़को! तुम स्टेडियम क्यों नहीं गये?"

"हम तीमोशा का इन्तज़ार कर रहे हैं।"

"उससे कह दो कि सब को इन्तज़ार करवाना बहुत बड़ा गुनाह है। जानते हो, तुम लोगों को देर हो जायेगी।"

वह खिड़की से हट जाती है।

तीमोशा अहाते में दौड़ता हुआ आता है।

"मामा और पापा ने मुझे रोक रखा था। वे व्याकरण मेरे दिमाग में ठूंस रहे थे और मेरी लम्बी खबर ले रहे थे।" उसने बताया।

"फिर व्याकरण के कारण खबर ली गयी तुम्हारी?" बोरीस ने गंभीरता से पूछा।

"हां। मैं रात में जागकर याद न कर सका था।"

"तीमोशा, यह तुम्हारे लिए बड़ी बुरी बात है। व्याकरण..."

"अरे भाड़ में जाय तुम और तुम्हारा व्याकरण! उस व्यक्ति के लिए व्याकरण का क्या महत्व जो कुछ और ही महत्वाकांक्षाएं रखता है?"

"कौन सी महत्वाकांक्षाएं?"

"मैं तो सेंटर फ़ारवर्ड बनना चाहता हूं! इसी लिए मैं कामा और विराम पर क्यों माथा-पच्ची करूं? आओ जल्दी चलें, नहीं तो देर हो जायेगी!"

लड़के सड़क पर दौड़ लगा रहे हैं।

एक फाटक दिखाई देता है जिसपर 'स्व्याजीस्त स्टेडियम' का बोर्ड लगा है। कुछ लड़कों का झुंड स्टेडियम के बाहर तेज़ी से निकलता है और 'तूफ़ान' टीम की ओर बढ़ता है।

बोरीस और उसकी टीम धीरे धीरे चलने लगती है।

"देखो 'धड़ाका' टीम जा रही है।" तीमोशा कहता है।

"अरे तुम लोग कहां जा रहे हो?" बोरीस उनसे चिल्लाकर पूछता है।

"वे उन लोगों का नाम नहीं लिखते जो बिना हाथ-मुंह धोये और बिना कंघी किये चले आये हैं!" 'धड़ाका' टीम के खिलाड़ी उत्तर देते हुए दूर निकल जाते हैं।

'तूफ़ान' टीम के लड़के एक दूसरे को देखने लगते हैं। वे घबराये से मालूम देते हैं।

"तुमने अपनी गर्दन कब धोयी थी?" बोरीस, तीमोशा से पूछता है।

"अरे अभी हाल में ही धोयी थी। धूप पड़ती रहने के कारण ऐसी लगती है।"

बोरीस अंगुलियां थूक से भिगोकर तीमोशा की गर्दन पर रगड़ता है। मैल छूटने से सफ़ेद धब्बा पड़ जाता है।

"अच्छा, सब लोग पीछे लौटो!" बोरीस आज्ञा देता है।

टीम फिर पीछे सड़क पर तेज़ी से चल पड़ती है। शीघ्रता से दृश्य बदलते हैं।

बोरीस धुली कमीज़ और लाल नयी टाई पहनता है।

गोल-कीपर शीशे के सामने खड़ा सावधानी से गीले बालों पर कंघी कर रहा है।

तीमोशा कमर तक नंगा गीले झामे से रगड़-रगड़कर गर्दन साफ़ करता है।

"तीमोशा, जल्दी करो!" अहाते से आवाज आती है।

"अभी आया!" अहाते में जहां अन्य लड़के खड़े इन्तजार कर रहे हैं वहां तीमोशा की आवाज सुन पड़ती है। अब उनका हुलिया ही बदल गया था। लड़के बड़े साफ-सुथरे, चमचम दिखाई दे रहे हैं।

येलेना दूमीत्रियेवना खिड़की से झांकती है और कहती है—

"क्यों तुम लोग अभी तक यहीं हो?"

"हम तीमोशा का इन्तजार कर रहे हैं।" बोरीस उत्तर देता है।

"लड़को! तुम्हारे लिए मैंने इतनी जहमत उठाकर स्टेडियम के लोगों से बात की और तुम... शायद तुम्हारी देख-रेख के लिए नर्स रखने की जरूरत पड़ेगी? देखो बच्चो, इतनी लापरवाही ठीक नहीं है!"

तीमोशा अहाते में दौड़ आता है।

लड़के सड़कों पर दौड़ रहे हैं।

वे स्टेडियम के फाटकों से भीतर की ओर झपटकर जा रहे हैं। भीतर लड़कों की भीड़-भाड़ है। कुछ स्टैंड में बैठे हैं और कुछ मैदान के इर्द-गिर्द चहलकदमी कर रहे हैं। मैदान के किनारे दो मेजें हैं जिनके आस-पास लड़कों की काफ़ी भीड़ इकट्ठी है।

"नाम किस स्थान पर लिखे जा रहे हैं?" बोरीस ने वहां एक वयस्क व्यक्ति से पूछा।

"वहां उस मेज पर।"

एक मेज के सामने लगी लम्बी कतार में लड़के खड़े हो जाते हैं।

"क्या यहां नाम लिखे जा रहे हैं?" बोरीस ने आगे खड़े लड़के से पूछता है।

"हां, पर ये लोग स्कूल रिपोर्ट भी देखते हैं।"

"क्या मतलब है तुम्हारा स्कूल रिपोर्ट से?"

"ये तुम्हारे नम्बर भी देखेंगे। यदि इम्तहान में ठीक नम्बर नहीं आये होंगे तो ये ट्रेनिंग के लिए भर्ती न करेंगे।"

'तूफ़ान' टीम के लड़के एक दूसरे का मुंह ताकने लगते हैं।

"लौट चलो!" बोरीस अपनी टीम को आज्ञा देता है। लड़के फिर वापस आते हैं।

तीमोशा के अलावा सभी वापस आते हैं। वह अजीब द्विविधा में पड़ जाता है। उसके चेहरे पर परेशानी के भाव नजर आते हैं।

बोरीस की टीम भागकर फिर सड़क पार करती है पर तीमोशा अभी तक स्टेडियम ही पर खड़ा है। सहसा उसको कोई बात सूझ जाती है। उसके चेहरे पर पहले कुछ चालाकी, फिर प्रसन्नता के भाव नजर आते हैं, वह घर की ओर दौड़ जाता है।

लड़के अहाते में आते हैं और अपने अपने घरों में घुसते हैं। तीमोशा भी दौड़ा हुआ आता है, पर अपने घर के बजाय सामने के दरवाज़े में घुसता है।

प्रोफ़ेसर का कमरा। येलेना द्मीत्रियेवना खिड़की के बाहर नजर दौड़ाती है। सहसा उनकी आंखें क्रोध और आश्चर्य भाव से फैल जाती हैं।

वह झांककर देखती है कि लड़के फिर अहाते में इकट्ठे हैं और उनके हाथों में अपनी अपनी रिपोर्टें हैं।

"इस तरह काम न चलेगा, कतई न चलेगा काम।" वह जोर से बड़बड़ाती है, फिर पति की ओर मुड़कर कहती है, "मीशा, गाल्या पायोनियर कैम्प गयी है और मैं इन लड़कों के साथ दौड़कर स्टेडियम जा रही हूं। यह सरासर ज्यादती है!"

प्रोफ़ेसर येलेना द्मीत्रियेवना को जाते हुए देखते हैं।

"'लड़कों के साथ दौड़कर स्टेडियम जा रही हूं।'" वह धीरे से दोहराते हैं, "कहती है 'दौड़कर जा रही हूं'।"

लड़के अहाते में इन्तज़ार कर रहे हैं।

"कहां गया तीमोशा? उसे कहां ढूंढा जाय?" बोरीस पूछता है। सहसा उसके भावों में परिवर्तन दिखाई देता है, "दोस्तो, वह व्याकरण में फ़ेल हो गया था! है न यही बात?"

गोल-कीपर अपने सर पर चपत जमाकर कहता है—

"अरे, वह तो स्टेडियम में ही रह गया था।"

येलेना द्मीत्रियेवना दरवाज़े से बाहर आती है। वह अपनी घड़ी देखती और खीझती हुई लड़कों से कहती है–

"फ़ौरन यहां से चल दो, सुन रहे हो न? ग्यारह बजने में केवल पांच मिनट रह गये हैं।"

लड़के सड़क की ओर झपटकर चल देते हैं और येलेना द्मीत्रियेवना उनके पीछे जाती है।

तीमोशा दरवाज़े के सामने सीढ़ी पर खड़ा है और ज़ोर से घंटी का बटन दबा रहा है।

घंटी ज़ोर से घनघना उठी, पर ल्योवा ने दरवाज़ा खोलने में शीघ्रता न की। वह डेस्क पर बैठा किसी से बातें कर रहा है–

"नहीं, उन खिलाड़ियों से अभी बातें न हो सकी हैं, पर आज ही मैं उनसे बातें करूंगा। मैं उनसे यह हंगामा बंद करने के लिए कहूंगा। मिखाईल पेत्रोविच, मैं आपके पास अवश्य आऊंगा, अच्छा धन्यवाद।"

वह रिसीवर रख देता है और कमरे के बाहर आता है। वह तीमोशा के साथ लौटता है। तीमोशा उत्तेजित दिखाई देता है।

"तीमोशा, तुम अच्छे मौके से आ गये, मैं तुमसे बात करना चाहता था।"

"ल्योवा ज़रा ठहरो! बड़ी अनोखी घटना हो गयी है। किसी वजह से मेरी स्कूल रिपोर्ट तुम्हारी से बदल गयी है, यानी मेरी तुम्हारे पास और तुम्हारी मेरे पास आ गयी है। देखो न इसे!" तीमोशा अपनी रिपोर्ट बिल्कुल उसकी आंख तक ले जाता है, फिर हटा लेता है।

"रिपोर्ट डेस्क की दाहिनी दराज़ में है।" ल्योवा कहता है।

तीमोशा मेज़ की दराज़ खोलता है और रिपोर्ट बदल लेता है।

"तीमोशा!" ल्योवा गंभीरता से कहना आरम्भ करता है। "मनुष्य के लिए कौन सी वस्तु ज़्यादा उपयोगी है– पैर अथवा सिर?"

"इस समय मेरे लिए तो पैर ही ज्यादा उपयोगी है!" तीमोशा कहता है और कमरे से बाहर निकल जाता है।

स्टेडियम में। कमेटी की मेज़ से भीड़ जल्दी जल्दी छंट रही है।

मेज़ के पास बैठा व्यक्ति लड़कों के नाम लिखता है, रिपोर्ट देखता है, फिर उन्हें वापस कर देता है। बोरीस लाइन में सब से पीछे है। उससे नाम पूछा जाता है।

"तुम्हारा नाम?"

"बोरीस पाइकोव।"

"तुम्हारी रिपोर्ट। अच्छा, हर चीज़ दुरुस्त है।"

"मेरा भी नाम लिख लो।" तीमोशा सहसा मेज़ पर आकर कहता है। सारी टीम आश्चर्य में पड़ जाती है।

"तुम्हारा नाम?"

"ल्योवा ईवोल्गीन।"

"तुम्हारी रिपोर्ट कहां है? बहुत अच्छे नम्बर हैं तुम्हारे! लड़को, दूसरी मेज़ पर जाओ।"

येलेना द्मीत्रियेवना स्टैंड पर से लड़कों को दूसरी मेज़ की ओर जाते देखती है।

"जानते हो तुम कौन हो? तुम पक्के धोखेबाज हो! समझ गये न? दूसरों के मान-सम्मान को अपना बताने वाले।" बोरीस तीमोशा से कहता है।

"ल्योवा ही दूसरों के मान-सम्मान अपना बताने वाला है। खेलूंगा मैं पर नाम होगा उसका।"

दूसरी मेज़ पर शिक्षक और डाक्टर बैठे हैं। लड़के कमर तक का भाग उघाड़ देते हैं। डाक्टर लड़कों की जांच करता है।

"क्या काफ़ी समय से फ़ुटबाल खेलते आये हो?" डाक्टर पूछता है।

"एक जमाने से खेल रहे हैं हम लोग, यही समझिये हमने जून से खेलना आरम्भ किया है।" तीमोशा उत्तर देता है।

"और तुम लोग क्या काफ़ी खेलते-कूदते हो?"

"हां दिन में क़रीब ग्राठ घंटे।" बोरीस कहता है।

"ग्रौर ग्रब से हम दिन में बारह घंटे खेलेंगे।" गोल-कीपर कहता है।

"वास्तव में इतना खेलने से तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक न रह सकेगा।" डाक्टर कहता है ग्रौर फिर बोरीस को संबोधित करता है, "ग्रच्छा, तुम कितने ग्रर्से से इसी प्रकार खेलते ग्राये हो?"

"कल से खेल रहा हूं इस प्रकार।"

"तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये। वे तुम्हें लेंगे नहीं।" तीमोशा फुसफुसाता है।

"ग्रौर कौन से खेल तुम खेलते हो?" शिक्षक पूछता है। "क्या सवेरे व्यायाम करते हो?"

"नहीं... सवेरे ग्रांख खुलते ही हम लोग फ़ुटबाल खेलने के लिए भाग खड़े होते हैं।"

"ऐसा लगता है कि तुम में से बहुतों को बैरंग वापस भेजना पड़ेगा।"

"ऐसा क्यों डाक्टर?"

"तुम लोगों ने खेलने में ही ग्रपनी काफ़ी शक्ति नष्ट कर दी है।"

"ग्राप चाहें तो हमारी शक्ति की परीक्षा कर सकते हैं, हम केवल देखने ही में ऐसे लगते हैं।"

"ग्रच्छी बात है हारिज़ोंटल बार में हाथ रखकर ग्रपना भार ऊपर-नीचे करो।" शिक्षक बोरीस की ग्रोर मुड़कर कहता है।

बोरीस बार तक जाता है, उछलकर बार हाथ में ले कुछ देर तक शरीर ऊपर-नीचे करता रहता है।

"ग्रच्छा ग्रब तुम करो।" शिक्षक तीमोशा से कहता है। तीमोशा बड़ी मुश्किल से ग्रपने को ऊपर तक खींच पाता है।

"ग्रच्छा तुम जरा ग्रपने हाथ दिखाग्रो।"

गोल-कीपर बार पर निरुपाय लटककर रह जाता है।

"सारी टीम की बदनामी करा रहा है।" बोरीस बड़बड़ा उठता है।

दृश्य एक के बाद एक जल्दी जल्दी बदलते जाते हैं। एक लड़का हारिज़ोंटल बार में उद्दण्ड भाव से ज़ोर लगाकर लिपट जाता है। लाख हाथ पैर चलाने पर भी वह

उचित रूप से व्यायाम नहीं कर पाता। जब निराश हो जाता है तो लोग सहारा देकर उतार लेते हैं। दूसरा लड़का बक-हार्स पर उछलने की कोशिश करता है पर उससे टकरा जाता है। स्टैंड में खड़े लोग हंस पड़ते हैं। येलेना द्मीत्रियेवना क्रोधित और परेशान दिखाई देती है।

"लड़को, मेरी बात सुनो," शिक्षक बड़े ही गम्भीर स्वर में बोल उठता है, "यदि तुम अच्छे खिलाड़ी बनना चाहते हो तो तुम्हें अन्य खेलकूद और व्यायाम में हिस्सा लेना चाहिये। फ़ुटबाल के खिलाड़ी के लिए आवश्यक है कि अच्छा दौड़नेवाला हो, उसमें सहन शक्ति, यथार्थता और सही निर्णय की क्षमता होना आवश्यक है। यह गुण काफ़ी परिश्रम के पश्चात् प्राप्त होते हैं।"

"हम भी तो यह करते रहे हैं। हम लोगों ने काफ़ी परिश्रम किया है।"

"नहीं! इसे कठिन परिश्रम नहीं कहा जा सकता। तुम लोग केवल गेंद के पीछे दौड़ते रहे हो। तुम लोगों ने इसके अलावा और कुछ नहीं किया। तुमने इसमें अपनी शक्ति क्षीण कर दी है। अभी तुम लोग इस काबिल नहीं हुए कि तुम्हें इस विभाग में लिया जाय।" शिक्षक इतना कहकर कुछ क्षण चुप रहता है, फिर बोरीस की ओर मुड़कर कहता है, "हां तुम ट्रेनिंग के योग्य हो और रुक सकते हो।"

"क्या बिना अपने साथियों के? नहीं, धन्यवाद, मैं अकेले रहना न पसंद करूंगा।" बोरीस उदासीन भाव से कहता है और धीरे से अपनी टीम के साथ चल देता है।

द्रोज़्दोव मेज़ के पास आकर पूछता है–

"कहो क्या हाल है?"

"हमारे पास काफ़ी खिलाड़ियों की सूची है, अब जगह नहीं रही।" शिक्षक उत्तर देता है।

येलेना द्मीत्रियेवना पास आ जाती है।

"क्षमा कीजियेगा।" वह घबराहट के स्वर में कहती है। "मैं 'तूफ़ान' टीम के लड़कों के बारे में पूछना चाहती हूं।"

"अरे 'तूफ़ान'...'तूफ़ान'..." द्रोज़्दोव अपनी याददाश्त टटोलते हुए कहता है, "वही टीम न, जो मोस्कोवस्काया सड़क से आयी थी?"

"हां वही टीम।"

"उस टीम को ट्रेनिंग के लिए भर्ती नहीं किया गया। वे लड़के कमज़ोर थे।" शिक्षक कहता है।

"मैं जानना चाहती हूं कि आखिर वे कहां खेलें? क्या हमेशा सड़क पर ही हंगामा मचाते रहें?"

"उन्हें फुटबाल कतई न खेलना चाहिये। उन्हें विभिन्न प्रकार के शारीरिक व्यायाम करना चाहिये। यदि हम सब को इसी प्रकार भर्ती कर लें, तो इतने स्टेडियम कहां से बनाये जा सकेंगे।"

"और उन्हें व्यायाम की शिक्षा कहां मिलेगी? क्या आप समझते हैं उस ग्रहाते में वे व्यायाम कर सकेंगे?"

"गुस्ताखी माफ़ हो। लेकिन आपको इन लड़कों की क्यों इतनी चिंता है?" द्रोज्दोव पूछ बैठता है, "आप अध्यापिका हैं अथवा समाज सेविका?"

"मैं... मुझे आप अब समाज सेविका ही समझ लीजिये।"

"तब तो आपको मालूम होना चाहिये कि आपके पड़ोस में क्या हो रहा है।"

"क्या मतलब है आपका?"

"मैं चाहता हूं कि आप नगर पायोनियर कैम्प नम्बर सात में ज़रूर पधारें, तब आप सब कुछ समझ जायेंगी। शायद आप कुछ सहायता भी कर सकें। आप काफ़ी उत्साही मालूम देती हैं।"

स्टेडियम के बाहर 'तूफ़ान' टीम के उदास खिलाड़ियों की भेंट 'धड़ाका' टीम के प्रसन्न खिलाड़ियों से होती है।

"देखो बेचारों को, इन्हें भर्ती तक नहीं किया गया। अरे ज़रा नज़र तो सामने करो। भाई साल दो साल की ट्रेनिंग के बाद शायद तुम लोग हमारी टीम के बराबर खेलने लगोगे। क्यों है न यही बात?" 'धड़ाका' टीम का कप्तान उनपर व्यंग करता है।

'तूफ़ान' टीम चुपचाप चल देती है।

आत्मनिर्भर का रसोईघर।

प्रोफ़ेसर करुण भाव से व्याकुल होकर मुर्गी की उस लाश की ओर देखते हैं। सो मुर्गी पकानी न गयी थी। तभी दरवाज़े की घंटी बजती है।

प्रोफ़ेसर एक हाथ में मुर्गी लिये हुए दूसरे हाथ से दरवाज़ा खोलते दिखाई देते हैं। ल्योवा अन्दर आता है।

"मिखाईल पेत्रोविच, शुभप्रभात।"

"हलो! आओ रसोईघर में चलें। दुःख! घर की मालकिनें मुझे अनाथ छोड़कर सैर-सपाटे को चल दी हैं। इसलिए मुझे आज स्वयं खाना पकाना पड़ रहा है।"

प्रोफ़ेसर रसोईघर में लौट आते हैं और उबलते पानी के बर्तन को ध्यान से देखते हैं।

"क्या! तुम्हारी क्या राय है इस मुर्गी को ठंडे या गर्म पानी में डालना चाहिये?"

"मेरे ख्याल से तो इसे खौलते पानी में ही डालना ठीक रहेगा।" ल्योवा अनिश्चित भाव से कहता है।

"यही मैं भी सोच रहा था।" प्रोफ़ेसर मुर्गी को बर्तन में डालते हुए कहते हैं।

"लेकिन मां पकाने के पहले पंख झुलसा डालती थीं।"

"हां। तुम ठीक कहते हो।" प्रोफ़ेसर मुर्गी बर्तन से निकालकर लपट के ऊपर उसके पंख झुलसाने लगते हैं। "जानते हो बच्चे, मेरा इरादा है, यदि तुम्हारे पापा ने तुम्हें अनुमति दे दी तो आने समय मैं तुम्हें भी राजकीय फ़ार्म सेट की परीक्षा के लिए ले चलूंगा।"

"आह! तब तो बहुत सुन्दर रहेगा, मिखाईल पेत्रोविच।" ल्योवा प्रसन्नता से चिल्ला उठता है।

"मैं तुम्हारे जैसा सहायक साथ रखकर खुश होऊंगा।"

"मिखाईल गेर्गेयेविच, आप नहीं जानते कि इसने मुझे कितना..." ल्योवा कहता है। कमरे में सहसा गूंजती झनझनाहट के कारण वह बीच में ही रुक जाता है।

"बालक, क्षण भर इसे पकड़ लो, मैं अभी आया।" इतना कहकर प्रोफ़ेसर वह मुर्गी ल्योवा के हाथ में पकड़ा देते हैं और रसोईघर से बाहर चले जाते हैं।

कमरे में रखे सेट का रिसीवर वे उठा लेते हैं, "हां, क्या बात है? इवान सर्गेयेविच बोल रहे हैं क्या?" वे रुखाई से बोल उठते हैं।

रेडियो लेबोरेटरी। इवान सर्गेयेविच उस ओर रिसीवर पर बात कर रहा है और बहुत से विद्यार्थी उसे घेरे हुए हैं।

"मैं आपकी अनुमति से दस्तखत कराने आना चाहता हूं ताकि मुझे कारखाने से अपरेंटस प्राप्त हो सके।"

"हां! मैं घर पर ही रहूंगा।" प्रोफ़ेसर ने रूखे ढंग से उत्तर देकर रिसीवर रख दिया।

इवानोव भी रिसीवर रख देता है।

"मालूम देता है कि बुड्ढे प्रोफ़ेसर इस समय मुझसे उखड़े हुए हैं।" गहरी सांस लेकर कहता है।

"क्यों, बात क्या है?" उन विद्यार्थियों में से एक पूछता है।

"मेरा ख्याल है कि वे इन लड़कों के कारण चिढ़ गये हैं।"

इवानोव लेबोरेटरी के बाहर आता है। दो लड़के उसकी ओर आते दिखाई देते हैं। इवानोव पीछे मुड़ता है और सड़क के उस पार निकल जाता है। लेकिन वह लड़कों की आंख बचाकर नहीं निकल पाता। उनमें से एक बालक क्षण भर के लिए रुकता है।

"देखो, वह इवानोव है! वह 'स्वयाजीस्त' टीम के राइटविंग का खिलाड़ी है!" बालक अपने साथी से कहता है और वे दोनों इवानोव के पीछे दौड़ते हैं।

इवानोव दूसरी सड़क पर चल रहा है और उसके पीछे-पीछे लड़कों का झुंड है।

"अरे! क्या मामला है? कौन है वह?" घर के सामने खड़े गप-शप करनेवाले लड़के पूछने लगते।

"इवानोव, 'स्व्याज़ीस्त' का राइटविंग का खिलाड़ी।" दबी हुई आवाज़ उत्तर मिलता है।

स्टेडियम से 'तूफ़ान' टीम के खिलाड़ी उत्साहहीन और निराश लौटे चले रहे हैं। बोरीस और तीमोशा सब के पीछे रह गये हैं।

"तीमोशा..." बोरीस पुकारता है।

"हां, क्या है?"

"क्या तुम समझते हो कि मैं अपनी टोली का बुरा नायक हूं?"

"ऐसी बात नहीं है बोरीस, पर तुम, हमारे खेलकूद के कार्यक्रम का सही तरी मे संचालन न कर पाये थे।"

बोरीस कुछ देर चुप रहता है पर फिर साथी को पुकारता है—

"तीमोशा..."

"हां।"

"तुम क्या सोचते हो, अब क्या करना है?.."

वह क्षण भर रुकता है और दूर से ही देखता है कि लड़के पायोनियर कैम्प फाटक के पास एक बोर्ड पढ़ रहे हैं।

बोरीस और तीमोशा लड़कों के पास आ जाते हैं और बोर्ड पढ़ते हैं—

सुनो! सुनो! सुनो!

अपना निजी पायोनियर स्टेडियम

बनाने में सहायता करो!

अपने अपने फावड़े लेकर

जल्दी से यहां आ जाओ!

लड़के एक दूसरे का मुंह ताकने लगते और फाटक की ओर बढ़ते हैं।

वे कैम्प से गुज़र रहे हैं कि उन्हें कैम्प-जीवन संबंधी गीत की लय सुनाई है। वह गीत कुशल दस्तकारों और बुद्धिमान भावी नागरिकों के बारे में है। ऊबड़-खाबड़ मैदान में बहुत से पायोनियर इकट्ठे हैं। इनमें अधिकतर लड़कियां ही वे ऊंची-नीची भूमि बराबर कर रही हैं, स्ट्रेचर में भरकर मिट्टी लाती और गड्ढों

पाटती रहती हैं। ओल्गा लड़कों के निकट आ जाती है। वह बाल बिखेरे और उत्तेजित दिखाई देती है।

"आखिरकार तुम लोग आ ही गये! बड़ी अच्छी बात है!" वह प्रसन्नता दिखाते लड़कों से कहती है! "तान्या, इधर देखो तुम्हारी सहायता के लिए यह लोग आ गये।"

तान्या मुंह पर बिखरे बालों को पीछे झटककर उन्हें देखती है और कहती है—

"कुछ फावड़े लाकर यह ऊंची भूमि बराबर करो।"

बोरीस अपने दोनों हाथ घुटनों पर रख लेता है और व्यंगपूर्ण मुस्कान बिखेर देता है तथा कहता है—

"अच्छा, ऐसी बात? पर तुम होती कौन हो हुक्म चलाने वाली?"

"वह स्टेडियम निर्माणकार्य की व्यवस्थापिका है, समझे।" स्त्योपा कहता है।

"तुम्हें अपने बड़ों से इस प्रकार न बोलना चाहिये।" ओल्गा मुस्कराकर कहती है।

बोरीस कुछ क्षण खड़ा का खड़ा रह जाता है और कहता है—

"आओ चलें और कुछ फावड़े लेते आयें!"

लड़के फावड़े लेने चल देते हैं। येलेना द्मीत्रियेवना उनकी ओर आती दिखाई देती है।

"लड़को, तुम जा कहां रहे हो? इन लोगों के साथ तुम लोग काम क्यों नहीं करते?"

"हम फावड़े लेने जा रहे हैं।" तीमोशा कहता है।

"अच्छी बात है, जल्दी लेकर आओ!"

"ऐसे कुछ काम न चलेगा।" गोल-कीपर ऊबते हुए कहता है।

"क्या मतलब? कैसे समझते हो काम न चलेगा?" बोरीस पूछता है।

"ऐसे स्टेडियम से क्या फ़ायदा जहां किसी शिक्षक की व्यवस्था न हो? हमें अच्छी तरह तालीम न मिलेगी तो खेल और भी चौपट हो जायेगा।"

"हां। बात तो सही है, बिना शिक्षक के भला कैसे काम चलेगा?" तीमोशा गंभीरता से मत प्रकट करता है। "बिना शिक्षक के..." वह वाक्य पूरा नहीं कर

पाता कि वहां से जाती हुई येलेना द्मीत्रियेवना की ओर देखता है। "अरे! लड़को, मैंने इस बारे में भी विचार किया है! मैं बहुत अच्छे शिक्षक की व्यवस्था करने जा रहा हूं!"

इवानोव प्रोफ़ेसर के दरवाज़े पर दिखाई देता है। उसके पीछे करीब चालीस लड़कों का झुंड है।

इवानोव दरवाज़े में घुस जाता है, भीड़ उत्तेजित होकर चिल्ला उठती है, "इवानोव! राइटविंग का खिलाड़ी, इवानोव!"

उसी समय, इवानोव शर्माया शर्माया सा प्रोफ़ेसर के सामने पहुंचता है, प्रोफ़ेसर बड़ी रुखाई से पेश आते हैं।

"महाशय।" प्रोफ़ेसर इवानोव की ओर कागज़ बढ़ाते हुए कहते हैं। "जब आप राजकीय फ़ार्म को सारा सामान सौंप दें तो हमें सूचित करें।"

"ज़रूर सूचित करूंगा, मिखाईल पेत्रोविच।"

ल्योवा मुर्गी हाथ में लिये आता है।

"मिखाईल पेत्रोविच यह ज़रा जल गयी है।"

"कोई हर्ज नहीं। कामरेड इवानोव, ल्योवा से मिलिये। यह बड़ा ही होनहार बालक है, इसे हमारे आविष्कार में काफ़ी दिलचस्पी है और सब से सौभाग्य की बात तो यह है कि यह अन्य लड़कों की तरह फ़ुटबाल में रुचि नहीं रखता।"

ल्योवा सादर अभिवादन करता है, वह द्विविधा में पड़ जाता है कि मुर्गी कहां रखी जाय।

"बाहर यह कैसा शोर-गुल मच रहा है?" खिड़की की ओर नज़र दौड़ाते हुए प्रोफ़ेसर कहते हैं।

"विद्यार्थी बाहर खड़े हैं..." इवानोव धीरे से बड़बड़ाता है।

"क्या कहा?"

"मेरा मतलब...लड़कों के उस झुंड से है जो मेरे पीछे पीछे यहां तक आया है।"

"तुम्हें उनको यहां तक न लाना था, कामरेड इवानोव। यह बिल्कुल बेकार का काम है।"

हॉल की घंटी बजती है।

"मैं जाकर दरवाज़ा खोलता हूं।" इवानोव कहता है।

"तुम चिंता मत करो।" प्रोफ़ेसर कहते हैं।

सामने का हॉल। मिखाईल पेत्रोविच दरवाज़ा खोलते हैं और आश्चर्य से पीछे हट जाते हैं। 'तूफ़ान' टीम के लड़के दरवाज़े पर एकत्र दिखाई देते हैं।

"कामरेड शिक्षक, नमस्ते।" बोरीस धीरे से कहता है।

"बड़ी बुरी बात है, ढकेलना बंद करो!" पीछे से धक्का देनेवाले लड़कों से गोल-कीपर कहता है।

मिखाईल पेत्रोविच परेशान से नजर आते हैं।

"हुंः... क्या चाहते हो तुम लोग? मैं क्या कर सकता हूं तुम्हारे लिए?"

"हम आपसे एक प्रार्थना करने आये हैं।" बोरीस कहता है।

"हां... बताओ?"

"हम आज फ़ुटबाल विभाग में नाम लिखाने गये थे, लेकिन उन लोगों ने हमें भर्ती नहीं किया।"

"हां... तब?"

"हममें अभी ट्रेनिंग की कमी है, हम खेलते जरूर रहे थे पर हमारा तरीका गलत था।" तीमोशा बोल उठा।

"लेकिन मैं... तुम्हारा मतलब नहीं समझा।"

"अच्छे खिलाड़ी बनने के लिए केवल फ़ुटबाल ही नहीं बल्कि हमें हर तरीके के खेल खेलने चाहिये।" बोरीस कहता है।

"मेरा मतलब है कि वॉलीबाल, छलांग लगाना, व्यायाम आदि।" तीमोशा फिर बोल उठता है।

"इसी लिए हम आपसे प्रार्थना करने आये हैं कि आप हमें उनकी तालीम दें।"

"क्या कहा?"

"हमें आप इनका तरीका सिखायें, और बतायें कि हर तरीके के व्यायाम किये जायं और छलांग कैसे लगायी जाय।"

"यह सब क्या तमाशा है? मैं ही तुम्हें सिखाने के लिए मिला था? अच मैं तुम्हें कूद-फांद सिखाऊंगा?"

लड़के शर्मिंदा जान पड़ते हैं। वे न जानते थे कि उन्हें कोरा जवाब मिल जायेग

"बेशक आपके पास इतना समय न होगा... आपकी पत्नी से पता चला कि आप व्यायाम के शिक्षक रह चुके हैं, इसलिए हमने आपसे प्रार्थना की थी।"

"मेरे समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है! यह कैसी अटपटी बात है! ह बताओ तो, किसने कहा था तुमसे?"

"आपकी पत्नी ने," तीमोशा उत्तर देता है, "हम लोग साथ साथ 'स्वयाज़ीस्त' टीम को उत्साहित कर रहे थे।"

प्रोफ़ेसर हैरत में पड़ जाते हैं।

"जब हम 'स्वयाज़ीस्त' टीम को उत्साहित कर रहे थे तब उन्होंने बताया कि आपने 'स्वयाज़ीस्त' के प्रसिद्ध खिलाड़ी इवानोव को शिक्षा दी थी।"

मिखाईल पेत्रोविच कमरे का दरवाज़ा खोलते हैं।

"कामरेड इवानोव, ज़रा इधर तो आना!"

इवानोव कमरे से बाहर आता है। उसके बाहर आने से उत्पन्न प्रभाव के वर्णन की कोई आवश्यकता नहीं।

"ज़रा मेहरबानी करके इन लड़कों से पूछो, वे क्या चाहते हैं?"

"मिखाईल पेत्रोविच, मैं आपका आशय नहीं समझा।"

"बात दरअसल यह है कि हम एक दूसरे को नहीं समझ पा रहे हैं, कामरेड इवानोव। मेरे बजाय तुम उन लड़कों के अधिक निकट हो। तुम फ़ुटबाल के खिलाड़ी हो और ये भी उसी थैली के चट्टे-बट्टे हैं। इनका शोर-गुल मेरे अध्ययन में हमेशा विघ्न डालता रहता है। पर तुम इसके आदी हो और शायद इससे विचलित भी न होगे। यदि खिड़की पर भी गेंद बार बार आकर गिरता रहे तो भी तुम्हें न अखरेगा। बेशक तुम्हारे लिए यह अनोखी घटना न होगी। कहना यह चाहिये कि तुम्हें तो विज्ञान के विकास से फ़ुटबाल खेलना अधिक महत्वपूर्ण मालूम देता है। इससे बढ़कर अधिक

अनोखी बात तो मुझे यह मालूम देती है कि मेरी पत्नी जो अपने को आदरणीय महिला समझती है दिन भर स्टेडियम में छायी रहती है। और जैसा कि इन लड़कों ने बताया है कि वह खिलाड़ियों को उत्साहित करती है। इसे समझने में मुझसे अधिक तुममें क्षमता है। भला, मैं पुराने ढंग का व्यक्ति जो ठहरा, सो मैं यह कैसे समझ पाऊंगा?"

बोरीस और तीमोशा के कंधे पकड़ इवानोव उन्हें बाहर घसीट ले जाता है और अपने पीछे का दरवाज़ा बंद करता है।

"अच्छी बात है आओ चलें, हम लोग ऊपर चलकर बातें करें।" वह गुस्से में ऊपर की सीढ़ियों की ओर इशारा करके कहता है।

प्रोफ़ेसर का कमरा। ल्योवा खिड़की से झांककर देखता है। नीचे शोर-गुल सुनाई देता है। वह प्रोफ़ेसर की ओर मुड़कर कहता है–

"मैं जाता हूं और उनसे यहां से जाने को कहूंगा।"

"बहुत अच्छा, इसके लिए मैं तुम्हारा आभारी होऊंगा।"

येलेना द्मीत्रियेवना और गाल्या जल्दी से अपने घर की ओर आती दिखाई देती हैं।

"ख्याल तो बड़ा सुन्दर है।" येलेना द्मीत्रियेवना कहती है। "लेकिन वहां काफ़ी लोग नहीं हैं, मैं तो बराबर यही कहूंगी कि उपस्थित काफ़ी नहीं हैं। अब से हम कोशिश करेंगे कि अधिक से अधिक इकट्ठे हो सकें।"

वे अहाते में घुसती हैं और आश्चर्य से रुक जाती हैं।

लड़के ल्योवा को सीढ़ियों से घसीट रहे हैं और वह भर्रायी हुई धीमी आवाज़ में कुछ कह रहा है।

"जमाओ एक धौल इसकी खोपड़ी पर!"

"अपने को बड़ा तीसमारखां समझता है!"

ल्योवा की खासी मरम्मत होती है।

"हुं: ठहरो तुम लोग! तुम ऐसा कतई नहीं कर सकते!" मिखाईल पेत्रोविच खिड़की पर झुके उत्तेजित होकर कहते हैं।

येलेना दमीत्रियेवना और गाल्या भीड़ को चीरती हुई पास आ जाती हैं।

"लड़को, क्या कर रहे हो तुम लोग!"

लड़के ल्योवा को छोड़ देते हैं। हांफते हुए वह उठ खड़ा होता है और अपनी टाई ठीक करता तथा बिखरे बाल संवारता है।

"लड़को, तुमने यह क्या हंगामा मचा रखा है? किस लिए तुम लोगों ने इसे मारा-पीटा है?"

"फ़ुटबाल के लिए।"

"जानती हैं आप इसने क्या कहा था? यह कहता है कि 'फ़ुटबाल खेलना फ़जूल समय बरबाद करना है। खेद की बात है कि इवानोव फ़ुटबाल के खिलाड़ी हैं और वे खेलकूद में समय नष्ट करते हैं।'"

"यह बिल्कुल बकवास है!" येलेना दमीत्रियेवना कहती है और ताली बजाकर कहती है, "अच्छा लड़को चुपचाप अपने घर जाओ और फावड़ा, बाल्टी और स्ट्रेचर लेकर जल्दी यहां लौटो।"

"फावड़े और बाल्टियां? आखिर किसलिए?"

"लड़को, वहां ऊपर पर स्टेडियम बनने जा रहा है।"

"स्टेडियम बन रहा है?"

"इन्हें बता दो कि कैम्प में पायोनियर स्पोर्ट-क्लब की स्थापना हो रही है।" गाल्या फुसफुसाती है।

"तुम्हें मालूम होना चाहिये कि कैम्प में पायोनियर स्पोर्ट-क्लब की व्यवस्था की जा रही है और जो लोग स्टेडियम बनाने में मदद न करेंगे उन्हें खेलकूद में शामिल न किया जायेगा।"

"और हमें तालीम कौन देगा?" लड़कों में से किसी ने गंभीर स्वर में कहा।

"इन्हें बता दो कि हम इसके लिए इवानोव से कहेंगे कि वे स्वयं तुम्हें ट्रेनिंग दें।"

"इवानोव तुम्हारे शिक्षक बनेंगे। वे हमारे पति के विद्यार्थी रह चुके हैं।"

"हुर्रा!" लड़के एक साथ ही अपनी टोपियां उछालते हैं।

"लड़को, बहुत हो चुका, जाओ फावड़े लेकर आ जाओ!"

भीड़ इधर-उधर फैल जाती है और येलेना द्मीत्रियेवना ल्योवा की ओर मुड़ती है –

"प्यारे ल्योवा! तुम इस प्रकार क्यों खड़े हो?"

"मैं?"

"हां, हां, तुम, जाओ जल्दी करो, तुम और गाल्या दोनों अपने फावड़े लेकर आ जाओ।"

"लेकिन मैं..."

"तुम्हारे पास फावड़ा है? आओ, देखें तुम्हारे यहां।" गाल्या कहती है और उसका हाथ पकड़कर ले जाती है।

सीढ़ियों पर इवानोव खड़ा है और गुस्से में जोर से बातें करता हुआ अंगुलियों से छाती ठोंकता है।

"भला मैं, तुम लोगों को ट्रेनिंग दूंगा? तुमने हमारे प्रोफेसर की नींद हराम कर रखी है, चैन नहीं लेने देते हो उन्हें। तुम लोगों के कारण ही मेरे और प्रोफेसर के बीच मनमुटाव हो गया है। किस मुंह से तुम मुझसे कहने आये हो?"

"अब हम यहां की एक भी खिड़की न तोड़ेंगे।" सीमोशा गर्दन झुकाकर कहता है।

"हम अपने खेलने के लिए स्टेडियम बना रहे हैं।" बोरीस कहता है।

येलेना द्मीत्रियेवना अहाते में अकेली खड़ी है। प्रोफेसर खिड़की से झांककर उनकी ओर देख रहे हैं।

"प्यारी येलेना! तुम्हें पहचानना मुश्किल है।" प्रोफेसर गंभीरता से कहते हैं।

"मैं स्वयं अपने को पहचान नहीं पा रही हूं। मुझे स्वप्न में भी पता न था कि मुझमें यह प्रेरणा उत्पन्न होगी कि मैं संगठन-कार्य करूं।"

"मुझे खेद है कि तुम्हारी यह प्रेरणा अनोखा रंग पकड़ रही है और तुम्हें व्यायाम के बखेड़े में घसीट रही है..."

"हां, मीशा, खूब याद आया व्यायाम के बारे में। तुम्हें प्रातः व्यायाम करना चाहिये। जरा अपनी ओर तो देखो।"

सीढ़ियों पर। ल्यानोव कुछ सीढ़ियां उतरकर नीचे आ गया था। लेकिन वह रुका और लड़कों की ओर मुड़कर कहने लगा –

"सुनो! आज के तीसरे दिन मैं राजकीय फ़ार्म जा रहा हूं, पर मैं उसी शाम को वापस आ जाऊंगा। अगर इस बीच प्रोफ़ेसर ने तुम लोगों की किसी प्रकार की शिकायत की तो मैं तुम्हारा शिक्षक हर्गिज न बनूंगा। समझ गये न मेरी बात?"

"हां, ठीक है, समझ गये!" लड़के एक साथ कह उठते हैं।

अहाते में फिर भीड़-भाड़ होने लगती है। गाल्या, ल्योवा के साथ आती है। ल्योवा के हाथ में फावड़ा है।

"यद्यपि मैं तुमसे सहमत नहीं हो सका हूं फिर भी स्टेडियम बनाने में मैं तुम्हारी सहायता करूंगा ताकि मिखाईल पेत्रोविच को इनसे निजात मिल सके।" ल्योवा गाल्या से कहता है।

"ठीक है। चाची, अब हम चल सकते हैं।"

"लड़को, तैयार हो न? आओ चलें!"

लड़के शोर-गुल मचाते भाग दौड़ करने लगते हैं। फाटक के पास भीड़-भाड़ हो जाती है।

"हाय राम! कहीं ये सब के सब कुचल न जायं!"

"इनसे कहो कि जहां के तहां खड़े हों।" गाल्या कह उठती है।

"लड़को! रुक जाओ! जहां के तहां खड़े हो जाओ!"

लड़के एकदम खड़े हो जाते हैं और उसी स्थान पर आ जाते हैं जहां पहले खड़े थे।

"दो दो की कतार में खड़े होने को इनसे कहो। क्या ये ठीक से चल भी न पायेंगे?"

"लड़को! दो दो की कतार में खड़े हो जाओ! ठीक से चल भी न सकोगे?"

स्टेडियम निर्माता दोहरी कतार बना लेते हैं।

"अच्छा अब सभी सावधान हो जायं।" गाल्या धीरे से कहती है।

"सावधान!" येलेना द्मीत्रियेवना ऊंचे स्वर में आज्ञा दोहराती है।

"अच्छा, अब आगे बढ़ने को कहो।"

"आगे बढ़ो!"

मिखाईल पेत्रोविच अभी तक खिड़की पर झुके अहाते का दृश्य देख रहे हैं। लड़कों की कतार अहाते से होकर आगे बढ़ रही है।

"इनसे किसी गीत की तान छेड़ने को कहो।" गाल्या फिर येलेना द्मीत्रियेवना से कहती है।

"लड़को, शुरू करो न कोई गीत!" येलेना द्मीत्रियेवना प्रसन्न होकर कहती है।

लड़कों ने वही गीत शुरू कर दिया जो स्टेडियम में काम करनेवाले पायोनियर गाते थे। इवानोव और बोरीस की टोली घर के सामने की सीढ़ियों पर निकल आती है। लड़के गाते हुए मार्च कर रहे हैं और खुश होकर अपनी टोपियां हिलाते जाते हैं। ल्योवा उन दो छोटे लड़कों के पीछे चल रहा है जो एक बड़ा फावड़ा साथे धीरे-धीरे घसीटते दिखाई देते हैं।

"अपने फावड़े जल्दी से ले चलो!" बोरीस कहता है।

ऊसर ज़मीन पर ज़ोर-शोर से काम चल रहा है।

ल्योवा और गाल्या मिट्टी से भरा स्ट्रेचर घसीट रहे हैं। ल्योवा हांफने लगता है, वह मुश्किल से पैर आगे बढ़ा पाता है और बोझा घसीटते समय हर बार लड़खड़ाने लगता है।

"ज़ोर लगाकर ज़रा आगे बढ़ो! इसी बल-बूते पर अपने को लड़का कहने का दावा करते हो!" गाल्या उसे झिड़क देती है।

"तीन सौ मीटर से बालू ढोना कौन सी अक्लमंदी है जब कि पास ही बालू मिल सकता है।" ल्योवा हांफते हुए छोटी नदी के उस पार इशारा करता है। बालू के टीले नदी के किनारे झुके दिखाई देते हैं।

"उनके बारे में सोचना ही व्यर्थ है जब आस-पास कोई पुल नहीं है।"

"अरे, तो हम लोगों को ऐसा करना चाहिये..." ल्योवा लड़खड़ाकर गिरता है।

बोरीस की टोली अपने फावड़े लिये आती है और रुक जाती है।

"मैं तो भर पायी!" गाल्या गुस्से से कहती है। "अब मैं इसके साथ कतई काम न कर सकूंगी।"

बोरीस, ल्योवा से स्ट्रेचर ले लेता है और कहता है–

"प्यारे ल्योवा, अब समझ में आ गया कि मनुष्य के लिए दिमाग ही कुछ नहीं है।"

बोरीस गाल्या के साथ जाता है, टोली भी वहां से चली जाती है। ल्योवा अ में ऐसे सांस लेता है जैसे कि उसे ऐंठन महसूस हो रही हो।

वह नदी के किनारे जाता है और आगे हाथ बढ़ाता है, उसके हाथ में पेंसि है। वह एक आंख दबाकर बड़े गौर से सामने देखता है, फिर नोट-बुक निकाल कुछ लिखने लगता है।

उसी शाम को। मिखाईल पेत्रोविच के डेस्क पर एक नक्शा पड़ा है जिसप नदी के एक हिस्से का खाका है, दोनों किनारों पर बुर्ज बने हैं। इन दोनों बुर्जों मिलाता हुआ एक केबिल दिखाया गया है जिसके बीच में एक डोल लटका है।

"मिखाईल पेत्रोविच, जितना बालू सब लड़के इकट्ठा करते हैं, इस डोल क मदद से मैं उसका दस गुना ढो सकता हूं।"

"वास्तव में बड़ा दिलचस्प तरीका है।"

"वे मुझपर हंसते हैं और अब मैं उन्हें दिखा दूंगा कि टांगों की ताकत से दिमाग कितना महत्वपूर्ण है।"

"यह तो ठीक वैसा ही है, कि गाल बजाने से करके दिखाना अधिक महत्व रखता है, समझे मेरे भाई।"

"बस दो दिन में यह तैयार हो जायेगा। क्या मैं इसके उद्घाटन के लिए आपको आमंत्रित कर सकता हूं?"

"धन्यवाद! बड़ी खुशी से। इसके अलावा मैं बड़ा हैरान हूं कि मेरी पत्नी और भतीजी को दिन भर वहां बिताने की क्यों चाट लग गयी है।"

शीर्षक: **दो दिन बाद**

प्रोफ़ेसर की खिड़की के ऐन नीचे एक पिल्ला बिल्ली पर भौंक रहा है। तीमोशा आता है। उसकी बांह पर एक पट्टी लगी है जिसपर लिखा है: 'ड्यूटी पर'। वह पुलिस वाली सीटी बजाता है और पिल्ले को लात मारकर हटाने लगता है–

"भागो यहां से! जहां देखो वहीं तुम्हें भौंककर भिड़ने की ग्रादत पड़ गयी है!"

कुत्ता ग्रौर बिल्ली दोनों वहां से भाग खड़े होते हैं। तीमोशा सूने ग्रहाते पर नजर दौड़ाता है ग्रौर फिर सदर दरवाज़े में घुस जाता है।

वह प्रोफ़ेसर के कमरे में ल्योवा ग्रौर मिखाईल पेत्रोविच के सामने तना खड़ा है।

"कामरेड प्रोफ़ेसर, नमस्ते! ग्राज मैं ड्यूटी पर हूं, लेकिन ग्रहाते में ग्राज शोर-गुल नहीं मच रहा है। क्या मैं ग्रापकी कोई सेवा कर सकता हूं? मुझे काम बताइये।"

"क्या कहा तुमने?"

"क्या मैं ग्रापकी कोई सेवा कर सकता हूं? मेरी टोली ने ग्रापके वैज्ञानिक कार्य में मदद करने का निर्णय किया है।"

"'धन्यवाद मेरे बच्चे! मैं बड़ा कृतज्ञ हूं पर..."

"मिखाईल पेत्रोविच ग्राप इनसे सेट की निगरानी रखने का काम लें।" ल्योवा कहता है।

"हां, तुम ठीक कहते हो। देखो ल्योवा मुझे नदी पर बने झूलेदार रास्ते की जांच करने ले जा रहा है। हो सकता है कि इस बीच राजकीय फ़ार्म से मेरे लिए कोई जरूरी खबर ग्रा जाय, तो क्या मैं ग्राशा करूं कि तुम मेरे ग्राने तक सेट की निगरानी करोगे ग्रौर सूचना प्राप्त कर सकोगे?"

"क्या ग्रापका ग्राशय इस रेडियो सेट से है? क्या मैं इससे संदेश पाने की विधि जान सकता हूं?"

"ग्ररे इसे तो एक नन्हा बच्चा तक चला सकता है। बस तुम्हें इतना ही करना है कि तुम्हें जो खबर दी जाय वह लिख लो, फिर स्वीच बंद कर दो। उसके बाद तुम जा सकते हो। देखो, यहां ग्राग्रो मैं बताता हूं, इसको चलाने का बड़ा ही सरल तरीका है।"

नगर पायोनियर कैम्प। पेरेवालोव, द्रोज़्दोव ग्रौर ग्रोल्या छायादार संकरे रास्ते से गुज़र रहे हैं।

"अब कैम्प में उपस्थिति कैसी है?" द्रोजदोव मजाक में पूछता है।

"तुम स्वयं देख सकते हो।" ओल्गा कहती है।

कैम्प में काफ़ी चहल-पहल है। जोर-शोर से काम हो रहा है। पायोनियर लड़के-लड़कियां काम में जुटे हैं, वे तख्ते और लट्ठे लेकर संकरे रास्तों से आते-जाते दिखाई देते हैं।

मंडप में लड़कियां भांति भांति के रंगों की झंडियां बना रही हैं। स्त्योपा सिलाई की मशीन का हैंडिल चलाकर उनकी मदद कर रहा है।

दो लड़के खिलौने-घर के पास खड़े बढ़ईगीरी की तिपाई में जुटे कुछ काम कर रहे हैं।

"यह वही बढ़इयों की तिपाई है!" पेरेवालोव गर्व से कहता है।

खिलौने-घर में एक बोर्ड लगा है—

औज़ार यहां से मिलते हैं

एक मोटा सा लड़का, जो खिलौने-घर में सोता दिखाई दिया था, बैठा है और पायोनियर लड़कों को चिमटे, हथौड़े, आरियां इत्यादि दे रहा है।

"हमने अपने पड़ोसियों से ये सभी औज़ार मांग लिये हैं।" ओल्गा बताती है।

बिगुल बजता है। कैम्प के सभी लोग मैदान पर चल देते हैं।

"जल्दी चलना चाहिये।" ओल्गा कहती है, "नदी पर झूलेदार रास्ते का आज उद्घाटन है।"

ल्योवा का झूलेदार रास्ता तैयार हो गया है। उस पार खड़े एक खंभे और इधर अकेले खड़े पेड़ से गुंबादों का काम लिया गया है। उनके बीच एक केबिल लटका है। एक पुराना पीपा रस्सियों से कसकर ब्लॉक से बांध दिया गया है। यही पीपा आने-जाने के डोल की तरह काम में लाया जायेगा।

नदी के दोनों किनारों पर लड़के-लड़कियों की भीड़ जमा है। वे कौतूहल से यह नया प्रयोग देख रहे हैं। येलेना दमीत्रियेवना बड़ी उत्सुकता से नदी के दूसरे किनारे की ओर देख रही है जहां पीपे के इर्द-गिर्द लड़के जमा हैं।

"ल्योवा मूर्खता मत करो, मुझे डर है कि तुम कहीं नदी में न गिर जाओ!" येलेना द्मीत्रियेवना कहती है।

"आप चिंता न करें।" ल्योवा दूसरे किनारे से चिल्लाता है। "यह आविष्कार आजमाया हुआ और विश्वसनीय है!"

"पहली यात्रा का हक तो आविष्कारक को ही है।" योगीम कहता है।

"ल्योवा, आगे बढ़ो!" लड़के चिल्लाते हैं।

"चढ़ो पीपे में!"

रस्सी तिरछी होती है। ब्लॉक और पीपे को आप ही आप दूसरे किनारे की ओर सरकना चाहिये। अब पीपा अपने ठीक स्थान पर है और पीपे से बंधी रस्सी का सिरा लड़के पकड़े हुए हैं।

ल्योवा पीपे में चढ़ता है, लड़के चुप हो जाते हैं तथा उसे देखने लगते हैं। जाहिर तौर पर ल्योवा बड़े इतमीनान से उसमें चढ़ जाता है। उसके भाव ठीक उसी प्रकार दिखाई देते हैं जैसे कि कोई महान व्यक्ति महत्वपूर्ण क्षण में संतुलित भाव प्रदर्शित करता है।

"अब पीपे को आगे बढ़ने दो!" ल्योवा कहता है।

लड़के रस्सी ढीली कर देते हैं। पीपा धीरे से आगे बढ़ता है। पुराने ब्लॉक की चरमराहट वातावरण की शांति भंग कर देती है। गोल-कीपर नदी के किनारे तक दौड़कर जाता है। उसके हाथ में लम्बा सा डंडा है। सहसा पीपा पानी की सतह के ऊपर झूलता हुआ रुक जाता है।

"यह क्या हुआ? यह तो रुक गया! हो क्या गया इसे?" चारों ओर से आवाजें आने लगती हैं।

मिखाईल पेत्रोविच पीपे पर दृष्टि गड़ाये येलेना द्मीत्रियेवना के पास आते हैं और पीछे खड़े हो जाते हैं।

"शोर मत मचाओ!" ल्योवा कहता है, "ब्लॉक पुराना है इसी लिए फंसकर रह गया है। अच्छा पीपा पीछे खींचो!"

पीपा किनारे की ओर खींच लिया जाता है।

"इसमें वज़न ज्यादा होना चाहिये, तभी यह आगे सरक सकेगा।" ल्योवा पीपे के बाहर निकलता है। "उसमें थोड़ा बालू लाद देना।"

लड़के फावड़े से पीपे में बालू भरने लगते हैं। आविष्कारक एक बार पीपे में चढ़ता है।

"ल्योवा, यह भार रस्सी न सह सकेगी!" येलेना दमीत्रियेवना चिल्लाती

"प्यारी येलेना, इस प्रकार उत्तेजित होकर उसे विचलित करना ठीक नहीं मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि इतना भार यह रस्सी साध लेगी।" मिख पेत्रोविच फुसफुसाकर कहते हैं।

"मीशा, तुम यहां क्या करने आये हो?"

"प्यारी येलेना, मुझे भी कौतूहल यहां घसीट लाया।"

"अच्छा?"

"यह बहुत दिलचस्प चीज है।"

पीपा फिर एक बार सरकने लगता है और नदी पार करता सकुशल दूसरे कि पर आ जाता है।

"आओ हम सब आविष्कारक को शाबाशी दें!"

मिखाईल पेत्रोविच मुस्कराकर ल्योवा की ओर देखते हैं। लोग ल्योवा को उछ उछालकर अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं।

राजकीय फ़ार्म में। फ़ार्म के किसी घर के सामने लारी खड़ी है। इवानोव सीढ़ियों पर खड़ा है और मज़दूर लारी से सामान उतारकर रख रहे हैं। इवानोव स पैक किये हुए बक्सों की देख-भाल कर रहा है। उसके हाथ में छोटा सा रेडियो सेट है।

प्रोफ़ेसर का कमरा। तीमोशा डेस्क पर रखे रेडियो सेट को बड़ी हैरानी से देख रहा है। वह रिसीवर उठा लेता है, उसे ध्यान से देखता है और कान पर लगा लेता है। वह बक्स उठाकर रिसीवर कान में दबाये रोब से अकड़कर कमरे में घूमने लगता है।

"हलो! आप कैसे हैं? आपका मिजाज कैसा है?" बटन दबाकर वह बार बार चिल्लाता है।

राजकीय फ़ार्म के कमरे में सामान फैला पड़ा है। बराबर भनभनाहट की आवाज़ रेडियो से सुनाई देती है। इवानोव रिसीवर उठा लेता है और पूछता है–

"हां कौन?"

तीमोशा घबरा जाता है और रिसीवर कान पर लगाये जहां का तहां खड़ा रह जाता है।

इवानोव मेज़ के किनारे बैठ जाता है।

"क्या मिखाईल पेत्रोविच बोल रहे हैं?"

"नहीं, मिखाईल पेत्रोविच नहीं हैं।"

"तो बोल कौन रहा है?" इवानोव आश्चर्य भाव से पूछता है।

"मैं यहां ड्यूटी पर तैनात एक पायोनियर हूं। मैं अहाते में ड्यूटी पर इसलिए नियुक्त किया गया हूं कि प्रोफ़ेसर को कोई विघ्न न पहुंचा सके। वे बाहर गये हुए हैं और मुझे रेडियो सेट की निगरानी का भार सौंप गये हैं। मुझसे अचानक ही बटन दब गया था।" तीमोशा कहता है।

इवानोव मुस्करा उठता है।

"क्या तुम चपटी नाक वाले फ़ुटबाल के खिलाड़ी हो क्यों? मैंने तुम्हारी आवाज़ पहचान ली है। मैं इवानोव बोल रहा हूं... हां वही इवानोव। अच्छा एक संदेश लिख लो।"

तीमोशा बैठ जाता है और दावात में कलम डुबोकर लिखने को तैयार हो जाता है।

इवानोव बोलने लगता है–

"राजकीय फ़ार्म को दे दिया गया सारा सामान, टूटा हुआ एक बैटरी सेट मिला।"

तीमोशा बिना कामा लगाये पूरा संदेश लिख लेता है और फिर इवानोव से पूछता है–

"क्या मैं इसे पढ़कर सुना दूं?" वह संदेश पढ़ता है, "राजकीय फ़ार्म को दे दिया गया सारा सामान टूटा हुआ एक बैटरी सेट मिला।"

"हां ठीक है।" इवानोव कहता है, "अच्छा, तुम्हें हमारा यह सेट पसंद है? फुटबाल से भी अधिक दिलचस्प चीजें दुनिया में पड़ी हैं। अच्छा धन्यवाद।"

"अलविदा साथी इवानोव।" तीमोशा कहता है।

वह क्षण भर के लिए कुर्सी में पीछे झुकता है, फिर मन ही मन प्रसन्न होकर एक बार फिर दावात में कलम डुबोता है।

रेडियो संदेश की इबारत पर्दे पर दिखाई देती है।

"मुझे कामा कहां लगाना चाहिये?" तीमोशा सोचते हुए कहता है। कलम उस इबारत पर संशयपूर्ण भाव से घुमाता है, फिर 'टूटा हुआ' के बाद कामा लगा देता है। "अच्छा तो यहां ही सही, न जाने किसने इन कामास का आविष्कार किया है।"

पायोनियर गीत गुनगुनाते प्रोफ़ेसर सदर दरवाज़े पर आते हैं। वह रुक जाते हैं और न जाने क्या सोचकर मुस्कराने लगते हैं।

"म-म-म! बड़ा ही दिलचस्प है यह!"

वह फिर गुनगुनाते हुए सदर दरवाज़े में प्रवेश करते हैं।

वे पढ़ने के कमरे में दिखाई देते हैं।

"कामरेड प्रोफ़ेसर! मैंने अभी रेडियो सेट से आपके लिए संदेश प्राप्त किया है!" कागज़ दिखाते हुए तीमोशा बड़े गर्व से कहता है।

प्रोफ़ेसर कागज़ लेकर पढ़ते हैं और उनके चेहरे का रंग बदलने लगता है।

"क्यों... क्यों... क्या यह बिल्कुल ठीक है?" वे धीमे स्वर में उससे पूछते हैं।

"हां, बिल्कुल ठीक है। कामरेड इवानोव को मैंने पढ़कर सुनाया था, उन्होंने कहा, हां बिल्कुल ठीक है।"

प्रोफ़ेसर के हाथ से कागज़ छूट जाता है। वह भागे हुए हॉल तक जाते हैं और तिरछा हैट लगाये हाथ में बरसाती लिये लौट आते हैं।

"उनसे कह दो... मैं राजकीय फ़ार्म पहुंच रहा हूं... वहां बड़ा गड़बड़ हो गया है।" वे आवेश में हकलाते हुए कहते हैं और जल्दी से बरसाती पहन लेते हैं। "कितने गैरज़िम्मेदार, बिल्कुल गैरज़िम्मेदार हैं वे लोग।" प्रोफ़ेसर बड़बड़ाते हैं।

प्रोफेसर चले जाते हैं। सीमोशा कागज उठा लेता है और घबराहट में कंधे झटकने लगता है।

द्रोज़्दोव तथा पेरेवालोव लड़कों के शोर-गुल के बीच खड़े हैं। लट्ठों और तख्तों से लदी एक लारी आती है। उसमें लदे लट्ठों तथा तख्तों के ऊपर कुछ युवक और युवतियां बैठी हैं।

"कामरेड द्रोज़्दोव, कोमसोमोल सदस्य भी हमारी मदद के लिए आ पहुंचे हैं।" पेरेवालोव बताता है।

तान्या को अर्धगोलाकार घेरे हुए बोरीस और उसके साथी खड़े हैं। एक पत्रकार अपना कैमरा उनकी ओर जमा रहा है।

"स्टेडियम निर्माण की प्रधान, आप चेहरे पर हल्की मुस्कान लाने की कोशिश करें! मैं आपका चित्र अखबार के लिए ले रहा हूं। देखिये मुंह मत लटकाइये।" (तान्या हंसती है और पत्रकार कैमरे का खटका दबा देता है।) "बस! धन्यवाद।"

बोरीस देखता है कि दूर की किसी वस्तु पर गोल-कीपर की दृष्टि गड़ी हुई है। बोरीस तथा अन्य लड़कों की निगाह उधर जाती है। सब के सब आश्चर्य से उसी ओर देखने लगते हैं।

उनकी ओर लापरवाही से 'धड़ाका' टीम के लड़के बढ़े चले आ रहे हैं। वे सब नीली कमीजें पहने हैं। कमीज़ों की छाती के ऊपर 'ध' का बड़ा सा अक्षर टंका है। नेकर, नीपैड तथा बूटों में वे पूरे फ़ुटबाल के खिलाड़ी जंचते हैं।

स्टेडियम में काम करनेवाले लड़के ईर्ष्या और प्रशंसापूर्ण नज़रों से उनकी ओर देखते हैं।

'धड़ाका' टीम बोरीस की टोली के बराबर आ जाती है। उनका कप्तान बोरीस को देखता है और मेहरबानी से सर हिला देता है। ओल्गा उनके समीप आ जाती है।

"अच्छा तो तुम लोग भी हमारी सहायता के लिए आ गये हो? मुझे बड़ी प्रसन्नता है। लेकिन तुम लोग फावड़े क्यों नहीं लाये?"

"फावड़े? किसलिए?" कप्तान बनावटी आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछता है।

"बेशक, यहां काम करने के लिए।"

"यह तो बच्चों का मजाक है।" कप्तान व्यंग करता है।

"हम लोग असली स्टेडियम में खेलने के आदी हैं।" उस टीम का एक खिलाड़ी बोल उठता है।

'धड़ाका' टीम वहां से चल देती है। ओल्गा उन्हें देखती है, फिर बोरीस की ओर मुड़कर कहती है—

"बोरीस, यदि तुम लोग गर्मी के अन्त तक इन्हें हराने के योग्य न हो सके तो मैं समझूंगी तुम दो कौड़ी के आदमी हो।"

ओल्गा जाती है। बोरीस की टोली फिर काम में लग जाती है। हाथ में रेडियो संदेश वाला कागज़ लिये तीमोशा आता है।

"क्या तुमने कोई रेडियो संदेश प्राप्त किया था?" ल्योवा पूछता है।

"हां। लेकिन वह बड़ा अनोखा था।"

लड़के काम बंद कर देते हैं।

"क्या अनोखापन था उसमें?" बोरीस पूछता है।

"ज्यों ही प्रोफ़ेसर ने इसे पढ़ा सीधे राजकीय फ़ार्म की ओर भागे। कहने लगे कि वहां बड़ा गड़बड़ हो गया है।" उसने कहा।

"रेडियो संदेश में लिखा क्या था?" ल्योवा पूछता है।

"उस संदेश में कोई बुरी खबर न थी, बस यही कि सभी सामान राजकीय फ़ार्म पहुंच गया है, केवल एक सेट खराब है।"

तीमोशा बोरीस को वह संदेश दिखाता है। बोरीस उसे पढ़ता है। लड़के बोरीस की ओर सशंकित भाव से देखते हैं।

"वाह रे! तुम और तुम्हारा व्याकरण!" बोरीस गरज उठता है। "तुमने कामा कहां लगाया था? तुम्हें 'टूटा हुआ' शब्दों के पहले लगाना चाहिये था, बाद में नहीं!"

तीमोशा परेशान सा तुनककर बोलता है—

"क्या भूल हो गयी जो मेरी व्याकरण को कोस रहे हो?"

"कहते हो क्या भूल हो गयी?" बोरीस गला फाड़कर चिल्ला उठता है।

"जरा देखो तो तुमने क्या किया है: 'राजकीय फ़ार्म को दे दिया गया सारा सामान टूटा हुआ, एक बैटरी सेट मिला।'"

तीमोशा जल्दी जल्दी आंखें मिचकाने लगता है। कुछ देर सब चुपचाप रहते हैं।

"यहां से फ़ार्म तक रेल से चालीस मील का सफ़र है।" एक लड़का बोल उठता है।

"बड़ी लम्बी दौड़ करा दी तुमने उन्हें!" गोल-कीपर कहता है।

"मैं भागकर स्टेशन जाता हूं। संभव है कि मैं प्रोफ़ेसर को गाड़ी से पहले रोक सकूं।" ल्योवा कहता है।

वह नदी के किनारे रखे पीपे की ओर भागता है। पीपे पर चढ़कर लड़कों को आवाज़ देता है–

"इसे खींचो!"

पीपा दूसरे किनारे जा लगता है। ल्योवा कूदकर जल्दी जाता है।

लड़के उदास दिखाई देते हैं और उद्विग्न भाव से ज़मीन खोदने लगते हैं।

"बोरीस, तुम्हें स्वयं जाना चाहिये था।" गोल-कीपर कहता है। "ल्योवा ठीक से दौड़ न पायेगा।"

"अब काफ़ी देर हो चुकी है।"

गोल-कीपर काम बंद कर फावड़े के सहारे झुक जाता है और कहता है–

"आज रात इवानोव लौट आयेगा, लेकिन हमें ट्रेनिंग से हाथ धोना पड़ेगा।"

तीमोशा ज़मीन पर बैठा है, घुटनों पर कोहनियां टेककर दोनों हाथों में बाल उलझाते हुए सर हिलाने लगता है।

संवाददाता लड़कों के निकट आता है।

"लड़को, इधर आओ, अपने अपने फावड़े संभाल लो, मैं तुम्हारी तस्वीर बालू ढोने का काम करते हुए लेना चाहता हूं।"

लड़के पीपे से बालू खाली कर रहे हैं। संवाददाता कैमरे के शीशे में झांककर देखता है।

"लड़को, ज़रा मुस्कराओ, जिससे ज़िंदादिल तो मालूम हो।"

लड़के मुस्कराने की मुद्रा बनाने की कोशिश करते हैं पर सफल नहीं होते।

"हां लड़को, थोड़ा सा मुस्कराओ! हमारी ओर देखकर ज़रा हल्की सी मुस्कान बिखेर दो!"

लड़के दांत निकालकर भद्दे ढंग से हंसते हैं।

रेलवे स्टेशन का दृश्य। इंजन सीटी दे देता है और गाड़ी रेंगने लगती है। प्रोफ़ेसर डिब्बे में बैठे दिखाई देते हैं।

ल्योवा प्लेटफ़ार्म की ओर दौड़ा चला जा रहा है।

"मिखाईल पेत्रोविच, रुको! ओ मिखाईल पेत्रोविच!" वह चिल्लाकर आवाज़ देता है और बेहूदे ढंग से डिब्बे की सीढ़ियों पर चढ़ जाता है।

प्रोफ़ेसर तथा ल्योवा रेल के डिब्बे में दिखाई देते हैं।

"तुम्हारा किराया देने के लिए मेरे पास दाम है।" प्रोफ़ेसर कहते हैं। "लेकिन दिक्कत तो यह है कि गाड़ी दो घंटे तक कहीं भी न रुकेगी और दो ही घंटे हमें लौटने में चाहिये।"

प्रोफ़ेसर घड़ी देखते हैं – इस समय साढ़े चार बजा है।

मैदान के उस पार नदी का किनारा। मिखाईल पेत्रोविच और ल्योवा अंधेरे में आते दिखाई देते हैं।

"इतना कीमती समय बेकार चला गया!" प्रोफ़ेसर कहते हैं।

"यह सब गड़बड़ केवल एक कामा के कारण हुआ है।" ल्योवा कहता है।

"नहीं केवल कामा ही की गलती नहीं है। इससे मालूम होता है कि उसे व्याकरण का, ककहरा भी नहीं आता। ऐसा मालूम देता है कि व्याकरण उसकी बुद्धि में चढ़ना ही नहीं है।" प्रोफ़ेसर रुकते हैं और आस-पास देखने लगते हैं। "क्या मुसीबत है यहां तो कोई पुल ही नज़र नहीं आता। नहीं तो हम मिनटों में घर पहुंच जाते।"

"मिखाईल पेत्रोविच, क्या आप उस झूलेदार रास्ते से चलना पसंद करेंगे?" मिखाईल पेत्रोविच ठिठक जाते हैं।

"तुम्हारा मतलब उस ग्राविष्कार से है जिसे तुमने तैयार किया है?"

"बेशक, हम उसे कई वार काम में ला चुके हैं।"

"हुंः तुम्हारे ग्रौर मेरे वज़न में वड़ा फ़रक है।"

"ग्राप डरें नहीं! हम कई बार पूरा पीपा बालू भरकर उस पार ले जा चुके हैं ग्रौर इसमें कोई दुर्घटना नहीं हुई। ग्राप चढ़ जायं इसमें।"

मिखाईल पेत्रोविच पीपे को नज़दीक से हिचकिचाकर देखते हैं।

"क्या कहूं... कुछ समझ में नहीं ग्राता... एक ग्रोर बुढ़ापे में मील भर चलने के लिए हिम्मत जवाव दे रही है ग्रौर दूसरी ग्रोर इस पीपे में बैठकर जाने में... हुंः बड़ा भद्दा लग रहा है।"

"मिखाईल पेत्रोविच, ग्रापको इस समय कौन देखेगा? यहां सब ग्रोर तो ग्रंधेरा ही ग्रंधेरा है।"

"हुंः दरग्रसल कितनी विपम स्थिति है।"

ल्योवा रस्सी खोलता है।

"मिखाईल पेत्रोविच, पीपे में चढ़ जाग्रो।"

"मैं कल्पना करता हूं कि मेरे साथी क्या कहेंगे।" मिखाईल पेत्रोविच वड़बड़ाते हैं ग्रौर सावधानी से पीपे में चढ़ जाते हैं। "क्या तुमने मजबूती से रस्सी पकड़ी है?" वे पूछते हैं।

ल्योवा रस्सी पर पूरी ताकत लगा रहा है।

"हां, मैंने ग्रच्छी तरह उसे पकड़ा है। मिखाईल पेत्रोविच, जल्दी करें!"

"मैं तैयार हूं! पुरानी कहावत प्रचलित है कि हिम्मतवर की ईश्वर भी सहायता करता है।"

ल्योवा रस्सी ढीली करता है ग्रौर पीपा नदी के उस ग्रोर खराकने लगता है। ब्लॉक ज़ोर का शब्द करता, संध्याकालीन नीरवता भंग कर देता है। कुछ क्षण बाद वह चीत्कारपूर्ण शब्द समाप्त हो जाता है।

"किसी वजह से यह रुक गया है, ल्योवा मेरे बच्चे।"

"ब्लॉक फंसकर रह गया है। मैं ग्रापको फिर पीछे खींचता हूं। वज़न बढ़ाने के लिए इसमें कुछ बालू डाल दूंगा।"

ल्योवा भरपूर जोर लगाता है पर पीपा हिलने का नाम नहीं लेता।

"बड़ी मुश्किल है, या तो मेरी भरपूर ताकत इसके लिए काफ़ी नहीं है या फिर ब्लॉक बहुत कसकर फंस गया है।"

"हुः! हुः!"

"मिखाईल पेत्रोविच!"

"हां।"

"आप कुछ देर इन्तजार करें, मैं मदद के लिए कुछ लड़के बुलाये लाता हूं।"

"हुः। क्या लड़कों को बुलाओगे? नहीं, तुम स्वयं इसे खींचकर ठीक करो। मैं यहां भीड़ इकट्ठी नहीं करना चाहता।"

ल्योवा जोर लगाकर खींचता है पर गिर पड़ता है।

"अरे अब तो रस्सी भी टूट गयी।"

कुछ क्षण तक मिखाईल पेत्रोविच चुप रहते हैं।

"जानते हो ल्योवा, अब मैं पछता रहा हूं कि मैं क्यों तुम्हारे कहे में आ गया।"

"मिखाईल पेत्रोविच, रस्सी ब्लॉक के नजदीक टूट गयी है। आप थोड़ी देर इन्तजार करें, मैं उस पार जाकर रस्सी आपकी ओर फेंकता हूं। दूसरे किनारे से खींचना आसान रहेगा।"

"यह कितना दुखदायी है कि जब तक तुम पुल पार करके उस पार जाओ तब तक मैं यहीं लटका रहूं।"

"मुझे अधिक देर न लगेगी! मैं दौड़कर जाऊंगा।"

पायोनियर कैम्प से लोग जा चुके हैं। स्त्योपा, तीमोशा की ओर देख रहा है। तीमोशा घास पर बैठा है और सर हिलाकर दुखी हो रहा है। लड़के मुंह लटकाये उन्हें घेरे खड़े हैं।

"गाड़ी न जाने कब आ चुकी है पर न प्रोफ़ेसर ही का पता है और न ल्योवा का।" बोरीस कहता है।

"कौन उनके घर जाकर खबर दे? घर में लोग परेशान होंगे।" गोल-कीपर पूछता है।

"सारी आग तीमोशा की लगायी है, बस उसी को दण्ड भोगना चाहिये।"

"वहां इवानोव पहुंच गये हैं... उनका सामना करने से बेहतर है कि मैं नदी में डूब मरूं।" तीमोशा भर्रायी हुई आवाज़ में कहता है।

"मैंने समस्या हल कर ली!" वोरीस कहता है। अपने थैले से पेंसिल और कागज़ निकालकर स्त्योपा को बुलाता है, "स्त्योपा, यहां आओ।"

प्रोफ़ेसर के घर में खाने के कमरे का दृश्य। येलेना द्मीत्रियेवना और गाल्या बैठी हैं और इवानोव परेशान इधर-उधर टहल रहा है।

"मुझे बड़ा आश्चर्य है। आपने लड़कों से इस विषय में पूछा था?" वह येलेना द्मीत्रियेवना की ओर मुड़कर पूछता है।

"लड़के... वे बड़े अजीब ढंग से मेरे सामने आये। मैदान में वे सब मेरे पास तक ज़रूर आये थे, पर ऐसा प्रतीत होता था कि वे मुझसे बचना चाहते हैं। किसी ने मेरे सामने आने की हिम्मत न की। तीमोशा प्रोफ़ेसर के पास जाने की बात ज़रूर कह रहा था पर उसने भी कुछ ख़ास बात न बतायी। लड़के शाम तक मेरी आंख बचाते रहे।"

सहसा दरवाज़े की घंटी बजती है। येलेना द्मीत्रियेवना एकदम उठकर खड़ी हो जाती है।

"मालूम देता है कि वे वापस आ गये!"

गाल्या दरवाज़े तक दौड़कर जाती है और स्त्योपा के साथ लौटती है।

"आपके लिए पत्र है।" स्त्योपा कहता है।

येलेना द्मीत्रियेवना पत्र पढ़ती है और चुपचाप इवानोव की ओर बढ़ा देती है। इवानोव पत्र पढ़ता है—

"'आदरणीया येलेना द्मीत्रियेवना तथा इवान सेर्गेयेविच, आप चिंता न करें, प्रोफ़ेसर शीघ्र वापस आ जायेंगे। तीमोशा की गलती के जिम्मेदार टोली के हम सभी सदस्य हैं। हमें उसकी भूल पर खेद है। आशा है आप हमें क्षमा करेंगे। हम वचन देते हैं कि भविष्य में तीमोशा ऐसी गलती न करेगा।' मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।" इवानोव कहता है। फिर स्त्योपा की ओर मुड़कर पूछता है, "और कोई खबर है?"

"नहीं। और कुछ नहीं है।"

"वे आपस में क्या बातें कर रहे थे?"

"तीमोशा कहता था, मेरे लिए तो अब यही बेहतर है कि नदी में डूब मरूं।"

"अच्छा हमें वहां ले चलो।" इवानोव कहता है।

ऊसर का दृश्य। ल्योवा अंधेरे में आता दिखाई देता है।

"मिखाईल पेत्रोविच, मैं इधर आ गया हूं।"

"मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि तुम दौड़ में फुर्तीले हो।"

"अब मैं आपको बात की बात में इस पार निकाल लूंगा। यह लीजिये पकड़िये रस्सी।"

"बेशक पकड़ लूंगा। पर इससे अधिक तो पांच वर्ष का नन्हा बालक भी फेंक सकता था।"

"जड़ता की शक्ति बहुत कम है।"

"क्या कहा तुमने?"

"जड़ता की शक्ति कम है। मैंने रस्सी के सिरे पर कोई वज़न नहीं बांधा है, मैं अभी लकड़ी का एक टुकड़ा बांधता हूं..."

"देखो इस लकड़ी से मेरा सर न फोड़ देना। तुम्हारा बल देखते हुए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है।"

"पकड़ियेगा इसे।"

"मैं पकड़ने की कोशिश कर रहा हूं।"

किसी वस्तु के फेंके जाने की आवाज़ सुनाई देती है।

"बड़ी वज़नी थी, आप तक न पहुंच सकी।"

"क्या वहीं रह गयी? मेरी तो जैसे अक्ल पर पत्थर ही पड़ गये थे जो मैंने अपनी इस उम्र में तुम्हारे जैसे लड़के की बातों पर भरोसा कर लिया। क्या तुम रस्सी लेकर मेरे पास तैर सकते हो?"

"मैं...मुझे तैरना नहीं आता।"

"बहुत खूब!"

ल्योवा हाथ लटकाकर चुपचाप खड़ा हो जाता है।

"मैं सोच रहा हूं कैसी अजब हालत है इस समय। मैं अकेला बेवकूफ़ों की तरह इस पीपे में फंसा हूं और यह युवक मेरी सहायता के लिए न तो तैर ही सकता है और न रस्सी ही फेंक सकता है। बालक! कोई उपाय सोचो। तुम यह यकीन करते हो कि मनुष्य के लिए दिमाग ही सब कुछ है। देखो फिर बुद्धि लड़ाओ शायद कोई ऐसा उपाय निकल आये कि मेरा बेड़ा पार हो सके।"

"लेकिन मिखाईल पेत्रोविच, आप तो कहा करते थे कि मनुष्य के लिए शारीरिक शक्ति इतनी आवश्यक नहीं है..."

"तुम ठीक कहते हो। पर मेरा मतलब दोनों के उचित अनुपात से था। शरीर और मस्तिष्क दोनों के ही विकास का सामंजस्य मनुष्य के लिए ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर पुराने यूनानियों को ही ले लो। दूर जाने की ज़रूरत नहीं, इवानोव प्रतिभाशाली रूपांककार और खिलाड़ी दोनों ही है। और तुम अपने को देखो, तुम तो मनुष्यता के नाम पर कलंक हो, प्यारे भाई!"

पायोनियर कैम्प।

"कितनी लज्जाजनक बात है!" लज्जा से सर झुकाये खड़े लड़कों के समूह को फटकारता हुआ इवानोव कहता है। "तुम समझते हो कि मनुष्य की जिस्मानी ताकत में ही सब कुछ है? गोरिल्ला फुर्तीला और ताकतवर होता है, पर उसके मस्तिष्क नहीं होता। वह दुर्बल से दुर्बल व्यक्ति की बुद्धि का सामना नहीं कर पाता।"

"तुम्हें शर्म आनी चाहिये।" येलेना द्मीत्रियेवना बोल उठती है।

फिर नदी-तट का दृश्य।

"मिखाईल पेत्रोविच, मैंने एक तरकीब सोची है! अब मैं आपको जल्दी उबारने में सफल हो सकूंगा!" ल्योवा झटपट कपड़े उतारने लगता है।

"कैसी तरकीब?"

"मुझे एक लट्ठा मिल गया है। इसी के सहारे तैरकर आप तक आ जाऊंगा।"

"परेशान मत हो। मुझे डर है कि तुम नदी में गिर जाओगे। इससे तो यह अच्छा होगा कि जाकर गाल्या को बुला लाओ।"

"क्यों गाल्या की क्या ज़रूरत? बस पल भर में मैं वहां ग्राता हूं।"

ल्योवा लट्ठे को घसीटता हुग्रा पानी में घुसता है।

"तुम बड़े धीरे धीरे चल रहे हो।"

"बस एक मिनट में ग्राप तक पहुंचता हूं। ग्रोह! धारा मुझे ग्रासानी से चलने नहीं दे रही है।"

शान्ति।

"कहां हो तुम?" प्रोफ़ेसर पुकारते हैं।

"मैं यहां हूं..." दूर से ग्रावाज़ ग्राती है, "मेरे हाथ ग्रटके हैं ग्रौर मैं लट्ठा चला नहीं सकता।"

काफ़ी देर तक खामोशी छायी रहती है, फिर ग्रंधेरे में एक ग्रोर से ग्रावाज़ ग्राती है –

"बचाग्रो!"

इवानोव, येलेना द्मीत्रियेवना तथा लड़के चिल्लाने की ग्रावाज़ सुनकर चौंकते हैं।

"हे भगवान, यह क्या है?"

"यह ल्योवा का स्वर जान पड़ता है।" बोरीस कहता है। वे सब नदी-तट की ग्रोर दौड़ते हैं।

"बचाग्रो!" बड़ी धीमी ग्रावाज़ सुनाई देती है।

सब नदी के किनारे दौड़ते हैं। ल्योवा जिस लट्ठे से चिपका है वह बीच धार में बह रहा है।

"ल्योवा! क्या तुम हो?"

"हां...पर पहले प्रोफ़ेसर को...बचाग्रो...फिर मुझे निकालना।"

"हे भगवान, उन्हें हो क्या गया है?"

"वे पीपे में हैं।"

बोरीस बिना कपड़े उतारे नदी में फांद पड़ता है। उसे तैरना नहीं पड़ता, नदी का पानी कमर ही तक है। वह लट्ठे सहित ल्योवा को किनारे खींच लाता है।

"अच्छा आओ!"

सब लोग प्रोफ़ेसर की मदद के लिए दौड़ पड़ते हैं।

मिखाईल पेत्रोविच अपने उत्साहित मित्रों के बीच घिरे दिखाई देते हैं। वे पीपे से बाहर निकल आते हैं।

"मिखाईल! मुझे स्वप्न में भी ख्याल न था कि तुममें अभी इतना बचपन है।"

"ओह मेरे प्यारे साथी! इस प्रकार के आकस्मिक अनुभव हमारी अवस्था के लोगों के लिए भी लाभदायक हैं। पीपे में बैठे बैठे मुझे कई समस्याओं पर अपनी धारणाएं बदलने का अवसर मिला है। अरे हां। इवान सेर्गेयेविच, हम ल्योवा के साथ परसों राजकीय फ़ार्म जा रहे हैं। शायद वहां काम करने वाले छात्रों के खेलकूद की व्यवस्था है।"

"हां, मिखाईल पेत्रोविच। उनमें से एक मेरी टीम का सदस्य है।"

"तो बहुत सुंदर है। मैं उससे कहूंगा कि जरा ल्योवा का जामा सुधारकर पूरा इन्सान बना दे।"

"मिखाईल पेत्रोविच," इवानोव तीमोशा की ओर देखते हुए कहता है।

"हां, क्या है?"

"मैं 'तूफ़ान' टीम की तालीम शुरू करने वाला हूं। लेकिन हर ट्रेनिंग के पहले मैं इस बालक को व्याकरण पढ़ाना चाहता हूं। मैं इसे अच्छा-खासा आदमी बना दूंगा।"

डेढ़ महीने बाद

सवेरा। तान्या अहाते में खड़ी पायोनियर बिगुल बजा रही है। बिगुल की पहली आवाज पर ही लड़के अपनी अपनी खिड़की से झांकने लगते हैं।

दूसरे अहाते में अन्य पायोनियर लड़का बिगुल बजा रहा है। नेकर और बनियाइन पहने लड़के अपने अपने घर से निकल पड़ते हैं।

तीसरा बिगुल सड़क पर बजता सुनाई देता है। बिगुल बजाने वाला पटरी पर मार्च करता हुआ ऊपर की खिड़कियों की ओर सर उठाये है। लड़के और लड़कियां नेकर और बनियाइन पहने कंधे पर तौलिया डाले सड़क पर पायोनियर कैम्प के फाटक की ओर भागे चले जा रहे हैं।

कैम्प में। खिलौने-घर की छत पर एरियल लगा है। दरवाज़े के ऊपर बोर्ड लगा है:

रेडियो लेबोरेटरी

गाल्या और तीमोशा दरवाज़े पर खड़े हैं। वे स्टेडियम की ओर भागते लड़कों को देख रहे हैं। जब तक अंतिम लड़का आंखों से ओझल नहीं हो जाता वे देखते रहते हैं।

"क्या मैं इसे घुमा दूं?" तीमोशा पूछता है।

"हां, घुमा दो।" तान्या कहती है।

रेडियो के यंत्रों से सुसज्जित खिलौने-घर में तीमोशा घुसता है। स्वयं तैयार किये हुए बड़े रेडियो सेट का हत्था घुमाता है। डायल में रोशनी आ जाती है। तीमोशा झटपट घर के बाहर आ जाता है।

गाल्या और वह स्टेडियम की ओर भागते हैं। स्टेडियम में विभिन्न प्रकार के खेलों का प्रबंध है। फ़ुटबाल का मैदान, वॉलीबाल का पिच, होरीज़ोंटल बार, रिंग्ज़ तथा व्यायाम के अन्य बहुत से साधन एकत्र हैं।

करीब दो सौ लड़के-लड़कियां कतार बांधे मैदान में खड़े हैं।

ओल्या स्टैंड पर खड़ी है।

"सावधान! सब लोग शांत रहो!" वह खम्भे पर लगे लाउड स्पीकर की ओर देखती हुई आदेश देती है।

इस लाउड स्पीकर से खटके की आवाज़ आती है और एनाउन्सर का स्वर गूंजने लगता है—

"प्रातः व्यायाम के लिए सब लोग तैयार हो जायं। पहली कवायद, सब लोग पंजे के बल खड़े हों, दोनों हाथ दायें-बायें फैलायें और हाथ ऊपर ले जायें। एक!

पंजे के बल खड़े हो जाग्रो, सांस लो, हाथ फैलाग्रो, ऊपर ले जाग्रो अपने हाथ। अब हाथ अगल-बगल गिरा लो और सांस बाहर निकालो।"

राजकीय फ़ार्म में फ़ील्ड कैम्प। यहां ट्रैक्टर ड्राइवरों तथा हार्वेस्टर चलाने वालों का एक छोटा सा चलता-फिरता घर है और पास ही केनवेस का तम्बू लगा है। उसी तम्बू के सामने प्रोफ़ेसर, ल्योवा और ग्रोचेरेद्को नाम का एक युवक प्रातः व्यायाम कर रहे हैं। युवक वही व्यक्ति है जो वाल फ़ुटबाल मंडल के लिए खिलाड़ियों के चुनाव-कमेटी का अध्यक्ष था।

करछुलनुमा वर्तन से एक दूसरे पर पानी डालकर वे इस समय रगड़ रगड़कर वदन साफ़ कर रहे हैं।

"मैच के अब तीन ही दिन रह गये हैं। ग्रापका क्या ख्याल है कौन जीतेगा इसमें ?" ल्योवा पूछता है।

"भाई, मैं नहीं कह सकता पर हमें ग्राशा रखनी चाहिये कि 'तूफ़ान' टीम, 'धड़ाका' को हरा देगी।" प्रोफ़ेसर उत्तर देते हैं।

'स्व्याज़ीस्त' स्टेडियम में कपड़े बदलने का कमरा। 'धड़ाका' टीम के लोग ट्रेनिंग के बाद खिलाड़ियों की पोशाक उतारकर अपनी साधारण पोशाक पहन रहे हैं। कप्तान अखबार लेकर जोर से पढ़ता है—

"नगर में खेल के मैदानों और छोटे स्टेडियमों की संख्या अब चालीस के करीब हो गयी है, जो कैम्प नम्बर सात के पायोनियरों की पहलकदमी पर बालकों द्वारा बनाये गये हैं। कल दोपहर से 'स्व्याज़ीस्त' स्टेडियम में बालकों की फ़ुटबाल टीमों के खेल आरंभ होंगे।"

शिक्षक और इवानोव ग्राते हैं।

"कार्यक्रम बदल दिया गया है। तीन दिन बाद के बजाय कल ही तुम लोग 'तूफ़ान' टीम के साथ मैच खेल रहे हो। देखो मेरी बदनामी मत कराना।" शिक्षक 'धड़ाका' टीम के लड़कों से कहता है।

"क्या 'तूफ़ान' टीम के साथ? हम उन्हें आसानी से हरा देंगे!"

"मेरा भी यही ख्याल है। मैं इवान सर्गेयेविच से एक दर्जन केक की शर्त बद रहा हूं। लड़को, क्या तुम्हारी भी केक खाने की तबीयत होती है?"

"हां, क्यों नहीं!"

"शाबाश, बहुत खूब!"

शिक्षक कुछ दूर जाकर इवानोव की ओर मुड़ता है।

"भाई! इतना गरम मत होओ, मैं इन्हें काफ़ी समय से सिखा रहा हूं। मैंने तुम्हारी टीम देखी है और अपनी टीम को तो मैं जानता ही हूं। मेरी समझ में ज़मीन-आसमान का अन्तर है दोनों में।"

"तुमने 'तूफ़ान' टीम को दो महीने पहले देखा था।" इवानोव ताव दिखाते हुए कहता है।

"तो इससे क्या होता है?"

"तो एक दर्जन केक की और शर्त हो जाय क्यों न?"

"ठीक है, रहा पक्का!"

वे दोनों हाथ मिलाकर शर्त बद लेते हैं।

'तूफ़ान' टीम के लड़के अपने स्टेडियम में खेल का मश्क कर रहे हैं। हर खिलाड़ी के मुंह में कागज़ दबा है। कुछ दर्शक, क्लब के सदस्य तथा 'धड़ाका' टीम के दो खिलाड़ी उनका खेल देख रहे हैं। एक खम्भे पर बोर्ड लगा है: 'उत्तरी स्टैंड'। यह बोर्ड दर्शकों को उनके स्थान की सीमा बताता है।

इवानोव खेल के मैदान पर पहुंचता है। खिलाड़ी उसे घेर लेते हैं।

"तुम लोगों के मुंह पर यह क्यों लगा है?"

"नमस्ते! इवान सेर्गेयेविच, हम चुप रहने का अभ्यास कर रहे हैं।"

"आपने ही कहा था कि खेल में हम लोग बड़ा शोर-गुल मचाते हैं।" तोमोशा कहता है।

"उन्हें फेंक दो! तुम्हें स्वयं सही ढंग से अनुशासन में रहना सीखना चाहिये। इस प्रकार बोलने पर पाबंदी लगाने से क्या फ़ायदा? अच्छा अपनी अपनी जगह पर

खड़े हो जाओ। मैं देखना चाहता हूं कि तुम लोग सही ढंग से गेंद पास करते हो या नहीं।"

लड़के मैदान में फ़ासले पर खड़े हो जाते हैं और बड़े सधे हुए ढंग से गेंद एक दूसरे की ओर बढ़ाने लगते हैं।

'धड़ाका' टीम के दर्शक-खिलाड़ियों के चेहरे का तो रंग ही उड़ जाता है। वे चौकन्ने होकर एक दूसरे का मुंह ताकने लगते हैं।

"देख रहे हो इनका खेल?"

"लगता है कि इनसे मोर्चा लेना इतना आसान नहीं है!"

तीमोशा बड़ी कुशलता से गेंद नचाता है। सर और पैर से बड़े सधे हुए अंदाज़ में वह गेंद आसानी से मनचाही जगह फेंकता है।

"देख रहे हो उनका खेल?" 'धड़ाका' टीम का कप्तान फिर बोल उठता है।

इवानोव सीटी बजाता है। खिलाड़ी उसके पास सिमट आते हैं।

"बस आज इतना ही काफ़ी है। हां तीमोशा, यहां आओ!"

तीमोशा आगे बढ़ता है।

"यह मैं रहा, तीमोशा!"

बोरीस की टोली शांत खेल मंडप में पहुंचती है। तान्या, गाल्या, येलेना द्मीत्रियेवना और इवानोव भी वहीं उपस्थित हैं।

तीमोशा मेज पर बैठा लिख रहा है।

"लिख चुके?" येलेना द्मीत्रियेवना पूछती है।

तीमोशा रूमाल से माथे का पसीना पोंछता है।

येलेना द्मीत्रियेवना कागज़ उठाकर बड़बड़ाते हुए पढ़ने लगती है—

"'द्नेप्र बहुत विशाल है... जब स्वतंत्रता और आसानी से...' इसके लिए तो सब से अच्छा नम्बर देना होगा।" वह कहती है।

तीमोशा फूला नहीं समाता। लड़के उसकी ओर देखकर प्रसन्न हो रहे हैं, और कहते हैं—

"पूरी टीम हमें सिखाती-पढ़ाती रही है।"

"वाक्य किसे कहते हैं?" ट्वालीव तीमोशा से पूछता है।

"शब्द अथवा शब्दों का समूह जिससे अर्थ का पूरा बोध होता है—उसे वाक्य कहते हैं।" बिना अटके तीमोशा ने उत्तर दिया।

"शाबाश तीमोशा! क्या कल सवेरे तुम्हारा इम्तहान है?"

"हां! दस बजे सवेरे।"

"वहां देर से मत पहुंचना। मैच बारह बजे आरम्भ होगा। यदि इम्तहान में फेल हो गये तो तुम्हें टीम में खेलने न दिया जायेगा।"

"हम इसे ६ बजे सवेरे ही जगा देंगे।" बोरीस कहता है।

दूसरे दिन सवेरे

"और अब तैराकी के लिए तैयार हो जाओ।" स्टेडियम में लाउड स्पीकर की ध्वनि गूंज उठती है।

दो सौ लड़के-लड़कियां नदी की ओर भागते हैं और पानी में कूदते हैं।

गाल्या, तान्या और 'तूफ़ान' टीम के लड़के पानी से बाहर निकलकर आते हैं और तौलिया से खूब रगड़कर बदन पोंछते हैं।

"वाक्य किसे कहते हैं?" तीमोशा से गाल्या पूछती है।

"शब्द अथवा शब्दों का समूह जिससे अर्थ का पूरा बोध होता है—उसे वाक्य कहते हैं। क्या बात है कि सब एक ही प्रश्न पूछते हैं?"

"अच्छा ठीक है। जाओ नाश्ता करके सीधे स्कूल के लिए रवाना होओ।" बोरीस कहता है, "हां, देखो अपनी रिपोर्ट न भूल जाना।"

"ओफ़!" तीमोशा सर थामकर चीख पड़ता है।

"क्या बात है?"

"अरे भाई, ओह!" उसकी आवाज़ में कंपन तीव्रतर हो उठता है।

खिलाड़ी और दर्शक उसे घेरकर उत्सुकता से खड़े हो जाते हैं।

"क्या हो गया है तीमोशा को?"

"बात क्या है, तीमोशा?"

हाय मेरी रिपोर्ट तो... ल्योवा के पास है और वह इस समय राजकीय फार्म में है। उसके घर में कोई नहीं है, सब लोग बाहर हैं, और वह सारा बंद करके चला गया है। हाय, अब क्या होगा!"

"अच्छा रोना-चीखना बंद करो," बोरिस कहता है, "वह मैच के लिए लौट आयेगा।"

"रहने दो। वह तो बुधवार को आयेगा, पर रिपोर्ट कार्ड मुझे आज ही चाहिये।"

लड़के आतंकित भाव से एक दूसरे को देखने लगते हैं।

"अच्छा, आओ मेरे साथ!" सहसा गाल्या बोल उठती है।

वे रेडियो लेबोरेटरी में पहुंचते हैं। गाल्या छोटा सा रेडियो सेट तीमोशा के सामने रख देती है।

फील्ड कैम्प। ल्योवा साइकिल के ट्यूब में हवा भर रहा है। प्रोफ़ेसर तम्बू से निकलकर आते हैं और ल्योवा से कहते हैं–

"ल्योवा, तुम्हें कोई फ़ोन पर बुला रहा है।"

रेडियो लेबोरेटरी में।

तीमोशा अपनी नब्ज़ की हरकत गिन रहा है। उसके होंठ खामोशी में हिल रहे हैं और उसके होंठों की हरकत से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा है।

गाल्या रिसीवर पर बोल रही है–

"ल्योवा क्या तुम हो? देखो बड़ा ज़रूरी काम है। तीमोशा तुमसे बात करना चाहता है।"

वह तीमोशा को रिसीवर दे देती है।

"नमस्ते! ल्योवा! भूल से मेरी रिपोर्ट तुम्हारी से बदल गयी है, यानी तुम्हारी मेरे पास और मेरी किसी कारण से तुम्हारे पास पहुंच गयी है। हां क्या कहा? सारी बात तुम्हें मैं बाद में समझा दूंगा। ल्योवा, 'धड़ाका' टीम से हम लोगों के मैच की तिथि बदल दी गयी है। हम मैच आज ही खेल रहे हैं। मैं आज

हो सबेरे इम्तहान में शामिल होने जा रहा हूं। यदि मैं पास न हुआ तो मुझे खेल में शरीक न किया जायेगा।"

ल्योवा तम्बू में सेट के पास ही उकड़ू बैठा है।

"भाई देखो, फ़ार्म से पंद्रह मिनट में रेल छूटेगी। और मैं फ़ार्म से चौदह मील की दूरी पर फ़ील्ड कैम्प में हूं। क्या? नहीं हमारे पास इस समय कोई कार नहीं है जो मुझे समय पर पहुंचा सके। क्या? तुम्हें हार खानी पड़ेगी? अच्छा तीमोशा एक मिनट रुको, मैं अभी तुम्हें उत्तर देता हूं।"

ल्योवा कुतुबनुमा लिये हुए बाहर निकलता है। पास ही उगा डैंडेलियन पौधा उखाड़कर हवा के रुख में फेंकता है और देखता है कि उसके रोयें किस दिशा में जाते हैं, कुतुबनुमा की मदद से हवा के रुख की दिशा जानने की कोशिश करता है।

वह फिर सेट के पास आता है और कहता है—

"तीमोशा! मैं आ रहा हूं। किस तरह? अपने नये आविष्कार की मदद से। तुम्हारी रिपोर्ट मैं सीधे स्कूल लेता आऊंगा।"

ल्योवा कच्ची सड़क पर साइकिल दौड़ा रहा है। उसकी पीठ पर छोटा सा डंडा बंधा है जिसपर तह किया हुआ पाल लगा है।

"हमने ब्रेक की मरम्मत नहीं की।" ल्योवा को छोड़ते हुए ओचेरेद्को कहता है।

"उसके लिए इतना समय ही नहीं है।" ल्योवा सीट पर बैठता है।

"सफ़र सलामती से पूरा हो!"

"धन्यवाद!"

साइकिल धीरे धीरे आगे बढ़ रही है। ल्योवा रस्सी खींचता है और उसके पीठ के पीछे पाल भरता है। साइकिल की रफ़्तार तेज़ हो जाती है। मोड़ पर वह पाल गिरा लेता है और कुछ देर तक पैरों से पैडेल चलाता है। पर कुछ क्षण बाद दूसरे मोड़ पर हवा का रुख अनुकूल देखकर वह फिर पाल ठीक से लगाता है।

मैदान में हवा के वेग से दो बड़े बर्च वृक्षों के सिरे झुके पड़ रहे हैं। ल्योवा साइकिल पर सवार सीधी सड़क पर सरपट भागा जा रहा है। पाल की रस्सी हाथ

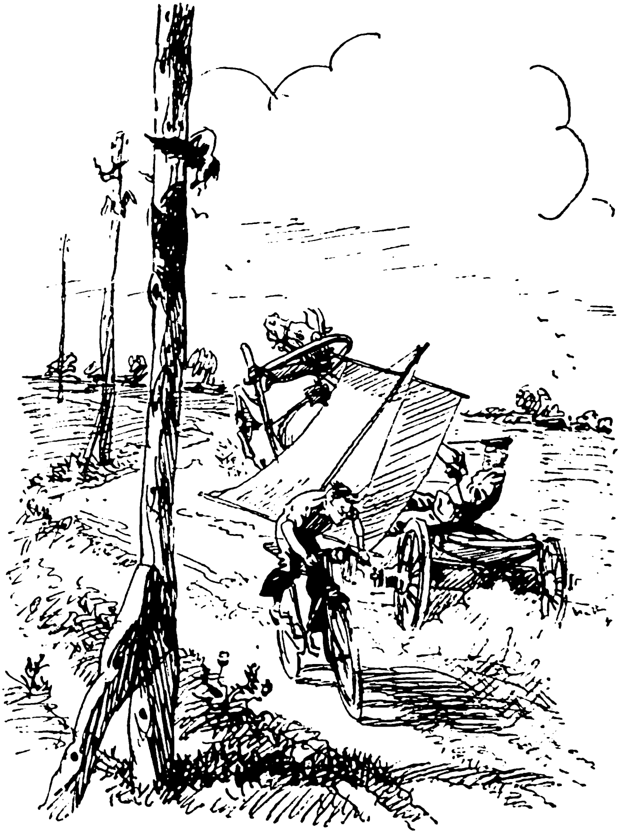

में सामने से वह रुक गया। वह उसे हैंडिल के डंडे पर बांध देता है। लेकिन जब रस्सी ढीली हो जाती तो पास डंडे से सरक जाता। अब ल्योंवा तीन फंदे की गांठ लगा देता है।

तेज हवा में धूल के बादल और तिनके सड़क पर फैल रहे हैं।

इसी संकरी सड़क पर एक गाड़ी ल्योंवा की ओर आती दिखाई देती है। एक हाथ से हैंडिल पकड़े दूसरे से वह गांठ छुड़ाने की कोशिश करता है। गांठ काफ़ी कसी है, वह खोल नहीं पाता। ल्योंवा जेबें टटोलता है, उसे चाकू नहीं मिलता। इतने में गाड़ी बिल्कुल नजदीक आ जाती है। टक्कर होने का पूरा अंदेशा है। ल्योंवा की विचित्र मशीन को देखते ही घोड़ा बिचक जाता है और गाड़ी को सड़क से बाहर खींच ले जाता है। ल्योंवा अपना माथा पोंछता है। साइकिल तेज़ रफ़्तार में चलती और गाड़ी से टकराते टकराते बचती है।

दो पहाड़ियों के बीच सड़क पर ढाल है। एक साइन बोर्ड चमक रहा है: 'रास्ता नहीं है, पुल की मरम्मत जारी है'। एक बार फिर जोर लगाकर ल्योंवा गांठ खोलने की कोशिश करता है। असफल होने पर वह हैंडिल दोनों हाथों से पकड़ लेता है। उसकी आंखों में घोर निराशा है। वह ठीक सामने की ओर सड़क पर देख रहा है।

पुल उखड़ा पड़ा है। मरम्मत हो रही है। ल्योंवा आर-पार रखे लट्ठे पर से साइकिल तेज़ी से ले जाता है। मरम्मत करने वाले हड़बड़ाकर खड़े हो जाते हैं और तेज़ी से जानेवाले साइकिल सवार को आश्चर्य से देखते रह जाते हैं।

दूर पर राजकीय फ़ार्म के घर दिखाई दे रहे हैं। मवेशियों के झुंड ने रास्ता रोक रखा है। ल्योंवा आंखें बंद कर लेता है और साइकिल मवेशियों के झुंड के बीच घुसेड़ देता है। गायें तितर-बितर हो जाती हैं और ल्योंवा आगे बढ़ जाता है।

फ़ार्म की बस्ती नज़दीक आ जाती है। कुछ दूर सड़क के किनारे घास का ढेर लगा है। ल्योंवा सड़क से साइकिल हटाता है और घास के ढेर पर कूद पड़ता है।

तीमोशा गलियारे में दौड़ा हुआ आता है। तीन लड़के बंद दरवाजे के पास खड़े हैं।

"क्या लीदिया वसील्येवना यहां है?"

"हां।"

"क्या इम्तहान शुरू हो गया?"

"हां। वह विद्यार्थियों से बड़ी देर तक सवाल पूछती है।"

तीमोशा गलियारे की घड़ी पर नज़र दौड़ाता है। उसमें ग्यारह बजने में पंद्रह मिनट बाकी हैं।

"लड़को! मुझे मेहरबानी करके पहले चले जाने दो। मुझे बारह बजे फ़ुटबाल मैच खेलना है।"

"क्या 'तूफ़ान' टीम के खिलाड़ी हो? हां हां, तुम्हीं चले जाओ पहले।"

ल्योवा पूरी रफ़्तार में दौड़ती रेलगाड़ी की खिड़की से बाहर का दृश्य देख रहा है।

स्कूल के गलियारे की घड़ी ग्यारह बजाती है। इतने में कमरे का दरवाज़ा खुलता है और एक विद्यार्थी बाल बिखेरे तेज़ी से बाहर निकलता है।

"सवा घंटा लग गया!" वह घड़ी की ओर देखकर फुसफुसा उठता है।

छोटे कद की मोटी अध्यापिका दरवाज़े पर दिखाई देती है। देखने में मृदुल और शांत स्वभाव की जान पड़ती है।

"हां। दूसरा विद्यार्थी परीक्षा के लिए आये।" मुस्कराकर कहती है।

तीमोशा झटपट खड़ा हो जाता है। एक दूसरा विद्यार्थी भी अपनी सीट से उसी समय उठता है।

"लीदिया वसीलियेवना, क्या मैं एक बात पूछ सकता हूं?" विद्यार्थी कहता है।

"हां। कहो।"

"मेरा रिपोर्ट-कार्ड घर पर ही कहीं रह गया है। यदि मैं परीक्षा में पास हो गया तो आप अलग से सर्टीफ़िकेट मुझे दे सकेंगी?"

"अलग से सर्टीफ़िकेट जायज नहीं है। केवल स्कूल रिपोर्ट ही प्रमाणित सनद है जिससे तुम्हारे आचरण और नम्बरों का पता लगाया जा सकता है। जाओ घर से उसे ढूंढ लाओ।"

तीमोशा के चेहरे पर परेशानी के भाव उभर आये। कमरे में घुसते ही वह खुली खिड़की की ओर बढ़ता है।

"क्या वह अभी नहीं आया?" वह ज़ोर से अपने सहयोगी खिलाड़ियों से पूछता है। उसके साथी नीचे सीढ़ियों पर बैठे हैं। वे सर हिला देते हैं।

"तीमोशा, नमस्ते। मेरा ख्याल है कि तुम आज मुझे अभिवादन करना भी भूल गये।"

तीमोशा जल्दी से घूमता है।

"ओह! नमस्ते, नोदिया वसीलियेवना, माफ़ कीजियेगा। कृपया आप मुझे अधिक देर न रोकें, मुझे बारह बजे मैच खेलने जाना है।"

नोदिया वसीलियेवना का तेवर चढ़ता है। वह कहती है —

"जितना समय जानने के लिए आवश्यक है कि तुम क्या और कितना जानते हो उतनी देर मैं तुम्हें अवश्य रोकूंगी।"

ट्रेन स्टेशन पर आती है। ल्योवा गाड़ी के रुकने के पहले ही डिब्बे से कूद पड़ता है।

नोदिया वसीलियेवना इमला बोलती हुई कमरे में टहलती है —

"'एक दिन प्रातःकाल चक्करदार रास्ते के किनारे...' तीमोशा इसे लिखो, बार बार खिड़की के बाहर मत झांको।"

तीमोशा अपनी सीट पर ठीक बैठ जाता है।

"नोदिया वसीलियेवना, इस समय क्या बजा है?"

"मेरे पास घड़ी नहीं है। अच्छा लिखो, व्यर्थ के प्रश्न मत करो। 'लम्बी घास पर एक गठीले बदन का नाटा व्यक्ति घूम रहा था ...'"

ल्योवा पीपे तक दौड़कर आता है और उसमें बैठकर आगे ढकेलता है। पीपा आगे सरकने लगता है, लेकिन ब्लॉक फंस जाता है। ल्योवा हाथ-पैरों के सहारे केबिल पर लटक जाता है और सरकता हुआ इस पार आ जाता है।

तीमोशा खिड़की से झांककर देखता है और फिर मेज़ पर बैठी अध्यापिका की ओर देखता है।

"मालूम होता है, तुमने इम्तहान की ठीक से तैयारी नहीं की है। बाहर, बड़ी आशा लगाये है इसका भी।"

तीमोशा की आंखों में विनीत निवेदन के भाव उभर आते हैं।

"और अब मैं तुमसे परिभाषाएं और नियम पूछूंगी। वाक्य की क्या परिभाषा है?"

"वाक्य एक..." तीमोशा गर्दन उठाकर देखना चाहता है कि बाहर क्या हो रहा है, फिर कहता है, "वाक्य विचारों का समूह है जिससे संपूर्ण अर्थ का बोध होता है।"

"जरा होश ठिकाने रखकर क्षण भर सोचो। वाक्य किसे कहते हैं?"

"वाक्य, वह शब्द जिससे विचारों की अभिव्यक्ति का बोध होता है।"

ल्योवा स्कूल के अहाते में घुसता दिखाई देता है। टोली उसका प्रसन्नतापूर्वक शब्दों से स्वागत करती है।

"कहां है वह?" ल्योवा पूछता है।

"दूसरी मंजिल पर!"

सभी लड़के स्कूल की इमारत में दौड़ते हैं।

"श-श! श-श!" लड़के दबे पांव गलियारे में जाते हुए एक दूसरे को चुप रहने का इशारा करते हैं।

तीमोशा कुर्सी पर बैठा है। उसके घुटने ऊपर उठे हैं और चेहरा हाथों के बीच छिपा है। ल्योवा रिपोर्ट निकालकर उसकी ओर बढ़ाकर कहता है—

"तीमोशा, यह लो अपनी रिपोर्ट।"

तीमोशा हिलने का नाम तक नहीं ले रहा है।

"इम्तहान में फ़ेल हो गया है।" अपनी पारी का इन्तज़ार करने वाले विद्यार्थी बताते हैं।

"क्या कहा? यह नहीं हो सकता! फ़ेल होने से तुम्हारा क्या मतलब?" एक साथ कई लोग बोलते जान पड़ते हैं।

"वह अधिक उत्तेजित था।"

चुपचाप ल्योवा अपनी रिपोर्ट तीमोशा की जेब से निकाल लेता है और उसके स्थान पर तीमोशा की रिपोर्ट रख देता है।

टोटोम घड़ी की ओर देखता है। खेल शुरू होने में तीन मिनट बाकी है।

हमारे पास एक खिलाड़ी कम है न!

"कोई हर्ज नहीं। उसके स्थान पर मैं खेलूंगा।" चोंगा कहता है।

"तुम? सच कहते हो?"

"इसे क्या हुआ। उसे भी खेलने दो।" टोम-टोमस कहता है, "किसी प्रकार से यह खिलाड़ी खेलेगा।"

स्टैंड में केन्या ब्राडकास्टिंग और केन्या की ओर से गाल्वा फुटबॉल पर रेडियो रिपोर्टर बैठे हैं। वह कहते हैं—

"हलो केन्या, मैं अब आपको खेल का हाल बयान करना शुरू करती हूं। सेंदुर्ग बल है, टोमोसा फेल हो गया है, चोंगा उसके स्थान पर खेल रहा है।"

अस्पताल 'हुरूल' क्लब के सदस्य बैठे हैं। वे कभी मास्या और कभी मैदान की ओर देखते हैं।

कपड़े बदलने के कमरे में : तैयार करते हुए टोमोस अपने साथियों से कहता है—

"केवल इतना ही समझने की आवश्यकता है कि हम केवल दस ही हैं। जब कोई खिलाड़ी खाली न हो तो चोंगा की ओर गेंद बढ़ाया जाय, समझ गये न?"

"हां ठीक है।"

चोंगा अन्य खिलाड़ियों से अलग होकर टोमोसा की कमीज पहनता है।

'इंडाका' टीम दूसरे कमरे में अपनी पोशाक बदल रही है।

"चोंगा पर अपना समय बर्बाद मत करना, वह किसी काम का नहीं है।" 'इंडाका' टीम का कप्तान कहता है, "बस यही समझो खिलाड़ी केवल दस हैं।"

दर्शक ताली बजाते हैं। दोनों टीमें मैदान में उतरती हैं, कप्तान आपस में हाथ मिलाते हैं।

'धड़ाका' टीम का शिक्षक और इवानोव प्रसन्न-प्रसन्न बैठे हैं।

"अरे अभी समय है केवल संभलकर रह लो, नहीं तो सब बिगड़ जायेगा।" शिक्षक हंसकर कहता है।

मुर्रे गलियारे में तोलोशा अकेला बैठा है। अध्यापिका कमरे के बाहर आती है।

"तुम यहां क्यों बैठे हो? तुम्हारे मैच का क्या हुआ?"

"वे अब मुझे न खेलने देंगे।"

अध्यापिका मुस्कराकर उसके सर पर हाथ रखती है और कहती है—

"चिन्ता न करो! मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें एक बार फिर अवसर दूंगी।"

खेल आरम्भ हो गया है। इस समय गेंद 'तूफ़ान' टीम के सेन्टर फ़ॉरवर्ड के पास है। ल्योवा खेल में व्यस्त है और बड़े ध्यान से गेंद को देख रहा है, लेकिन उसके साथी उसकी कोई परवाह नहीं करते।

बोरिस गेंद पाता है। 'धड़ाका' टीम के दो खिलाड़ी उसका पीछा करते हैं। वह अपने आस-पास देखता है। वह अपने साथियों से कटा हुआ है, केवल ल्योवा ही उसके समीप दिखाई देता है। वह ल्योवा की ओर गेंद बढ़ा सकता है। कुछ देर हिचकिचाने के बाद विपरीत दिशा में जोर से गेंद उछाल देता है। 'धड़ाका' टीम का कप्तान गेंद लेकर बढ़ता है और बड़ी आसानी से एक गोल चढ़ा देता है।

दर्शक-स्टैंड में शोर मच जाता है। हर तरफ़ तालियां गड़गड़ा उठती हैं। बस केवल 'तूफ़ान' क्लब के सदस्य निराश जान पड़ते हैं।

"'तूफ़ान' टीम पर एक गोल चढ़ गया मानो 'धड़ाका' एक गोल से जीत रही है।" गाल्या माइक्रोफ़ोन से सूचित करती है।

मिखाईल पेत्रोविच का चेहरा घबराया और उदास सा दिखाई देता है।

'तूफ़ान' टीम अब अधिक वेग से प्रहार पर प्रहार करती खेलने लगती है। 'धड़ाका' टीम के खिलाड़ी इन आक्रमण को रोकते हुए आगे बढ़ते रहते हैं।

तम्बू के अन्दर मिखाईल पेत्रोविच गाल्या का आखों देखा हाल सुन रहे हैं।

गाल्या माइक्रोफ़ोन पर बोल रही है –

"यह देखिये खेल 'तूफ़ान' टीम की ओर चल रहा है। देखिये ग्रीशा गेंद नचा रहा है... हां अब उसने गेंद बोरीस की ओर बढ़ा दिया है। बोरीस गेंद लेकर बढ़ रहा है, वह गेंद केंद्र की ओर फेंकना चाहता है पर सेम्योनोव ने बीच ही में गेंद छीन लिया है। उसने अब गेंद बूकिन की ओर बढ़ा दिया है। बूकिन ने गेंद कप्तान ल्योशा के हवाले कर दिया है। दीमा उससे भिड़ने की कोशिश कर रहा है पर देखिये दीमा गिर पड़ा! ल्योशा गेंद लेकर फिर बढ़ रहा है। हां, अब उसने गेंद उछाल दिया। बचा, स्टेडियम का शोर आप सुन रहे हैं? 'धड़ाका' टीम ने एक गोल और चढ़ा दिया। अब 'धड़ाका' दो गोल से जीत रही है।"

"राम जाने, यह लोग वहां क्या कर रहे हैं!" प्रोफ़ेसर बड़बड़ा उठते हैं।

"देखो! अभी गनीमत है, दौड़कर हमारे लिए केक खरीद लो।" शिक्षक इवानोव से कहता है।

'तूफ़ान' टीम फिर अपने धावे पर धावे शुरू करती है पर फिर गेंद उन्हीं की ओर आ जाता है। इस बार ल्योवा खेल में भाग लेने की कोशिश भी नहीं करता। वह हाथ पीछे किये मैदान के बीच में खड़ा हो जाता है, कभी कभी गेंद की ओर देख लेता है।

"उंह! बिजली के खम्भे की तरह बीच में खड़ा है!" दर्शक तिरस्कार भाव से कह उठते हैं।

'धड़ाका' टीम का गोल-कीपर उसे देखकर खीसें निपोड़ रहा है।

गोल के पास कशमकश चल रही है।

बोरीस बड़ी कठिनाई से गेंद अपने गोल से केन्द्र की ओर फेंक देता है। विरोधी टीम के खिलाड़ी गेंद के पीछे भागते हैं। लेकिन वे चूक जाते हैं। अब गेंद ल्योवा के पास है।

विरोधी खिलाड़ियों से गेंद बचाता हुआ वह उसे 'धड़ाका' टीम के पेनाल्टी एरिया में ले आता और वहीं से गोल की ओर लक्ष्य कर गेंद फेंकता है। इस बार उसने एक गोल 'धड़ाका' टीम पर चढ़ा दिया।

सब दर्शक खड़े हो जाते हैं, चिल्लाते हैं और तालियां बजाते हैं। बोरीस मुस्कराकर ल्योवा से हाथ मिलाता है।

"प्यारे ल्योवा, शाबाश!" येलेना द्मीत्रियेव्ना चिल्लाकर कहती है।

गाल्या माइक्रोफ़ोन पर कुछ कह रही है पर दर्शकों के शोर के कारण उसका स्वर ठीक नहीं सुनाई देता।

मिखाईल पेत्रोविच कुर्सी पर टेक लगा लेते हैं और संतोष से हुंकारते और मुस्करा उठते हैं।

'तूफ़ान' टीम के खिलाड़ी अब हमला कर रहे हैं। विरोधी गोल की ओर उनके धावे पर धावे हो रहे हैं। ल्योवा गेंद पाता है और गोल की ओर फेंकने का अभिनय करता है। जब विरोधी टीम के खिलाड़ी उससे भिड़ने को दौड़ते हैं तो वह गेंद बोरीस की ओर बढ़ा देता है।

मिखाईल पेत्रोविच धीरे से तालियां बजाते हैं। उनकी मेज़ पर रखी घड़ी में साढ़े बारह बज रहा है।

स्टेडियम की घड़ी में एक बजने में पांच मिनट शेष हैं।

"मैं स्कोर दोहरा रही हूं। 'तूफ़ान' टीम अब एक गोल से जीत रही है। गोल का अनुपात दो और तीन का है।" गाल्या उत्साहपूर्ण स्वर में माइक्रोफ़ोन पर बता रही है।

'धड़ाका' टीम में घबराहट के आसार नज़र आने लगे हैं। 'तूफ़ान' टीम के खिलाड़ियों के प्रहारों का वे सामना नहीं कर पाते। इस समय वे निरुद्देश्य किसी ओर भी गेंद उछाल देते हैं और उनके प्रहार व्यर्थ हो जाते हैं।

ल्योवा और बोरीस आपस में भिड़कर गिर पड़ते हैं। कोई उनके ऊपर से फांद जाता है। वे ज़मीन पर पड़े हैं।

"गोल!" दर्शक-मंच में जोर का शोर उठता है।

ल्योशा और बोरीस पड़े हुए एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कराते हैं।

शिक्षक कैंटीन में दिखाई देता है।

"मुझे दो दजन केक दीजिये।" उदास भाव से अपना थैला निकालते हुए कहता है।

दर्शक खिलाड़ियों को बढ़ावा देने के लिए खड़े होकर तालियां बजाते और अस्पष्ट स्वर में चिल्लाते हैं।

दाल्या अपना सेट लेकर, येलेना दमीत्रियेवना, तान्या और ओल्या फूलों के गुच्छे लिये भीड़ चीरती मैदान के पास बढ़ती हैं।

"लड़को! तुम्हें बहुत बहुत बधाई!" येलेना दमीत्रियेवना उन्हें संबोधित करती है।

दाल्या माइक्रोफ़ोन पर बताती है—

"चचा! क्या आप यह शोर-गुल सुन रहे हैं? मेरी चाची विजयी खिलाड़ियों को बधाई दे रही हैं।"

मौके पर तैनात मिलीशिया-मैन भीड़ में धक्कम-धक्का करके फ़ील्ड में घुसनेवाले दर्शकों को रोकने की कोशिश करता है।

"साथियो! वहां जाना मना है!" वह घबराहट में दोहरा रहा है।

लेकिन बेकार है! फूलों के बड़े गुच्छे लिये हुए ओल्या, तान्या, ल्योपा, येलेना दमीत्रियेवना, गाल्या और डोल्दोव, दो बड़े बक्सों में केक भरकर लाता हुआ इवानोव तथा 'तूफ़ान' क्लब के लड़के-लड़कियां, सभी लोग मैदान में इकट्ठे होते हैं।

"प्यारे बच्चो! तुम्हें मेरी बधाई! हे भगवान, मैं कितनी उत्तेजित थी उस समय!" येलेना दमीत्रियेवना उनमें से किसी बालक को फूलों का गुच्छा देना चाहती है पर किसी का हाथ खाली नहीं है, हर खिलाड़ी के पास गुलदस्ते हैं।

"मैं पास हो गया! मुझे प्रथम श्रेणी के नम्बर मिले हैं! मैं पास हो गया हूं!" तोमोशा प्रसन्नता से चिल्लाता, भीड़ चीरता हुआ आ जाता है। "मैंने प्रथम श्रेणी के नम्बर पाये हैं!"

येलेना दुमीत्रियेवना अपने हाथ का गुलदस्ता तीमोशा को दे देती है और गले लगाकर सस्नेह उसका चुम्बन लेती है।

द्रोज़दोव, ओल्गा की ओर देख रहा है।

"कहो क्या हाल है? हर काम नियम से कार्यक्रम के अनुसार चल रहा है न?"

ओल्गा मुस्कराकर सिर हिला देती है। फ़ोटोरिपोर्टर भीड़ हटाता हुआ केक खाने में व्यस्त खिलाड़ियों के निकट आ जाता है।

"हां! एक सेकंड इधर, एक साथ मुस्कराते हुए!" फ़ोटोरिपोर्टर लड़कों से कहता है।

गाल्या का चेहरा दिखाई देता है, क्रीम से उसके होंठ और नाक सनी हुई है।

"अलविदा चचा मीशा, और लो अब खत्म हुई मेरी आंखों देखी कहानी।" गाल्या माइक्रोफ़ोन पर इतना कहकर विदा लेती है।

समाप्त

पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है :

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।